ISSN 2277-7660

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका

अमर ज्योति

वर्ष : 73 | अप्रैल, 2022 | अंक : 04 | मूल्य : 150 रु. (वार्षिक)

प्रकाशक :
बिश्नोई सभा, हिसार

संपादक
डॉ. मनबीर

सह संपादक
श्रीमती अनिला बिश्नोई

कार्यालय पता :
'अमर ज्योति'
श्री बिश्नोई मन्दिर
हिसार - 125 001 (हरियाणा)
दूरभाष : 80590-27929
94670-90729
email: editoramarjyotipatrika@gmail.com
editor@amarjyotipatrika.com
Website : www.amarjyotipatrika.com

सभा कार्यालय दूरभाष :
फोन : 01662-225804

इस पत्रिका में उल्लेखित सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ है।

सदस्यता शुल्क :
वार्षिक : ₹ 150
25 वर्ष : ₹ 1300

"अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें"

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

'अमर ज्योति' का ज्ञान दीप अपने घर आँगन में जलाइये।

विषय अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
सबद-113	3
आत्मविश्वास	3
सम्पादकीय	4
साखी	5
कविता: पहाड़	6
चेतन रावल पहरे बैठा	7
गुरु जाम्भोजी की समाज सुधार की भावना	10
रूंख रसा रळियांवणा, रूड़ौ परकत रूप	12
हिरण रक्षार्थ वीरगति पाने वाले बिश्नोई वीर शहीद गंगाराम जाणी	13
मानव सभ्यता, संस्कृति व पर्यावरण संरक्षण	15
भूली बिसरी जाम्भाणी विरासतें	19
सत्कार हो नव संवत्सर का, संतुलन (लघुकथा)	21
हरजस	22
बधाई सन्देश	23
जाम्भाणी संस्कारों की आवश्यकता एवं महत्व	24
महात्मा एकनाथ	25
बिश्नोई लोकगीत: संस्कार गीत- विवाह के गीत (भाग-3)	26
कविता: युग के युवा	29
पुस्तक समीक्षा: जांभाणी साहित्य का दिग्दर्शन है 'सूक्ति सागर'	30
इतिहास के आइने में लोदीपुर धाम	32
कविता: सौ साल दा हाल	33
खेतीबाड़ी: उत्तम खेती (भाग-6) जैविक खेती-2	34
करियर: 12वीं नॉन मेडिकल से करने के बाद आर्किटेक्ट कैसे बनें?	37
सामाजिक हलचल	40-42

सबद-113

दोहा

मुला सधारी यूं कहै, महंमद ही फुरमान।

रोजे रखे निवाज पढ़े, बंदगी करै साहब तेहि मान॥

उक्त शब्द को सुन करके मुल्ला कहने लगा- आप ऐसी बातें क्यों कहते हैं, जिससे हम दुखी हो जाते हैं। हम लोग महमद का फरमान स्वीकार करते हैं। रोजे रखते हैं, तीन समय नमाज पढ़ लेते हैं, ऐसी हमारी बंदगी साहब जरूर स्वीकार करेगा। हम लोग नरक में कैसे गिर सकते हैं? श्री देवजी ने पुनः दूसरा सबद सुनाया-

सबद-113

ओ३म् ईमा मोमण चीमा गोयम, महंमद फुरमानी।

भावार्थ- तुम्हारे मजहब के आदि सतगुरु या पीर महंमद ने तो जैसा तुम लोग कहते हो तथा करते हो वैसा नहीं फरमाया था। उनका कहना तो यह था कि सच्चा मानव तो वही हो सकता है जो ईमानदारी से हृदय गुफा में छिपे हुऐ परमेश्वर की खोज करें। वैसे वह सर्वव्यापी परमात्मा कहीं गया नहीं है और न ही लंबी आवाजें देने से कहीं से आयेगा। वह तो घट-घट में व्यापक है। उसे तो शांत चित्त से ही देखा जा सकता है।

उरका फुरका निवाज फरीजा, खासा खबर विनाणी।

नमाज या अल्ला के नाम पर तुम लोग जितना हो हल्ला मचाते हो, वह जायज नहीं है। वह तुम्हारे कंठ से निकली हुई ध्वनि को नहीं सुनेगा क्योंकि कण्ठ तथा आत्मा का तो कोई सम्बन्ध ही नहीं है। यदि आप लोगों को वहाँ तक अपनी आवाज पहुँचानी है तो वह हृदय के द्वारा पहुंचाई जा सकती है। इसलिए हृदय में ही नमाज का स्फुरण करो। यही अच्छी खबर तुम्हारे लिये मुहम्मद ने सुनायी थी और मैं पुनः तुम्हें सचेत कर रहा हूँ।

इला रास्ती ईमा मोमन, मारफत मुल्लाणी।

हृदय में परमात्मा का स्मरण करना ही सच्चा मार्ग है और इसी मार्ग द्वारा ही दयालु परम पिता परमेश्वर तक पहुंचा जा सकता है तथा काजी मुल्लाओं के मार्फत यही बात कही जानी चाहिये क्योंकि उन महापुरुषों का ऐसा ही आदेश था।

-साभार 'जम्भसागर'

आत्मविश्वास

गुरु गोबिन्द सिंह जी द्वारा रचित दसम ग्रंथ के चण्डी चरित्र में रचित एक सबद है-

देह शिवा बर मोहे ई हे, शुभ कर्मन ते कभुं न टरूं। न डरौं अरि सौं जब जाय लड़ौं, निश्चय कर अपनी जीत करौं॥

यह सबद हमें यह दर्शाता है कि मनुष्य को अपना आत्मविश्वास और संयम कभी नहीं खोना चाहिए। उसे अपना लक्ष्य बनाकर हमेशा जीत की ओर आगे बढ़ना चाहिए। संकट और बुरा समय हर किसी के जीवन में कभी न कभी तो आता है और उस विपत्ति के समय मनुष्य का मन मस्तिष्क विचलित हो जाता है। विकट परिस्थिति में मनुष्य सही निर्णय नहीं ले पाता। सोचने-समझने की हर परिस्थिति से भी काफी दूर हो जाता है। लेकिन समझदार व्यक्ति जानता है कि वर्तमान में समय कैसा चल रहा है? और व्यक्ति उसी आधार पर अपना कार्य करता है। यदि व्यक्ति के सुख के दिन अच्छे चल रहे हैं तो अच्छे और नेक कार्य करता है। व्यक्ति के दुख के दिन चल रहे हैं तो वह सोच-समझ तथा धैर्य के साथ अच्छे कार्य करेगा। दुनिया को समझाने वाला व्यक्ति कभी आगे नहीं बढ़ सकता। जबकि खुद को समझाने वाला व्यक्ति बहुत आगे बढ़ जाता है। हर व्यक्ति में आत्म विश्वास और जुनून का होना बहुत जरूरी है। अच्छे और बुरे दिन समय के साथ आते हैं तथा चले जाते हैं। लेकिन इन्सान को बुरे हालात के सामने झुकना नहीं चाहिए। बल्कि आत्मविश्वास को अपनी ताकत बनाकर विकट परिस्थितियों से लड़ना चाहिए।

-संजू लटियाल

क्रांति चौक, मण्डी आदमपुर,, जिला हिसार

संपादकीय

यो संसार अनेहूं

सद्‌गुरु देव गुरु जम्भेश्वर भगवान ने अपनी अमृतवाणी के सबद संख्या 23 में 'आडा डंबर केती बार बिलंबण, ओ संसार अनेहूं' कहकर मनुष्य को जीवन की क्षणभंगुरता व नश्वरता के प्रति जागृत किया है। उनके अनुसार सृष्टि परमात्मा की रचना है। रहना इसी में है किन्तु 'अनेहूं' यानि उदासीन रहना है। इसके मोह व मायाजाल में लिप्त नहीं होना है। मनुष्य योनि में आने के बाद व्यक्ति का चरम लक्ष्य होना चाहिए कि वह शुद्ध व निश्चल भाव से सांसारिक कार्यों को करते हुए भवसागर से पार हो जाए। आत्म मुक्ति या जीवन मुक्ति के लिए गुरुजी ने मनुष्य को सबदवाणी में विभिन्न अवसरों पर अनेक सद्‌कार्य सुझाएं हैं जिनमें प्रमुख रूप से हरि का नाम स्मरण, ध्यान-चिंतन द्वारा आत्मतत्व को जानने का प्रयास करना, परमात्मा को समर्पण करके सार्थक और सत्कर्म करना, शील व सदाचार का पालन करना, झूठ-कपट व वाद-विवाद का सर्वथा त्याग, दया व क्षमाभाव रखना, काम क्रोधादि को वश में रखना, अपनी कीर्ति-कामना, अंहकार और मोह का त्याग आदि उल्लेखनीय हैं। गुरुजी ने यह सब इसलिए वर्णित किया है कि पल-पल में उम्र घटती जा रही है, मौत कभी भी आ सकती है और पुन: मनुष्य जीवन अति दुर्लभ है। अत: जीते जी आत्मज्ञान प्राप्ति अथवा स्वकल्याण का प्रयास करना चाहिए। एक अन्य अवसर पर गुरुजी ने 'जागो जोवौ जोति न खोवौ, छलि जासी संसारूं' कहकर उपरोक्त विचारों को पुष्ट किया है कि 'हे लोगो! जागो! आत्मतत्व को खोजो। जीवन ऐसे ही मत बिताओ। किसी भी दिन यह आत्मा शरीर छोड़ कर संसार से चली जाएगी।'

वस्तुत: गुरु जाम्भोजी के वचन व उपदेश मनुष्य जीवन के कल्याण के निहितार्थ ही हैं। उनकी कैवल्य वाणी में सभी शास्त्रों, वेदों व धर्मग्रंथों का मूल समाया हुआ है। इस कारण सबदवाणी को पांचवें वेद की संज्ञा भी दी गई है। अत: स्पष्ट है कि आम जन को जीवन मुक्ति का मार्ग दिखाना ही उनका ध्येय था। लेकिन भौतिकवादी विचारधारा के बहाव में बह रहे इतर समाज के लोगों की तरह जांभाणी धारा का पथिक भी भ्रमित व विचलित हो गया है। तथाकथित आधुनिक व नवजीवन शैली के प्रभाव में अपने पंथ के नियमों व आदर्शों को तिलांजलि दे रहा है। ज्यादा से ज्यादा अर्थ को एकत्र करना और फिर उसके भोग में रत रहना ही उसके जीवन का परम ध्येय बन चुका है। यह स्थिति तब और भी चिंतनीय रूप ले लेती है जब इनके दुष्परिणामों का ज्ञान होने के बाद भी व्यक्ति इनके मोहपाश से बाहर नहीं आ पाता है। गुरुजी ने अपने वचनों में चेताया है 'जाणत भूला महापापी' याानि जो जानते हुए भी पापकर्म कर रहा है, दुष्कर्मों में संलग्न है तथा नैतिक आचरण को त्याग रहा है उसकी दुर्गति सुनिश्चित है।

हालांकि इन सब कुरीतियों व विकृतियों के आवरण के बीच सामाजिक स्तर पर कुछ सकारात्मक व सार्थक प्रयास संतोष व राहत का अनुभव कराते हैं। इनमें खासतौर पर नशावृति पर अंकुश लगाने के लिए व लोगों को इसके दुष्परिणामों बारे जागरूक करने के लिए ग्राम स्तर पर सामाजिक समितियों द्वारा अभियान चलाया जा रहा है तथा जिसके सार्थक परिणाम भी सामने आ रहे हैं। वास्तव में नशे पर प्रहार की पहल काबिले तारीफ है क्योंकि यह एक ऐसी कुरीति है जो व्यक्ति को सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक व मानसिक रूप से कमजोर करने के साथ-साथ उसके संपूर्ण विनाश का कारण बनती है। इसके अलावा इन दिनों शादियों में युवाओं द्वारा दहेज के प्रति अनिच्छा भी एक सकारात्मक बदलाव का संदेश है। कई संस्थाओं व व्यक्तिगत प्रयासों के चलते पर्यावरण व वन्य जीवों के प्रति संवेदनशीलता समाज की विरासत को और ज्यादा समृद्व कर रही है। विशिष्ट सामाजिक परंपराओं को पुष्ट करने व जांभाणी संस्कारों बारे जागृति के लिए वर्चुअल माध्यमों द्वारा जनजागरण भी गति पकड़े हुए है। लेकिन उल्लिखित प्रयास अभी सतही स्तर पर ही हैं। इनको विस्तृत व व्यापक रूप देने के लिए सतत् व गंभीर प्रयासों की जरूरत होगी। चूंकि ऐसा करके ही हम गुरुजी द्वारा दिखाए गए सद्‌मार्ग के सही पथिक कहलाने के हकदार होंगे।

साखी

अज्ञात कवि कृत साखी

म्हार गुर क पंथ न्यै जुवल्या मेरा बाबा, जांका हरीया भाग।
गढ़ वैकुण्ठे अलख लड़ी, चढ़िया जोवै छै माघ।
सदरंग कामैण्य माघ जोवै, कदि साध मोमीण्य आवस्यै।
नर सतगुर आस पूरव, रतन काया पायस्यै।
आरतो ले मुंध आव, सुरग बाजै दौ दही।
अनंत बधावा हुवै जा दियां, मंगल गावै मिल्य सही।1।
अलखड़ी अरदास्य करै, मो पीव सूं कदि मेला।
थारी तीहुगा इकवीस कोड़ि पहुंता, हींडै सहज हींडोला।
सहज्य हींडोला तेर साध हींडै, दुख दाल्यद ना तहां।
जुग्य चौथ विसन मेलो, इकवीस कोड़ि र बार ही।
वैकुण्ठे बेड़ौ विसन ढ़ोयो, सची सार साधा लैविसी।
पार गिराय पहुंचाय स्वामी, वास नीहचल देविसी।2।
पार गिराए नीतर अजरावण, गुर साहिब सूं लव लीणां।
मोमीणा नै मन्यसा भोजन अमी कचोला, पीवणां अमी कचोला।
चीर पटोला अख खांणि वर कांमणी, तेतीस गढ़ तरासदा नीहचल।
दैणा संप्रथ तुं धैणी, झिणकार नेवर जोति रतना।
कोड पायलज पेखणा, दीदार आगे सभा तेरी।
देव देइ नीत देखणां।3।
धन्यै धन्य हो जीवड़ा का कायमै राजा, जो म्हानै सुरग्य मीलावै।
सोइ दत देइ हो म्हारा कायम राजा, जो थारी गति भावै।
दत देह दाता मुकति मन्यसा, रतन काया पार दो।
देव दरग मील्या मोमिणा, सुर सभा दीदार दो।
अनी पात अनेक अपछरा, हेत बोहरंग्य भाव छ।
तेतीस कोड़ि मील्य जांनी, वींद त्रभुवण राव छ।4।

भावार्थ- हमारे गुरु जाम्भोजी के द्वारा बताये हुए पंथ मार्ग पर जो भी चला है उनका बहुत बड़ा सौभाग्य है। इस जीवन में युक्तिपूर्वक जीते हुए अन्त समय में इस पंथ द्वारा अलख लोक भगवान विष्णु के धाम में चढ़ चुके हैं। जिस मार्ग से वहां तक पहुंचे है उसी मार्ग को देख रहे हैं और धन्यवाद दे रहे हैं। वहां वैकुण्ठ लोक में सदा ही युवती रहने वाली अप्सराएं ऐसे धर्मात्मा के वहां पर पहुंचने पर स्वागत के लिये प्रतीक्षा करती हैं। वह दिन कब आयेगा, जब भगवान के भक्त हमारे लोक में आयेंगे ? सतगुरु की कृपा प्रेम भाव ही हमारी अन्तिम इच्छा पूर्ण करेंगे। यह शरीर तो यहीं का यहीं मृत्यु लोक में ही रह जायेगा, किन्तु वहां दिव्य रतन काया मिलेगी। उसी काया से ही उस दिव्य सुखमय लोक में पहुंच सकेंगे। वहां पर प्रेम-विभोर होकर नव

यौवना अप्सराएं आरती लेकर स्वागत हेतु सामने आयेगी और अनेक प्रकार बाजे दुदुम्भियां बजने लगेगी। उस दिन अनन्त बधावा स्वागत होगा, सखियां मिलकर मंगल गीत गायेंगी।1।

जो भी भक्ति प्रेम-भाव में भाव-विभोर होकर अरदास करती है और अपने पीव-परमात्मा से मिलने की प्रबल इच्छा प्रगट करती है, उनका देव से मिलन अवश्य होगा। हे गुरुदेव! अब तक इकवीस करोड़ तो पार पहुंच चुके हैं। अबकी बार हमारी भी बारी है। हम कब पहुंचेंगे, कब मिलेंगे और सदा के लिये जन्म-मरण संसार के दुख से छूटेंगे। वहां जो भी पहुंचा है वह सहज रूप से आनन्द में विभोर होकर सुध-बुध भूलकर अनहद नाद में मग्न होकर झूल रहे हैं? हम ही पीछे क्यों रहे। वहां पर किसी प्रकार की दुख-दरिद्रता नहीं है। इस चौथे युग कलयुग में विष्णु ही जाम्भोजी के रूप में आकर उन तीन युगों के पार पहुंचे हुए लोगों से मिलान करवायेंगे। पार उतारने वाले देवजी निश्चित ही अमरापुर निवास देंगे।2।

पार उतारने वाले सतगुरु जाम्भोजी साधां भक्तां की सुध अवश्य ही लेंगे। मोमण भक्त लोगों को स्वर्ग वैकुण्ठ में मन इच्छित भोजन आदि अमृत की प्राप्ति करवायेंगे। उसी अमृत के प्रभाव से युगों-युगों तक रतन काया लेकर अमर हो जायेंगे। हे देव! तुम्हारे तेतीस करोड़ जीव सदा निश्चल होकर अमर पद को प्राप्त करेंगे। हे समर्थ! दाता आप हमें वह अद्भुत ज्योति और अनहद नाद की ध्वनि प्रगट करें तो वह वैकुण्ठ धाम इसी मृत्युलोक में ही प्रगट हो जायेगा। आपकी अद्भुत रचना आपकी कृपा से ही देखना संभव है।3।

धन्य, धन्य हो! हमारे देव सतगुरु कायम राजा को जो हमें स्वर्ग सुख प्राप्त करवाते है। जो अनन्त सुख प्राप्त कर चुके हैं उन्हीं से हमें भेंट करवाते हैं। हम भी आपकी तरह दिव्य काया धारी हो सकें, वही हमें प्रदान करे जो सदा के लिये तृष्णा, भूख, नींद नहीं व्यापे और इस जीवन को सुखपूर्वक जीते हुए अन्तिम में मोक्ष मुक्ति को प्राप्त कर सकें। जिस प्रकार विवाह में दूल्हा प्रमुख होता है और सभी बाराती होते हैं उसी प्रकार आप ही हमारे तो राजा हो, हम आपके बाराती हैं। हे देव! आप हमें भटकना छुड़वाकर नित्य सुख परमानन्द की प्राप्ति करवा दीजिये। आप तो सुख आनंद के आगार है। आप हमें अपने पास बुला लीजिये। हम आपके दास हैं। आप हमारे स्वामी हैं। हम दास जब तक अपने स्वामी वींद से नहीं मिलेंगे, तब तक हमें शांति कैसे मिल सकती है?।4।

साभार- **साखी भावार्थ प्रकाश**

पहाड़

हरे-भरे पेड़,
हरी-हरी नरम घास,
नाचते मोर-चहकती चिड़ियां,
फूलों पर मंडराते भंवरे,
हवा में इठलाती तितलियां
पहाड़ों को सुंदर,
बहुत सुंदर बनाते हैं।

परंतु पहाड़ अपने सीने में
असीम दर्द छिपाए हुए हैं
पहाड़ हमें दिखते-
हंसते-मुस्कराते
दूर से...

हमने पहाड़ को बहुत दर्द दिया है
विकास के नाम पर!
हमने अपने स्वार्थ के लिए
कमजोर कर दिया पहाड़ को।
वे टूट रहे हैं, तिल-तिल मर रहे हैं
अपने आंसू नहीं दिखा सकते किसी को-
पहाड़ है न इसलिए...

- **मुकेश कुमार ऋषि वर्मा**
ग्राम रिहावली, डाक घर तारौली गुर्जर,
फतेहाबाद, आगरा, उत्तर प्रदेश-283111

चेतन रावल पहरे बैठा

धर्म खंभ चाढ़ण धजा, और डाटण अधर्म दंभ।
शुभ कारज आरंभ में, बंदऊं श्रीगुरु जंभ॥

इस दोहे की प्रथम पंक्ति में ही जाम्भाणी पंथ का सार समाया हुआ है। यह इतना बढ़िया दोहा है कि कई बार लोग मुझे जब पूछते हैं कि विवाह आदि की निमंत्रण पत्रिका के प्रारंभ में क्या लिखवाएं तो मैं इस दोहे की सिफारिश करता हूँ। धर्म का खंभ तो अनादिकाल से स्थित है पर उस पर चढ़ी हुई ध्वजा को बार-बार बदलना पड़ता है क्योंकि यह मैली हो जाती है, पुरानी होकर फट जाती है। समय की धूप, बरसात सहते-सहते यह जीर्ण-शीर्ण हो जाती है। ऐसी ही एक ध्वजा चढ़ाने के लिए संवत् 1508 में स्वयं भगवान विष्णु ने गुरु जंभेश्वर नाम से पीपासर ग्राम में अवतार लिया था और संवत् 1542 में बिश्नोई धर्म की संस्थापना करके इस ध्वज को चढ़ाया था। पंथ के मुख्य दो उद्देश्य थे- अधर्म को रोकना और दंभ को खत्म करना। यहां अधर्म और दंभ दो चीजों का उल्लेख हुआ है। अधर्म तो धर्म का नाश करके उपजता है परंतु दंभ धर्म की आड़ लेकर उपजता, यह धर्म को हथियार बनाकर काम करता है, यह पाखंड फैलाता है। धर्म के नाम पर लोगों को भ्रमाता है। एक प्रकार से यह अधर्म से भी अधिक खतरनाक होता है। गुरु महाराज ने इसे भी समाप्त करने का बीड़ा उठाया था और बाद की पंथ परम्परा वील्होजी आदि संतों ने भी यह काम जारी रखा, वे उमाहो में कहते हैं- **'पाखंड कर परमन हड़े, तहां मेरो मन न पतियाय।'**

'आछी जीण सूं कोई घोड़ो आछो नीं गिणीजै।' घणा सिंणगार करने से अवगुण छिपते नहीं और गुण उपजते नहीं। जाम्भाणी पंथ तो दंभ-पाखंड से रहित यथार्थ में जीने का मार्ग है। हम पाखंड करके संसार को तो कुछ समय के लिए रिझाने में कामयाब हो सकते हैं परन्तु इस कवायद में वास्तव में जिस परमात्मा को रिझाना है वह अवसर हम खो देते हैं। हम अपने स्व, स्वतंत्रता और मूल स्वरूप को भूलकर यंत्र की तरह व्यवहार करने लगते हैं। हम कभी स्वयं से संवाद करने का कष्ट ही नहीं करते। पाप, पाखंड करते समय हम कभी स्वयं से यह नहीं पूछते कि यह क्यों कर रहा है, इसका परिणाम कितना भयंकर होगा?

हम सबकॉन्शियस माइंड से ही सब काम क्यों कर रहे हैं, अवचेतन से चेतन की ओर लौटने का प्रयास क्यों नहीं करते। एक बेहोशी का जीवन क्यों जी रहे हैं। एक रटा-रटाया सा ही सबकुछ क्यों हो रहा है? इन सब प्रश्नों का उत्तर मिलना बहुत मुश्किल है, क्योंकि ये प्रश्न उपस्थित तो सबके सामने होते हैं परन्तु समाधान कोई विरला ही पाता है। इस यांत्रिकपने का एक बहुत अच्छा दृष्टांत है- एक गांव के संत आश्रम में एक बूढ़े महात्मा रहते थे। उनका एक नवयुवक शिष्य था। वह शिष्य तो था परंतु गुरु की सेवा अनमने भाव से करता था, उसे लगता था कि उसका गुरु कुछ जानता ही नहीं है, वह दो चार बातों को ही दोहराता रहता है, ठेठ देहाती ढंग से बात करता है, निरा गंवारपना है इस गुरु के पास। एक दिन एक संन्यासी उस संत आश्रम में आया, वह बहुत विद्वान था, उसको सुनने के लिए पूरे गांव के लोग आए, वह लगातार दो घंटे तक बोलता रहा। वेद, पुराण, उपनिषद, गीता, रामायण, महाभारत, स्मृति ग्रंथों से चुन-चुन कर उदाहरण देता, किस ग्रंथ के किस पन्ने पर क्या लिखा है सब बताता है, उसके पास भाषण कला भी अद्‌भुत थी, सब मंत्रमुग्ध होकर सुन रहे थे। बूढ़े महात्मा का वह चेला भी मनोयोग से सुन रहा था, बीच-बीच में वह अपने गुरु की ओर देख लेता, जैसे कहना चाह रहा था कि इसे कहते हैं- ज्ञान, विद्वता। वह मन में सोचता भी जाता की मैं यहाँ कहाँ आकर फंस गया। काश, यह संन्यासी मेरा गुरु होता।

दो घंटे के प्रवचन के बाद वह संन्यासी गर्व से उस बूढ़े महात्मा से बोलता है कि- 'कैसा लगा मेरा

प्रवचन।' तो उस बूढ़े महात्मा ने कहा कि- 'तुम तो कुछ बोले ही नहीं, मैं दो घंटे से तुम्हें देख रहा हूँ, तुम्हें सुनने का प्रयास कर रहा हूँ परंतु तुम तो चुपचाप बैठे हो, फिर मैं कैसे बताऊं कि तुमने क्या बोला है। 'आश्चर्यचकित होकर प्रवचनकर्ता संन्यासी ने कहा कि फिर मैंने पिछले दो घंटे से क्या किया, तो उस बूढ़े महात्मा ने कहा कि तुमने वही किया जो टेप रिकॉर्डर करता है, तुमने पढ़ी और सुनी हुई बातें बोली है, ऐसे तो टेप रिकॉर्डर चौबीस घंटे बोल सकता है, इसमें टेप रिकॉर्डर की क्या महानता है। ऐसे ही तुमने जो बातें बोली है वह तो दूसरों की है इसमें तुम्हारी बात कौन-सी है। जब तक हम स्वयं जप, तप, ध्यानादि से हृदय को निर्मल, पावन, साफ नहीं कर लेते तब तक उसमें ज्ञान का उदय नहीं होता और ऐसा ज्ञान अणभै यानि अनुभव से प्राप्त नहीं होगा, तब तक दूसरों पर असर नहीं पड़ेगा। सीखा हुआ ज्ञान उस वस्तु के समान है जो वास्तव में है नहीं, उसका एहसास, आभास मात्र है। आभास मात्र वाली वस्तु को उठाकर हम दूसरों को कैसे दे सकते हैं और अनुभव सिद्ध ज्ञान वह अपनी कमाई हुई ठोस वस्तु है जो आवश्यकता पड़ने पर हम उसे उठाकर दूसरों को दे सकते हैं। प्रवचनकर्ता संन्यासी के साथ-साथ उस बूढ़े महात्मा के शिष्य के भी भीतर के पर्दे खुल गए। वह अपने गुरु के चरणों में पड़ गया, आज उसे पता चला कि गांव के साथ-साथ पूरा क्षेत्र उन्हें क्यों पूजता है।

ऐसे वास्तविक संतों का सान्निध्य जब हमें मिलेगा तब हम अपने आप से प्रश्न पूछना शुरू कर देंगे। एक और दृष्टांत के द्वारा हम अपना साप्ताहिक जीवन जो सप्ताह के सात दिनों में विभाजित है उसे समझने का प्रयास करेंगे- एक आदमी किसी साप्ताहिक कार्यक्रम में जाता है वहाँ उसकी चप्पल गुम हो जाती है, वह नंगे पांव ही घर आ जाता है। दूसरे दिन वह बूट पहन कर जाता है उन्हें भी कोई उठा कर ले जाता है। तीसरे दिन उसका पर्स खो जाता है और चौथे दिन दो तोले की सोने की चौन कोई निकाल लेता है। पांचवें दिन जब वह कार्यक्रम से वापस आता है तो उसे पता चलता है कि उसका खेत और घर को लेकर भाई के साथ जो मुकदमा चल रहा था वह उसे हार गया है तथा उसे घर और जमीन छोड़ना पड़ता है, वह अपना सामान उठाकर किसी और के खाली पड़े मकान में मांग कर रखता है। छठे दिन जब वह वापस आता है तो उसे पता चलता है कि इस आघात को न सह सकने के कारण उसकी पत्नी और पुत्र ने आत्महत्या कर ली है। सातवें दिवस कार्यक्रम के अंतिम दिन वहाँ न जाकर वह उदास, हताश, निराश, परेशान गांव के साथ बहती एक बड़ी नहर पर जाता है और उस नहर में छलांग लगा कर मरना ही चाहता है कि एक साधु वहां पर आते हैं और उसे पकड़ लेते हैं। वह जबरदस्ती छुड़ाकर मरना चाहता है कि अब इस संसार में मेरा रह ही क्या गया है, यह जीवन अब मेरे लिए बेकार है। मेरा सब कुछ बर्बाद हो गया है, बहुत हानि हो गई है सब कुछ लुट गया है। इस प्रकार वह प्रलाप करने लगा। तब उस साधु ने कहा कि पहले दिन जब तुम्हारी चप्पल गुम हुई थी, उस दिन भी तुम्हें कुछ दुख हुआ था, परंतु अगले दिनों उत्तरोत्तर बड़ी हानि होने से तुम छोटी हानि को भूलते चले गए और पांचवें दिन जमीन और घर तथा छठे दिन पत्नी और पुत्र के चले जाने को तुमने सबसे बड़ी हानि माना तथा सातवें दिन अपने जीवन की हानि करके तुम इन हानियों से भी ज्यादा हानि करने जा रहे हो। परंतु इस जीवन की हानि कर भी लो तो भी इससे भी एक और बड़ी हानि बच जाती है, यह तुम्हारे इस जीवन की हानि से भी बड़ी हानि है, तुम जीवन की हानि को सबसे बड़ी हानि मान रहे होंगे क्योंकि प्रत्यक्ष यही दिखती है, मरने पर जग प्रलय हो जाता है, परंतु जरा सोच-विचार कर देखो कि पिछले अनेक जन्मों में तुमने लाखों- करोड़ों बार चप्पल, बूट पर्स, जमीन, पुत्र, पत्नी और अपना शरीर खोया है और इन्हें इस जन्म में खोना यह कोई नई बात नहीं है, इनका खोना कोई बड़ी हानि नहीं है। यह शरीर और इसके जो संबंधी और घर, जमीन, धन, दौलत है यह सब पिछले जन्म में और थे और अगले जन्म में और होंगे। पिछले जन्म वाले अब तुम्हें याद नहीं है और अगले जन्म में

कौन होंगे यह भी तुम्हें पता नहीं है। यह तो हर जन्म में बदलते रहते हैं इनकी हानि या चले जाने पर क्या दुख करना। सर्वोपरि हानि तो यह है कि यह शरीर जो भगवान की प्राप्ति के लिए मिला था वह काम नहीं कर पाया। यहां तक कि भगवान याद ही नहीं आया।

घर, परिवार, जमीन, जायदाद के लिए तो अनेक बार रोया, परंतु भगवान के लिए कभी नहीं रोया। यह कभी अफसोस नहीं किया कि हाय रे! जीवन व्यर्थ बीत गया। भगवान अभी तक नहीं मिले, जीवन में कभी भगवान की आवश्यकता ही महसूस नहीं कि भगवान के साथ अपना संबंध ही नहीं जोड़ा, उसे अपना माना ही नहीं। अब रोना-धोना छोड़, मरने की बात भूल जा और भगवान को याद कर। नहर में डूबकर इस शरीर का नाश क्यों करना चाहता है? इस शरीर के रहते हुए इसके सब संसारिक संबंधों और मोह का नाश कर दो। संसार से तोड़कर भगवान से जोड़ लो। शरीर के रहते हुए संसार के लिए तो मरे के समान हो जा और भगवान के लिए जी। यही जीवन मुक्ति है। उस आदमी ने भाव विह्वल होकर उस साधु के पैर पकड़ लिए। जिस प्रकार पिघले हुए लाख में कोई रंग डाला जाता है तो वह पक्का हो जाता है, ऐसे ही द्रवित हृदय में धारण की हुई बात पक्की हो जाती है। उस आदमी ने भी भगवत् प्राप्ति का पक्का निश्चय कर लिया। बाद में लोगों ने उसे उस क्षेत्र में विक्षिप्त अवस्था में घूमते हुए देखा, लोगों ने समझा कि यह सब कुछ खोने के बाद पागल हो गया है, परंतु वह तो परमहंस अवस्था में पहुंच गया था, सब कुछ खोकर भी उसने उसे पा लिया था जो बड़े-बड़े योगी-मुनियों के ध्यान में भी बड़ी मुश्किल से आता है।

'ऊंट मरै जद मारवाड़ साम्ही मूंडौ करै' मारवाड़ी में यह कहावत है की ऊंट कहीं परदेस में मरता है तो अपना मुँह मारवाड़ की ओर कर लेता है। उस अनबोल, अनजान जानवर को इस बात की ट्रेनिंग नहीं दी जाती परंतु मरते समय उसके अंतर से उसे कोई संकेत मिलता है और वह अपने मूल की ओर देखकर गुड़गुड़ाता है। ऐसे ही यह जीव जब अवचेतन से चेतन अवस्था में आता है तो वह अपने मूल स्वरूप की ओर देखता है। यह चेतना प्रदान करना ही जाम्भाणी दर्शन का काम है। गुरु जांभोजी ने कहा है कि जब चेतना जागृत हो जाती है तो वह जीव को प्रज्ञावान बना देती है, फिर उसके पहरे में मन की विषय वासनाओं का प्रवेश संभव नहीं होता- 'चेतन रावल पहरे बैठा, मृगा खेती चर नहीं जाई।' जीव की जब मृत्यु आती है तो अंत समय में भगवान उसे आखिरी मौका देते हुए चेतना प्रदान करते कहते हैं कि अब भी तूं मेरे साथ अपने नित्य संबंध को याद करके मुझे पुकार ले मैं तुझे उबार लूँगा- 'आसा सास निरास भईलो, पावौ मोख दवार खिणूं।' ऐसे पुकारने वाले जीव लेने के लिए भगवान दौड़ पड़ते हैं और उसे अपनी छाती से लगा लेते हैं। जीव भगवान का अपना है और भगवान जीव के अपने है। भगवान के सिवाय हमारा अपना कोई नहीं है। अपना तो अपना ही होता है। अपने गांव के तो चिड़िया -कांव भी प्यारे लगते हैं। एक बार बीकानेर के राजा रायसिंहजी दिल्ली के बादशाह की फौज के साथ दक्षिण भारत में विजय अभियान के लिए गए तो उन्हें वहाँ कहीं एक फोग की झाड़ी मिली, फोग मारवाड़ में खूब होता है परंतु दक्षिण भारत में नहीं होता, उसका वहाँ दिखना रावजी के लिए एक सुखद संयोग था वे घोड़े से कूद पड़े और जाकर फोग से लिपट गए तथा उसे आत्मियता से संबोधित करते हुए बोले -

छोड़ आपणों देसड़ो, छोड़ आपणां लोग।
मैं तो आया हुक्म स्यूँ, तू क्यूँ आयो फोग॥

ऐसे ही भगवान को जब कोई जीव अपना मान लेता है भगवान भी ऐसे अपनाने के लिए व्याकुल हो जाते हैं और कहते हैं- 'अपना देश यानि बैकुंठ छोड़कर तथा अपने सत्पुरुष लोगों का साथ छोड़कर तूं इस मृत्युलोक में क्यों भटक रहा है।' और कृपा करके उसे अपनी प्राप्ति करवा देते हैं।

- विनोद जम्भदास कड़वासरा
गांव हिम्मतपुरा, तह.-अबोहर, जिला-फाजिल्का
(पंजाब) jambhdasvinod29@gmail.com

गुरु जाम्भोजी की समाज सुधार की भावना

मानव को सामाजिक प्राणी माना गया है। वह समाज के भीतर रहकर ही सीखता है। सामाजिक प्राणी होने के नाते उसे समाज के कुछ नियम और कायदों को ग्रहण करना होता है, उनकी संहिता का पालन करना होता है, समाज में जागृति का आह्वान भी करना होता है। पहले का मनुष्य महत्वाकांक्षाओं में इतना लीन नही रहता था, जिस कारण उसे जीवन में शांति को खोजने की कतई आवश्यकता नहीं थी। आज का समय सर्वथा भिन्न है। एक विकासमान बुद्धिजीवी प्राणी का साहित्य के साथ अटूट संबंध रहता है, तभी तो उसे बुद्धिजीवी की संज्ञा दी गई है। जब कोई प्राणी साहित्य के साथ नाता जोड़ता है तो साहित्य उसका हृदय परिवर्तन कर देता है, उसकी कुप्रवृतियां सद्प्रवृतियों में रूपान्तरित हो जाती हैं। अत: कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है और इसका निर्माण करता है। गुरु जांभोजी ने आदर्श और स्वस्थ समाज की कल्पना की थी, उसे यथार्थ स्वरूप प्रदान किया था। संत जांभोजी द्वारा प्रवर्तित 29 धर्म नियमों की आचार-संहिता इसका साक्ष्य है। स्वस्थ और आदर्श समाज की परिकल्पना को साकार करने हेतु 29 धर्म नियमों को धर्म के रूप में स्थान दिया।

तत्कालीन समाज रूग्णता से ग्रसित था। जिसमें अत्याचार, अनाचार, धन-लोलुपता, सामाजिक कुरुतियां, नशे की प्रवृतियां आदि थी। समाज अंधकार के गर्त में जा रहा था। धर्म के पथ से विमुख हो गया था। ऐसे विकट समय मे संत जांभोजी की वाणी से समाज में नई चेतना का आगाज हुआ। उनकी वाणी का मर्म यही था कि समाज कें प्रत्येक प्राणी के खान-पान और विचारों में शुद्धता है तो निसंदेह उसका मन भी निर्मल जल की भांति होता है। इससे मनुष्य इस लोक से परे परलोक का भी कल्याण कर सकता है। उन्होंने आदर्श और स्वस्थ समाज के लिए नशे का प्रयोग सर्वथा अनुचित बताया है और इसे वर्जित माना है।

नशे का सेवन वर्जित

संत जांभोजी ने कहा है कि नशा करने से मनुष्य के भीतर उत्तम विचारों का प्रवाह नहीं होता है और इससे हमारे कर्म भी प्रभावित होते हैं। नशे के सेवन से बुद्धि का विकास भी अवरुद्ध हो जाता है, आलस्य की प्रवृति का जन्म होता है। नशे के सेवन से मनुष्य का स्वभाव झगड़ालु हो जाता है। भांग, तम्बाकू और अफीम के सेवन से मनुष्य ज्ञान और विवेक को खो देता है। 'अमल, तमाल, भांग नहीं पीना, कर निषेध रहे सदा, अदीना मद्य-मांस कभी नहीं खावै।'[1]

नशे के सेवन से मनुष्य के भीतर अहंकार का जन्म होता है। मनुष्य स्वयं के अतिरिक्त सभी को तुच्छ और मूर्ख समझता है व कभी भी उसका परमात्मा से साक्षात्कार नहीं हो सकता है। अहंकार के वशीभूत उसे महाज्ञानी और महातपस्वी भी कीट-पतंगे जैसा प्रतीत होता है। अहंकार के कारण उसकी महत्वाकांक्षाएं भी बढ़ती जाती हैं। विवेकशील और ज्ञानवान मनुष्य ही निरभिमानी होकर जीवन व्यतीत कर सकता है।

निर अभिमानी ब्रहमानंदा, रहे मगन बिचरै स्वच्छन्दा।
जीवन मुक्त सदा बैरागी, जा की लगन स्वर्ग से लागी॥[2]

परनिन्दा और चोरी का त्याग

निन्दा करने वाला मनुष्य कभी सुखी जीवन व्यतीत नहीं कर सकता है। वह इस प्रवृति के कारण पाप को ही बढ़ावा देता है। प्राणी को कभी भी निन्दा का भाव स्वयं के भीतर नही पनपने देना चाहिए। चोरी और निन्दा को मिथ्या कर्म की श्रेणी में रखा गया है। संत जांभोजी ने ऐसी प्रवृति को त्यागने का संदेश दिया है। उन्होंने कहा है कि-

गुरु जी जान कियो उपदेश, धारण करो विष्णु आदेश।
हेय करो चोरी अरु निन्दा, इन संग मिथ्या जानो धन्धा॥[3]

वाद-विवाद से परहेज

मनुष्य को सदैव सोच-समझकर बोलना चाहिए। व्यर्थ की बातों का उच्चरित नहीं करना चाहिए। मिथ्या बातों से हमेशा बचना चाहिए। जिस मनुष्य के भीतर मिथ्या भाषण और विवाद की प्रवृत्ति नहीं होती है वे सदैव परमानंद की प्राप्ति करते हैं। सत्य के पथ पर अग्रसर होना, धर्म के मर्म को समझना ही मनुष्य का प्राथमिक कर्तव्य होना चाहिए। मनुष्य को मिथ्या के वाद-विवाद से दूरी बनानी चाहिए और भगवान के सत्योपदेश का श्रवण करना चाहिए। संत जांभोजी ने सबदवाणी मे कहा है कि- **वाद-विवाद फिटाकर प्राणी।**[4]

पाखण्ड का प्रबल विरोध

संत जांभोजी ने पाखण्ड का प्रबल विरोध किया है। उन्होंने कहा कि दुनियां के सारे तीरथ मनुष्य के अंतर्मन में निहित होते हैं, बाहर तो महज दिखावा है। उन्होंने बाहरी आडम्बरों का विरोध किया है। सबदवाणी में कहा है कि -

अड़सठ तीरथ हिरदा भीतर, बाहर लोकाचारूं।[5]

अर्थात् सारे तीर्थ मनुष्य के हृदय में समाहित होते हैं बाहर तो केवल लोकाचार है। जिसके अंतरंग साधन है उसको बहिरंग साधन की आवश्यकता नहीं है। जिसका मन निर्मल और स्वच्छ है, उसे मिथ्या के झंझटों में पड़ने की आवश्यकता नहीं है। मनुष्य सच्चे मन से आराधना कर परब्रह्म की प्राप्ति कर सकता है।

मनुष्य का अंतकरण तभी निर्मल और पवित्र होता है जब हमारे द्वारा किये गये कार्य और आचार-व्यवहार शुद्ध और पवित्र होते हैं। इसलिए संत जांभोजी ने उत्तम आचरण पर जोर देते हुए कहा है कि पाखण्ड से सरोबार व्यक्ति को ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती है। वह महज शब्दों के आडम्बर से लोगों को पथ से भ्रमित करता है ताकि अज्ञानी उसको ज्ञानी समझकर उसके बताये हुए पथ पर चल सकें। संत जांभोजी ने सबदवाणी में उल्लेख किया है-

जां कुछ जा कुछ जां कछु न जांणी, ना कुछ ना कुछ तां कुछ जाणी, ना कुछ ना कुछ अकथ कहाणी, ना कुछ ना कुछ अमृत वाणी, ज्ञानी सो तो ज्ञानी रोवत, पढिया रोवत गाहै।[6]

जात-पात का घोर विरोध

संत जांभोजी ने जात-पात के भेदभाव को सर्वथा गलत और अनुचित बताया है। उन्होंने इसका घोर विरोध किया है। संत जांभोजी द्वारा प्रवर्तित बिश्नोई सम्प्रदाय में सभी जाति के लोगों को दीक्षित किया गया है। उन्होंने जातिगत व्यवहार की घोर निन्दा की है। संत जांभोजी के अनुसार मुनष्य कर्म से महान होता है जन्म से नहीं। ऊँचे कुल में जन्म लेने से कोई सर्वश्रेष्ठ नहीं हो सकता है। मनुष्य श्रेष्ठ तब बनता है जब वह उत्तम कर्म करे। सबदवाणी में कहा गया है कि-

उत्तम कुल का उत्तम न होयबा, कारण क्रिया सारूं।
गोरख दीठां सिद्ध न होयबा, पोह उतरिबा पारूं॥[7]

ईश्वर के समक्ष सभी प्राणी बराबर है। हिन्दू और मुसलमान का भेद सर्वथा अनुचित बताया है। ज्ञान के अभाव के कारण मुनष्यों में जातिगत भेदभाव देखने को मिल रहे है। हिन्दुओं को फटकार लगाते हुए संत जांभाजी ने कहा है कि -

हिन्दू होय के हरि क्यों न जंप्यो, कांह दह दिश दिल पसरायों।
सोम अमावस आदितबांरी, कांय काटी बनरायो।[8]

अहिंसा

संत जांभोजी अहिंसा के पुजारी थे। वे प्राणीमात्र का कल्याण चाहते थे। उनके द्वारा प्रवर्तित 29 धर्म नियमों की आचार-संहिता में अहिंसा पर विशेष बल दिया गया है। उन्होंने अहिंसा के पथ पर चलने का संदेश दिया है। संत जांभोजी के अनुसार जिस मनुष्य के भीतर जीवों के प्रति दया नाम का भाव नहीं है उसे मंदिर और मस्जिद में जाना निरर्थक है। मनुष्य का वास्तविक धर्म तो जीव दया है। मूक और निरीह जीवों की हत्या करना और उन्हें दु:खी करना हिंसा है। सबदवाणी में उल्लेख है -

दिल साबत हज काबों नेडे, क्या उलबंग पुकारों।
भाई नांउ बलद पियांरो, तिहकै गलै करद क्यों सारो॥[9]

हमें हरे-भरे पेड़-पौधों को नहीं काटना चाहिए। जीवों के प्रति दया का भाव रखना चाहिए। वृक्ष तो मनुष्य के प्राणदाता है। संत जांभोजी के द्वारा बताये गये नियम और उनके सदुपदेशों को आत्मसात करने से निसंदेह हमारा कल्याण हो सकता है और आध्यात्मिक उन्नति हो सकती है। जब तक उनके संदेश और सिद्धांतों का वरण नहीं करेंगे, तब तक मनुष्य जीवन में शांति का प्रवेश नहीं हो सकता है और आदर्श और स्वच्छ समाज की स्थापना नहीं हो सकती है।

कितनी घोर विडम्बना की बात है कि जो चीजें हमें प्रकृति प्रदत्त है उसका मूल्य हम आंक नहीं सकते है। संत जांभोजी ने जो उपदेश आज से 500 साल पहले दिए थे जो वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कितने प्रासंगिक है और महत्वपूर्ण है जितने पहले के समय थे। हमें संत जांभोजी के उपदेशों को आत्मसात् कर उन पर अमल करके ही उनके लोक कल्याणकारी समाज के सपने को यथार्थ स्वरूप दे पायेंगे।

संदर्भ सूची

1. जम्भसागर (टीकाकार, रामांनद गिरी, प्रकाशक बिश्नोई सभा, हिसार (हरियाणा), पृ.सं. 09
2. जम्भसागर (टीकाकार, रामांनद गिरी, प्रकाशक बिश्नोई सभा, हिसार (हरियाणा), पृ.सं. 09
3. जम्भसागर (टीकाकार, रामांनद गिरी, प्रकाशक बिश्नोई सभा, हिसार (हरियाणा), पृ.सं. 08
4. जम्भवाणी जम्भसागर, उदयराज खिलेरी, विश्नोई सेवक प्रकाशन, नागौर (राज.), सबद 95, संस्करण 2018
5. जम्भसागर (टीकाकार, कृष्णानंद आचार्य, प्रकाशन, जाम्भाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर (राज.), सबद संख्या 03, 12वां संस्करण 2018
6. जम्भसागर (टीकाकार, कृष्णानंद आचार्य, प्रकाशन, जाम्भाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर (राज.), सबद संख्या 18, 12वां संस्करण 2018
7. जम्भसागर (टीकाकार, रामांनद गिरी, प्रकाशक विश्नोई सभा, हिसार (हरियाणा), पृ.सं. 286
8. जाम्भाणी सबदार्थ, श्री कृष्ण विश्नोई, प्रकाशक, विश्नोई सेवक प्रकाशन, नागौर (राज.), सबद संख्या 07, चतुर्थ संस्करण 2013
9. जम्भवाणी जम्भसागर, उदयराज खिलेरी, विश्नोई सेवक प्रकाशन, नागौर (राज.), सबद 9, संस्करण 2018

-प्रवीण कुमार रामावत

तीन थुई धर्मशाला के पास,

काकरिया वास, जालौर (राज.) 343001

मो.: 6375777697

रूंख रसा रळियांवणा, रूड़ौ परकत रूप

(डिंगळ रचना)

दूहौ

रूंख रसा रळियांवणा, रूड़ौ परकत रूप।
नरां! संभाळौ नैह सूं, इल री ओप अनूप॥

'गीत-चित इलोल'

ओपती हद ओरणां वौ, गौरवे निज गांम।
रूंखड़ै रळियांवणै रौ, गिट गियौ नर नांम।
तो सुखधाम जी सुखधाम, राखौ धरा नै सुखधाम॥

बोरड़ी वडभागणी वळ, फूठरा हद फोग।
खेजड़ी नै खायग्या अै, लूंख साथै लोग।
तो जसजोग जी जसजोग, राखौ रूंखड़ां जसजोग॥

आभ छूता आकड़ा हा, खरा बावळ कैर।
जाळ नीचौ जगत आखै, टहुकता खग ठैर।
तो सब खैर जी सब खैर, मांणस मांणतौ सब खैर॥

जीमियौ जन जोर कर कर, पोखरां री पाळ।
धूड़ धोरां री न छोड़ी, क्रूर मांणस काळ।
तो संभाळ जी संभाळ, नेही नाडियां संभाळ॥

मत वाढ़ौ विरख मिनखां, रसा रूड़ौ रूप।
हेत रै धवळै हिंयै रा, भळकता अै भूप।
तो अपरूप जी अपरूप, इल नै करौ मत अपरूप॥

-महेन्द्र सिंह सिसोदिया

गांव छायण, तह. पोकरण, जिला जैसलमेर (राज.)

मो.: 9587689188

26 अप्रैल बलिदान दिवस पर

हिरण रक्षार्थ वीरगति पाने वाले बिश्नोई वीर शहीद गंगाराम जी जाणी

सद्‌गुरु श्री जम्भेश्वर भगवान द्वारा प्रदत 29 धर्म नियम हर प्राणी मात्र के लिए कल्याणकारी है। गुरुजी ने न केवल मनुष्य बल्कि हर छोटे बड़े जीव, प्रकृति और पर्यावरण को ध्यान में रखकर 29 नियम बनाए। इन्हीं नियमों में से दो नियम, **'जीव दया पालणी-रूँख लीलो नहीं घावै'** अर्थात् जीवों पर दयाभाव रखना और हरा वृक्ष नहीं काटना, ऐसे नियम हैं जिनका शिरोमणी बिश्नोई पंथ के अनेकों वीरों ने पालन करते हुए हंसते-हंसते अपने प्राणों की आहुति तक दे दी। इसी परम्परा और संस्कार का पालन करते हुए वर्ष 2006 की 26 अप्रैल को वीर श्री गंगाराम जी जाणी ने वन्य प्राणी हिरण की रक्षा करते हुए निज प्राण न्यौछावर कर दिए।

वीर शिरोमणि गंगाराम जाणी का परिचय:

श्री गंगाराम जी जाणी का जन्म आषाढ़ बदि तीज विक्रमी सम्वत् 2028 तदनुसार शुक्रवार 11 जून, 1971 के दिन श्री जीया राम जाणी के घर और माता श्रीमती जमना देवी (गौत्र-बाना) के पावन उदर से हुआ। राजस्थान के पाली जिले में रोहट क्षेत्र के नेहड़ा गाँव इनका स्थाई निवास रहा है। परिवार में श्री गंगाराम के अतिरिक्त उनके चार अनुज भाई और दो बहनें भी हैं। भाई सर्वश्री भगवानाराम, श्रवण लाल, ओमप्रकाश और पप्पूराम जाणी है, वहीं बहनें सुश्री शांति देवी तथा सुश्री ऐलची देवी है।

गंगाराम जी राजस्थान पुलिस में एक कर्तव्यनिष्ठ और बहादुर सिपाही थे। उनका विवाह इनके अपने ही गाँव नेहड़ा वासी सुशील कन्या सौभाग्यवती सुखी देवी (गौत्र खिलेरी) से हुआ। श्रीमती सुखी देवी और श्री गंगाराम जाणी के घर तीन बेटियों श्वेता, संगीता तथा विद्यादेवी एवं दो बेटों रमेश एवं प्रवीण ने जन्म लिया।

वन्यप्राणी हिरण रक्षार्थ प्राण त्याग देने की घटना:

बात 26 अप्रैल, 2006 दोपहर के समय की है। गंगाराम जी की पोस्टिंग (ड्यूटी) पुलिस थाना, डांगियावास में थी। वे सरकारी काम से अपनी मोटरसाईकिल लेकर थाना डांगियावास से निकले थे। रास्ते में जालेली निवासी अपने एक परिचित पाबूराम जी को साथ लेकर किसी को नोटिस देने (तामील करवाने) चल पड़े। जब वे

शहीद गंगाराम जाणी

दोनों मोटरसाइकिल पर गोयलों की ढ़ाणी के पास पहुंचे ही थे कि उन्हें गोली चलने की आवाज सुनाई दी। उन्होंने अपनी मोटरसाईकिल बन्दूक की गोली की आवाज की दिशा में दौड़ाई तो आगे देखा कि शिकारी मृत हिरण को कंधे पर लाद कर भाग रहे थे। गंगाराम जी शिकारी को ललकारते हुए उन्हें पकड़ने उनके पीछे दौड़े और एक शिकारी को दबोच लिया। परंतु जांबाज निहत्था था और दुष्ट शिकारियों के हाथों में बंदूक थी। एक शिकारी सिपाही गंगाराम जी के कब्जियत में था तब दूसरे शिकारी ने अपनी बंदूक से गोली चला दी, जो जांबाज गंगाराम के सीने में जा लगी और पंथ का वीर सिपाही गुरु जम्भेश्वर भगवान के प्रति सच्ची श्रद्धा लग्न-निष्ठा और कर्तव्यपरायणता निभाते हुए एक अमूक प्राणी के लिए वैशाख बदि त्रियोदशी विक्रमी सम्वत् 2063 तदनुसार 26 अप्रैल, 2006 बुधवार के दिन हमेशा-हमेशा के लिए चिर निद्रा में सो गया। धन्य है ऐसे वीर, जिन्हें आज हर कोई नमन करता है।

वीर शिरोमणि गंगाराम जाणी बिश्नोई के इस सर्वोच्च बलिदान के समाचार को सुनकर हजारों की संख्या में पर्यावरण प्रेमी, वन्यप्राणी रक्षक और गुरु जाम्भोजी के अनुयायी घटनास्थल पर पहुँचे। जिला प्रशासन जोधपुर के दृढ़ आश्वासन के बाद श्री गंगाराम जी का पार्थिव शरीर घटनास्थल से उठाया गया और मथुरादास माथुर अस्पताल, जोधपुर लाया गया। राजस्थान पुलिस ने भी त्वरित कड़ी कार्यवाही करते हुए दोनों

← शहीद गंगाराम जाणी का स्मारक

शहीद गंगाराम जाणी व उनके पांचों भाईयों का समस्त परिवार।

शिकारियों को गिरफ्तार कर लिया, परंतु हिरण का शव बरामद नहीं कर पाई। देखते ही देखते आक्रोशित 15 से 20 हजार पर्यावरण प्रेमी और बिश्नोईजन एकत्रित हो गए और राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार, गृहमंत्री राजस्थान सरकार के नाम जिला क्लेक्टर और पुलिस अधीक्षकों को ज्ञापन सौंपे, जिसमें कहा गया कि 25 घण्टे बीत जाने के बावजूद हिरण का शव बरामद नहीं किया गया है, जिस कारण पूरे समाज में आक्रोश का मौहाल बना हुआ है। हजारों पर्यावरण प्रेमी का एक जत्था सरदापुरा, जालोरी गेट होते हुए विशाल जलूस के रूप में सोजती गेट पहुँचा और घण्टों रास्ता जाम कर अपनी मांग पर अड़े रहे। नतीजतन पुलिस के उच्च अधिकारियों द्वारा खबर प्राप्त हुई कि शिकारियों की निशानदेही पर खेतों से हिरण का शव बरामद कर लिया गया है। तब जाकर पर्यावरण प्रेमीजनों एवं बिश्नोई पंथ के लोगों ने रास्ता खोला। हिरण तथा गंगाराम जी को गाँव में ले जाकर समाधि दी गई।

शिकारियों के विरुद्ध मुकदमा फास्ट ट्रेक संख्या 01 जोधपुर में चला। मुकदमे में परिवादी की ओर से एडवोकेट महीपाल बिश्नोई ने केस लड़ा। कोर्ट के माननीय न्यायाधीश प्रवीण भटनागर ने 20 फरवरी, 2007 को हिरणों का शिकार करने वाले शिकारियों और शिकार करने से रोकते हुए वीरगति पाने वाले गंगाराम जी जाणी की हत्या करने के आरोपियों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई। सम्पूर्ण बिश्नोई पंथ के लोगों सहित सभी पर्यावरण प्रेमीजनों ने जोधपुर न्यायालय के न्यायाधीश द्वारा सुनाए गए फैसले की भूरी-भूरी प्रसंशा की और आभार व्यक्त किया गया।

उसके बाद बिश्नोई श्री गंगाराम जाणी की प्रथम पुण्यतिथि 26 अप्रैल, 2007 को पाली जिले के नेहड़ा गाँव में विशाल मेला आयोजित किया गया। साथ ही 22 अप्रैल से 26 अप्रैल 2007 तक पंथ के विद्वान संत डॉ. गोवर्धनराम जी शिक्षाशास्त्री के मुखारविन्द से विराट जाम्भाणी कथा का आयोजन किया। तब से लेकर निरंतर वर्तमान में भी प्रतिवर्ष अखिल भारतीय जीवरक्षा बिश्नोई सभा, अबोहर की जोधपुर शाखा द्वारा जांबाज बिश्नोई गंगाराम जाणी की याद में संत डॉ. गोवर्धनराम जी शिक्षा शास्त्री द्वारा विराट जाम्भाणी कथा और शहीदी मेले का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष 26 अप्रैल को वीर शहीद गंगाराम जाणी की 16वीं जयंती है, जिसपर उन्हें सम्पूर्ण देश श्रद्धासुमन अर्पित करता है। शत्-शत् नमन।

संदर्भ सूचीः

1. शौर्यगाथाएं, पृथ्वीसिंह बैनीवाल बिश्नोई।
2. जाम्भा पुराण, कृष्णानन्द आचार्य।
3. श्रीजम्भवाणी मीमांसा, डॉ. हीरालाल माहेश्वरी।
4. परिवारजन श्री गंगाराम, विशेषकर उनके छोटे भाई श्री ओमप्रकाश जाणी।

-पृथ्वीसिंह बैनीवाल बिश्नोई

313, सेक्टर 14, हिसार-125001 (हरियाणा)

मो.: 9518139200, 9467694029

मानव सभ्यता, संस्कृति व पर्यावरण संरक्षण

सभ्यता, संस्कृति एवं पर्यावरण सृष्टि की संरचना में मनुष्य प्रकृति की अनूठी रचना है। प्रकृति के अन्य समस्त प्राणियों में बुद्धिमान तथा वाणी और कर्म व श्रम के बल पर ईश्वर प्रदत्त वस्तुओं का बुद्धिमत्ता से संरक्षित करने के साथ-साथ उन्हें संवर्धित करना भी मनुष्य का ही सामर्थ्य है। अत: मानव का ही उत्तरदायित्व सबसे अधिक इस बात के लिये हो जाता है कि वह प्रकृति का रचनात्मक, कलात्मक, सौन्दर्यात्मक, निवेशात्मक व संयोजनात्मक उपयोग करे और ऐसे कि अपनी आने वाली पीढ़ियों को भी उसके लिये लाभान्वित होने दे। अपनी सभ्यता तथा संस्कृति से मानव यह कार्य कर सकता है।

सभ्यता और संस्कारों से मनुष्य की बुद्धि विवेकशील तथा सृजनात्मक होती है। संस्कार जन्य स्वभाव को संस्कृति कहते हैं। संस्कार वे हैं जो मनुष्य पर उनके वातावरण तथा वंश परम्परागत रूप से आते हैं। मानव का कर्म, व्यवहार, आचरण, विचार ही पृथ्वी के पर्यावरण को प्रभावित करते तथा बनाते हैं। उपनिषदों में यह विचार व्यक्त किया गया है कि **'ईशावास्यमिदं सर्वम् ....'**। यह सारा जगत उसी ईश्वर का बनाया हुआ है और हर प्राणी के जीवन के लिये उसने पूरी व्यवस्था की है इसलिये मनुष्य अपने हिस्से का सुखभोग करें, अन्यों के हिस्से के प्रति लालच न करें। यदि मात्र इस श्लोक की सत्ता और अर्थ का गूढ़ता से अध्ययन किया जाय और फिर मानव जीवन उसी आधार पर चले तो इस अतिभौतिकतावादी मानव की लिप्सा शान्त हो जायेगी और सम्पूर्ण समस्याओं का अन्त हो जायेगा।

ईशावास्योपनिषद का मानना है कि 'परब्रह्म पूर्ण है और उससे उत्पन्न यह जगत भी पूर्ण है क्योंकि पूर्ण से पूर्ण की उत्पत्ति होती है।' इससे स्पष्ट है कि जगत स्वयं में परिपूर्ण है उसमें किसी भी प्रकार से आई न्यूनता का यज्ञादि क्रियाओं से तो पूर्ण किया जा सकता है। किन्तु उस परिपूर्ण जगत को अन्य किसी भी प्रकार से यदि मनुष्य न्यून समझता है तो अधिक पुष्टिपूर्ण करने के लिये और उसी पूर्ति के लिये किसी भी प्रकार का भौतिक, रासायनिक जैविक या अन्य परिवर्तन करेगा तो उसके दुष्परिणाम ही होंगे। ये दुष्परिणाम आज हम औद्योगिकरण, यंत्रीकरण के फलस्वरूप देख रहे हैं। अथर्वशिर उपनिषद् कहता है कि देवगण स्वयं पृथ्वी, आकाश, पाताल अथवा स्वर्ग किसी की भी रक्षा करने के लिये मनुष्य को पर्यावरण संरक्षण व परिस्थिति के संतुलन को बनाये रखना होगा।

तैत्तिरीयोपनिषद् कहता है कि इस सम्पूर्ण सृष्टि की अन्योन्याश्रितता अचूक है एक जीव दूसरे पर निर्भर है। 'परमात्मा से आकाश प्रकट हुआ, आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथ्वी, पृथ्वी से औषधियाँ और औषधियों से अन्न की उत्पत्ति हुई, अन्न से तेजस और तेज से मनुष्य हुआ और मनुष्य से देह अन्न रस युक्त है। इस उक्ति से यह स्पष्ट है कि किसी भी अंग में दूषण हुआ तो उसका असर आगे की सम्पूर्ण श्रृंखला पर पड़ेगा और अन्ततोगत्वा मनुष्य को ही उससे हानि होगी। अत: उपनिषदों ने इस सभी तत्वों की शुद्धि की ओर मानव मात्र का ध्यान आकर्षित किया।

परमपुरुष न केवल पर्यावरण के सभी तत्वों एवं अंगों का उत्पत्तिकर्ता है अपितु यही उनमें व्याप्त भी है। इस प्रकार, वह ब्रह्म ही विश्व के कण-कण में जीवन में शक्ति के रूप में व्याप्त है। यह उपनिषद् शिक्षा प्रेरणा देती है कि पर्यावरण के प्रत्येक घटक के प्रति श्रद्धा व आदर संरक्षण का भाव मनुष्य को रखना चाहिये। औपनिषदिक ज्ञान इतना उत्कृष्ट है कि प्रत्येक मनुष्य अपने सत्कर्मों से परम पुरुष अर्थात् ब्रह्माण्डमय हो सकता है। मनुष्य यदि इस तत्वज्ञान को समझ जाये कि वह परमब्रह्म मैं ही हूँ तो **'योऽसावसी पुरुषः सोऽहमस्मि'** मनुष्य को इतना ज्ञानवान होना ही चाहिये यदि उसे अपने अस्तित्व को बचाना है। क्योंकि अज्ञानता के कारण ही आज इस विकास के भ्रम में मनुष्य अज्ञानतावश प्रकृति के साथ छेड़छाड़ कर रहा है और नितान्त स्वार्थपरता के वशीभूत हो मधुरिमामयी सौन्दर्यमयी प्रकृति और पर्यावरण को दूषित कर रहा है।'

सभ्य सुसंस्कृत मानव जो सृष्टि के समस्त अंगों के प्रति भ्रातृ भाव और अभिन्नता से प्रेरित था और उसकी उपयोगिता तथा सहयोग के कारण वह प्रकृति के सभी अंगों में पूज्य भाव रखने वाला था सूर्य, वायु, अग्नि, जल, ऋतु वनस्पति, पृथ्वी, पशु-पक्षी, जन्तुओं और जीवों में देवत्व भाव देखता था जिस मनुष्य का दैनन्दिन जीवन जन्म से मृत्यु तक और प्रात: सूर्योदय से लेकर रात्रिशयन तक पर्यावरण संरक्षण के यम- नियम और शुद्धाचरण से ओतप्रोत था। सनातन धर्म में वर्णित 16 संस्कार मनुष्य की शुद्धि, पवित्रता और पर्यावरण संरक्षण के प्रति आस्था प्रदर्शित करने वाले हैं। मानव जीवन को वर्णाश्रमों में विभाजित करना एक कुशल जीवन प्रबन्धन ही था। कृषि प्रधान, ग्रामीण बाहुल्य सादा जीवन, श्रम प्रधान जीवनचर्या,

समाज में नारियों का पूज्य स्थान संयुक्त परिवार नित्य यज्ञ, हवन आदि से बाँधकर जीवन-यापन तथा प्रकृति से प्रेम और वनस्पति की पूजा ये सब पर्यावरण संरक्षण के द्योतक थे और आज जब मनुष्य ने उनका उल्लंघन किया है तो ये ही पर्यावरण के संहारक हो गये हैं। पर्यावरण के सरंक्षण में मूलत: मानव ही केन्द्र है इसलिये हम इस बात का अध्ययन करें कि मानव की सभ्यता संस्कृति वैदिककाल से किस प्रकार मानव मन को प्रभावित करती रही और पर्यावरण के संरक्षण में सहयोगी बनी रही, क्योंकि ये ही सब चीजें पर्यावरण के संरक्षण में सहायक हो सकी।

पौराणिक संस्कृति के अनुसार मनुष्य को ब्रह्म मुहूर्त में उठकर प्रभु स्मरण कर सूर्योदय से पूर्व शौचादि, स्नानादि क्रियाओं से निवृत्त होना चाहिये। महाकाव्य महाभारत में प्रकरण है कि शरशय्या पर लेटे हुये पितामह भीष्म से युधिष्ठिर ने सफल व सुखी जीवन जीने के लिये मनुष्य को क्या करना चाहिए, यह प्रश्न किया तो योगी भीष्म ने बताया कि मनुष्य को सर्वप्रथम सूर्योदय से डेढ़ घंटा पूर्व ब्रह्म मुहूर्त में शैया त्याग देनी चाहिए। प्रात:कालीन क्रियाओं से निवृत्त हो स्नानादि करने से मनुष्य स्वस्थ्य रहता है और स्वस्थ्य रहना मनुष्य का सबसे पहला कर्तव्य है क्योंकि यह शरीर ही समस्त धर्म कर्म करने का साधन मात्र है और यह नित्यकर्म भी पर्यावरण संरक्षण सम्वर्धन परमात्मा के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए प्रभु की अर्चना वन्दना की जाती थी जिसमें 'पत्रं, पुष्पं, फल तोपं भवत्या समर्पयेतं की भावना से तन-मन में प्रभु का ध्यान किया जाता था। यह दैनिक क्रिया पूजा अर्चना में भी पर्यावरण संरक्षण का ही भाव था क्योंकि मन्त्रोच्चार से जल से वातावरण को शुद्ध कर आचमनी कर घंटी व शंख बजाकर तथा दीये में गाय के घी का दीपक जलाने से वातावरण शुद्ध होता है। चन्दन का टीका भृकुटि पर मस्तिष्क को शान्ति देता है। गंगाजल में तुलसीदल पीने से रोग शान्ति तथा आत्म शुद्धि होती है। आज विज्ञान ने भी यह सिद्ध कर दिया है कि तुलसीदल में डायबिटीज के रोगाणु नष्ट करने की क्षमता है। गाय का घी का दीपक या तिल के तेल का दीपक जलाने से आसपास के दृश्य अदृश्य कृमि नष्ट हो जाते है। प्रात:कालीन नित्य यज्ञ, हवन करने से मन्त्रोच्चार तथा शुद्ध सूखी हुई लकड़ियों के द्वारा हवन करने से वातावरण शुद्ध हो जाता है। वैज्ञानिकों के द्वारा इस प्रकार अनुसंधान करने से यह पाया कि जहाँ यज्ञ नहीं हो रहा था और जहाँ हो रहा था उनके पर्यावरण के शुद्धि के स्तर में अन्तर होता है। सूर्य, तुलसी, बरगद, पीपल को जलर्चित करना वनस्पति का संवर्धन साथ ही उनसे प्राप्त होने वाले गुणों से लाभान्वित होना है।

शंख बजाने से फेफड़ों का व्यायाम हो जाता है वातावरण शुद्ध हो जाता है तथा यदि हकला व्यक्ति प्रतिदिन शंख बजाये तो उसका हकलापन कम व खत्म भी हो जाता है। जनेऊ धारण, मुंडन आदि कर्म धार्मिक दृष्टि से तो मान्य है ही परन्तु इनकी सार्थकता यह है कि आज वैज्ञानिकों ने जब अनुसंधान किये तो पाया कि यह विज्ञान की कसौटी पर भी खरे उतरे हैं। जनेऊ को अंगुलियों में बाँधकर पूजा का विधान है जो एक प्रकार के एक्यूपंक्चर का कार्य करता है शौच और लघुशंका जाते समय कान पर कस कर तीन बार बाँधने का जो विधान है उससे शारीरिक रूप से शौचादि कार्य में सरलता और स्वास्थ्यवर्धक होता है। कर्णछेदन मनुष्य की चंचल प्रवृत्ति को शमन करता है। मुँडन से सिर की त्वचा के रोगशमन में सहायता मिलती है यह त्वचा को निरोग रखता है।'

वैदिक व पौराणिक काल में मानव का जीवन एक कुशल प्रबन्धन में आबद्ध था अर्थात् जीवन को वर्णाश्रमों में विभाजित कर दिया गया था- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संस्थान, जिसमें प्रत्येक मनुष्य नियम, संयम एवं विधान के अनुसार नियमित शिक्षार्जन गुरुकुल में रहकर गुरु के निर्देशन में एकता व समानता के सिद्धान्त पर सादगी से रहता हुआ पूर्ण ज्ञान प्राप्त करता था और 25 वर्ष पूर्ण होने पर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करता था तो एक पूर्ण पुरुष के रूप में सफल जीवन व्यतीत करता था। बाल विवाह का प्रावधान नहीं था, स्त्रियाँ भी शिक्षार्जन करती थीं और सब प्रकार से कुशल गृहकार्यों, सामाजिक, धार्मिक अनुष्ठानों, व्यवहार, राजनीति को कुशल ज्ञाता युवती विवाह योग्य होने पर योग्य वर की साथ विवाह का प्रचलन था। तब मानव के लिए मर्यादायें स्थापित की गई थीं। उन मर्यादाओं में रहकर कर्तव्य पालन करना अनिवार्य था, अन्यथा उल्लंघन करने वाले व्यक्तियों को दण्ड भोगना होता था। आर्य संस्कृति की समस्त क्रियायें, व्यवहार, कितने पर्यावरण संवर्धन और पोषण में अग्रणी थे ये सर्वविदित हैं, आज विज्ञान ने भी यह सिद्ध कर दिया है कि अग्नि में गाय के घी की आहुति देने पर उससे चार तरह का वातावरण पोषक रासायनिक धुआँ निकलता है। गाय के घी द्वारा उत्पन्न अस्टीलिन नामक पदार्थ वायुमण्डल को शुद्ध करता है। मृत्योपरान्त मृत व्यक्ति के प्रयोग किये हुये समस्त वस्त्रों, बिस्तर व उपयोग आयी वस्तुओं को भस्म कर दिया जाता है, जिससे व्यक्ति से सम्बन्धित किसी व्याधि तथा रोगाणु की संक्रमणता का विस्तार न हो।

आर्यों ने पर्यावरण के अंगों को अत्याधिक महत्व देते हुये तथा उनके प्रचण्ड रूप को स्मरण करते हुये उनकी

शान्ति की कामना की है। यजुर्वेद (36-17) में जिसका स्तवन प्रत्येक मनुष्य अपने प्रातःकालीन तथा संध्याकालीन संध्या वन्दना में इस प्रकार करता था- **ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष, ॐ शान्ति पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिब्रह्मा शान्ति सर्व शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥**

जिसका आशय है कि द्यौ, अन्तरिक्ष, पृथ्वी, जल, औषधियों, वनस्पति, विश्वदेवा ब्रह्म तथा सर्व शान्त रहें और मुझे भी शान्ति मिलती रहे और यह शान्ति सर्व प्रकार से तभी सम्भव है जबकि उनके प्रति सोऽहं भाव बना रहे और उनसे अतिरिक्त छेड़छाड़ न की जाये।

भारतीय पुरातन संस्कृति के छन्दस के माध्यम से संसार यानि मानव के अस्तित्व के लिये जलवायु और औषधि को प्रमुख माना है। औषधि अर्थात् वनस्पति तभी होगी जब भूमि होगी पर्यावरण की वर्तमान अवधारणा के अन्तर्गत भूमि से भी अधिक संस्कृति को महत्वपूर्ण माना है।

त्रिणि छन्दासि कवयो विभेतिरे, पुरुरूपं दशतें
विश्व चक्षणम्॥ (अथर्ववेद- 18-1-17)

आपो वाता ओषधयः तान्येकस्मिन् भुवन अर्पिति॥

अर्थात् तीन वस्तुयें जो इस विश्व को आवृत्त किये हुये हैं। वे हैं- जल, वायु, वनस्पतियाँ। ये तीनों जीवन को ऊर्जा देकर उसकी रक्षा करते हैं। अतः मनुष्य को अपने जीवन को संकट में डालकर भी इनको संरक्षण देना चाहिये, क्योंकि समस्त प्रदूषणों की जड़ तो यह मानव स्वयं है इसलिये मनुष्य को आचारवान होकर प्रकृति का सुख भोग करना चाहिये। महर्षि व्यास के इस श्लोक से हम यह समझ सकते हैं-

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्॥
आत्मनः प्रतिकूलानि, परेषां न समाचरेत्॥

परन्तु आज का मानव तो उस सभ्यता संस्कृति के बिल्कुल विपरीत हो गया है। समाज के पाश्चात्यकरण और अति भौतिकतावादी संस्कृति ने पर्यावरण को संरक्षित रखने की बजाय उसका विनाश करने के लिये बड़ी-बड़ी योजनायें बनाई हैं।

फैशन के इस युग ने परम्परावादी धरोहरों को बाह्य आडम्बर और रूढ़ियाँ कहकर छोड़ दिया है, आज देर रात्रि तक कार्यक्रमों का आयोजन और सूर्योदय के बाद उठने का प्रवृत्ति आधुनिकता है। संयम और मर्यादायें फूहड़पन है जहाँ शिक्षार्थी सादा जीवन उच्च विचार और भिक्षुक वृत्ति से जीवन बिताता था। आज का शिक्षार्थी भोगवादी विलासी और ऐशपरस्ती हो गया है। अधिकतर शिक्षार्थी महंगे वस्त्रों और सभी व्यसनों में लिप्त हैं। परिणामस्वरूप विद्यालयों का पर्यावरण दूषित हो गया है। असंयम के कारण कुपोषण और निर्बलता तथा एड्स जैसे भयंकर रोगों से ग्रसित हो, उनकी जीवन शैली पर्यावरण को दूषित कर रही है।

नगरीकरण, मशीनीकरण और औद्योगीकरण तथा एकाकीकरण की नीतियों के चलते भारी उद्योग धन्धों का लगना विकास और उच्च स्तरीय रहन-सहन के चलते बड़े-बड़े जंगलों को खेती योग्य भूमि का आवासीय कॉलोनी में परिवर्तित होना था। विकास और प्रगति की अन्धाधुन्ध दौड़ में उद्योगों का लगना व उनसे होने वाले धुएं, अपशिष्ट व गन्दगी का वातावरण में या तो खुले पड़े रहना या नदियों और वायुमण्डलों में छोड़ने से पर्यावरण अशुद्ध हो रहा है। विकासवादी मनुष्य विकास की अन्धी दौड़ में यह नहीं सोच पा रहा है कि इसका परिणाम जो दिख रहा है उसके चलते और कितने दिन वह अपने अस्तित्व को बचाये रखेगा, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि विनाशकाले विपरीत बुद्धि यानि अब प्रकृति को छेड़ने के परिणामस्वरूप मनुष्य का विनाश सुनिश्चित है। यह कैसी बुद्धिहीनता और अन्धापन है कि मनुष्य बुद्धिमान होते हुये भी स्वयं अपने ही लिये खाई खोद रहा है। यह शायद इस बात का परिणाम है कि वह हमारी आदि सभ्यता संस्कृति जिसमें ऋषि प्रार्थना करते थे कि- **सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भ्रदाणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभागभवेत्॥** को भूल चुके हैं और निजता, नितान्त स्वार्थपरता के चलते मात्र मैं ही मैं का भला करने की सोच रहे है और उसके परिणामों पर अमल नहीं कर रहे हैं।

आज का मुनष्य अपने कर्तव्य को भूल रहा है, जिसमें वह अर्थ प्रधान युग की संस्कृति की चकाचौंध में डूबकर कर्तव्य विमुख हो गया है। निरन्तर बढ़ती हुई अनुशासनहीनता और भ्रष्टाचार के कारण व्यक्तित्व और सामाजिक दोनों ही क्षेत्रों में नीचे जो रहा है। प्रवृत्ति इस कदर पतनोन्मुख हो रही है कि जीवन रक्षक ही जीवन भक्षक बनता जा रहा है। 'आज ईशवास्यमिदं सर्वम्..' सारगर्भित श्लोक का नितान्त विपरीत अर्थ दिखाई दे रहा हो, जहाँ कहा गया है कि यह सम्पूर्ण जगत उसी परमात्मा का बनाया है और मनुष्य आवश्यकता से अधिक का लोभ न करे। वहाँ आज मनुष्य ने स्वयं को प्रकृति पर विजय करने वाला तथा प्रकृति पर शासन करने वाला मानकर अधिक से अधिक प्राप्त करने की संस्कृति अपना रहा है।

जिसके चलते वह दिन दूर नहीं कि जब प्रकृति मनुष्य को उसके दुष्कृत्यों के लिये क्षमा नहीं करेगी। आज पंचतंत्र की कहानी स्मरण हो आई है कि 'चूहा अपने छोटे से रूप को देखकर ईश्वर के पास गया कि उसे बिल्ली बना दे, जब बिल्ली बन गया तो शेर बना देने की प्रार्थना की और जब परमात्मा ने उसे अपना ही अंश मानकर उसकी मनोकामना पूर्ण कर उसे शेर बना दिया तो पापी शेर यह सोचकर कि कहीं यह परमात्मा उसे नष्ट न कर दे इससे पहले ही मैं उसका संहार कर दूं ऐसा विचार कर जैसे ही आक्रमण का प्रयास किया परमात्मा ने उसे पुनः चूहा बना दिया'। आज के संदर्भ में यही भाव मानव प्रकृति में दिखाई दे रहा है और अब पाप का घड़ा भरने में देर नहीं कि यह कब फूट जाये। अतः इससे पहले ही मनुष्य को इस पर्यावरण प्रदूषण के महाकाल की समस्या को समाप्त करने के लिये सम्पूर्ण मानव जाति की ओर से एकजुट प्रयास करने की आवश्यकता है।

उच्च कोटि की सभ्यता वाला भारतवर्ष परिष्कृत संस्कृति का पोषक है। संस्कारों के निर्माण में परिवेश की महती भूमिका है और पर्यावरण इन्हीं अर्थों में संस्कार एवं मन संस्कृति से जुड़ा है। पर्यावरण का प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष प्रभाव उस देश की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति पर पड़े बिना नहीं रहता। भारत के भौगोलिक पर्यावरण ने यहाँ की एकता एवं संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखा। इसी प्रकार भारतीय संस्कृति के प्रमुख तत्वों में पर्यावरणीय शुद्धि की महत्व को स्वीकार कर पर्यावरण को दूषित होने से बचाया।

कालान्तर में अनेक विदेशी संस्कृतियां भारत में आयी और इसकी मूलभूत विशेषता कि समन्वय और सामंजस्यता स्थापित करना के चलते यहीं पुष्पित, पल्लवित होती रही और स्वयं भी भारतीय सभ्यता संस्कृति के परिवेश में ढल गई। मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा की सिन्धु घाटी सभ्यतायें द्रविड़ों की मानी जाती हैं, वे भी सूर्य पूजा और देवी पूजा में यानि शक्ति पूजक थे, भारत में पारसी अग्नि पूजक थे। आग्नेश जाति वनों के प्रति प्रेम व आस्था रखती आर्य सर्वदा प्रकृति पूजक व प्रकृति प्रेमी रहे।'

आज भी धार्मिक व्यक्ति स्नान के समय विभिन्न नदियों का स्मरण कर स्नान करता है। विश्व की अनेक सभ्यताओं के नाम नदी घाटी सभ्यताओं के नाम से प्रसिद्ध हैं, क्योंकि जल जीवन है। सिन्धु घाटी सभ्यता के प्राप्त बर्तनों पर चित्रकारी वृक्ष, पशु, पक्षी आदि की आकृतियाँ व सिन्धुघाटी सभ्यता में नगर सड़कें, गन्दे पानी के निकास हेतु नालियाँ, स्नानगृह, अनाज के भंडार, कचरा पात्र आदि की व्यवस्था वर्तमान प्रशिक्षण प्राप्त अभियंताओं से कम नहीं है। प्रदूषण न फैलाने के लिये आज की भाँति नगर योजनाबद्ध कार्यक्रम पशु, पक्षी, वृक्ष व मोर की पीठ पर नृत्य करती हुई आकृतियां स्पष्ट करती है कि वे लोग प्राकृतिक जीव-जन्तुओं में तथा पर्यावरण में को संतुलित रखने में दक्ष रहे हैं। बौद्धकाल में यह विशेषता रही कि जन-जन का जीवन पर्यावरण सुरक्षा का द्योतक बन गया। गौतम बुद्ध की जीवन घटनायें, मातृपोषक जातक, विश्वांतर जातक, षड्दंत जातक, रूह जातक और महा हंस जातक आदि 12 जातकों से अनेक चित्रांकन किये गये हैं। जिनमें बाग बगीचों, वन, रथों, घोड़े, हाथी, हिरण, पशु व पक्षियों में हंस आदि के चित्रण को देखकर यही अनुमान लगता है कि वह इन सबसे प्रेम व अनुराग करने वाले रहे और पूर्ण रूप से उनको पुष्पित व पोषित किया।

आज हम यह विचार करें कि औद्योगिक विकास के साथ-साथ जीवन रक्षक पर्यावरण सरंक्षण को अनदेखा न करे क्योंकि उसके दुष्परिणाम भंयकर होने की संभावना है ऐसी भयावह स्थिति से राष्ट्र में रासायनिक वर्षा जैसी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति आ सकती है, बजाय मानसूनी वर्षा के। अतः हमें समय रहते सचेत होकर पर्यावरण सुरक्षा को विकास का मुख्य अंग समझना चाहिये। किसी भी देश की सभ्यता संस्कृति उसके नागरिकों की जीवनशैली में अभिव्यक्त होती है। अतः मनुष्य को अपनी संस्कृति की धरोहर मान्यताओं का आदर करते हुये अपने पर्यावरण की रक्षा का प्रसार सर्वोपरि व युगधर्म स्वीकार करना चाहिये। तभी हम अपनी धरोहर संस्कृति को अपनी संतति के भविष्य के लिये संजो पायेंगे ।

संदर्भ-सामग्री

1. आचार्य श्रीराम शर्मा, युगधर्म-पर्यावरण संरक्षण, पृ.-128, 2 जरनल- पर्यावरण चेतना- अप्रैल 2011, डॉ. पूर्ती चतुर्वेदी (शीर्षक- निरोग व दीर्घ जीवन हेतु दैनिक यज्ञ करें), पृ. 30
2. पर्यावरण और वैदिक संस्कृति, डॉ. उमेश राठौर, पृ. 8,9
3. पर्यावरण और वैदिक संस्कृति, डॉ. उमेश राठौर, पृ. 109
4. पर्यावरण और वैदिक संस्कृति, डॉ. उमेश राठौर, पृ. 127
5. पर्यावरण और वैदिक संस्कृति- डॉ. उमेश राठौर, पृ. 139
6. जनसंख्या प्रदूषण एवं पर्यावरण हरिश्चंद्र व्यास, पृ. 90-92

-डॉ. राजा राम

गांव शेखूपुर दड़ौली, फतेहाबाद

मो.: 9896789100

भूली बिसरी जाम्भाणी विरासतें

गुरु जम्भेश्वर भगवान ने पूरी दुनियां का भ्रमण किया, इस हेतु अनेक बार देशाटन, भ्रमण तथा प्रवास भी किया।

गुरु जम्भेश्वर भगवान का व्यक्तित्व तथा कृतित्व इतना चमत्कारिक तथा प्रभावशाली था कि जो एक बार भी उनके सम्पर्क में आ जाता उनका हो कर रह जाता।

गुरु जम्भेश्वर भगवान ने जहाँ-जहाँ भी भ्रमण तथा प्रवास किया, वहाँ उनके शिष्य बन गये। गुरु महाराज उपदेश देकर आगे बढ़ जाते, परन्तु भक्त लोग उनको महादेव मानकर उनका पूजन करने लगते। इस प्रकार जहाँ-तहाँ जम्भेश्वर महादेव के रूप में तीर्थ स्थल पूरे देश ही नहीं, पूरे विश्व में फैले हुए है। ऐसे ही दो स्थलों का यहाँ वर्णन प्रस्तुत है।

1. जम्भेश्वर गुफा, भुवनेश्वर, उड़ीसा

ओडिशा राज्य की राजधानी भुवनेश्वर के पास स्थित उदयगिरि और खण्डगिरि दो पहाडियाँ हैं। इन पहाड़ियों में आंशिक रूप से प्राकृतिक व आंशिक रूप से कृत्रिम गुफाएँ हैं, जो पुरातात्विक, ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्व की है। उड़ीसा में आंचलिक भाषा में गुफा को गुम्फा कहते हैं, अतः गुफा और गुम्फा शब्द साथ-साथ चलेंगे।

हाथी गुम्फा के शिलालेख में इसका वर्णन 'कुमारी पर्वत' के रूप में आता है। ये दोनों गुफाएँ लगभग दो सौ मीटर के अंतर पर है और एक दूसरे के सामने है।

ये गुफाएँ अजन्ता और एलोरा जितनी प्रसिद्ध तो नहीं है, लेकिन इनका निर्माण बहुत सुन्दर ढंग से किया गया है। इनका निर्माण राजा खारवाल के शासनकाल में विशालकाय शिला खण्डों को काटकर किया गया था और यहां पर निर्वाण प्राप्ति के उद्देश्य से यात्रा करने वाले साधु विश्राम तथा निवास करते थे। इतिहास, कला और धार्मिक दृष्टिकोण से इन गुफाओं का विशेष महत्व है।

उदयगिरि में 18 गुफाएं हैं और खण्डगिरि में 15 गुफाएं है। कुछ गुफाएँ प्राकृतिक है, लेकिन ऐसी मान्यता है कि कुछ गुफाओं का निर्माण गुरु जम्भेश्वर भगवान ने करवाया था और प्रारंभिक काल में चट्टानों को काट-काट कर बनाए गए मंदिरों की वास्तुकला के नमूनों में से एक है।

उदयगिरि की गुफाओं में फर्श को पत्थरों की समतल शिलाओं से बनाया गया है। सीढ़ीनुमा पत्थरों पर चलते-चलते 18 गुफाओं के दर्शन हो जाते हैं।

गुफा संख्या 1- रानी गुफा यानि रानी की गुफा है, जो दो मंजिला है। यह गुफा ध्वनि संतुलन की विशिष्टता के लिए प्रसिद्ध है और समझा जाता है कि इसका प्रयोग मंत्रोच्चार के लिए और नाट्य प्रदर्शनों के लिए किया जाता रहा होगा। यहाँ पर रथ पर सवार सूर्य देवता की मूर्ति भी है। नीचे वाली मंजिल के दाएं भाग में एक कक्ष है जिसके तीन प्रवेश स्थल है और खंभों वाला बरामदा है। चतुर्भुज आकार की शिला के तीन ओर से खुदाई की गई है और दीवारों पर चित्र-बेलें हैं। प्रवेश स्थल पर दो संतरियों की मूर्तियों सहित इसमें कुछ सुन्दर वास्तु कला के दृश्य है। प्रवेश स्थल के भित्ति स्तम्भों पर सुन्दर चित्र-बेले, तोरण, जीव-जंतुओं के दृश्य तथा धार्मिक और राजसी दृश्य है। एक नृतकी के साथ संगीतकार को हाथ जोड़ने की मुद्रा में दर्शाया गया है।

केन्द्रीय भाग में चार कक्ष हैं, यहाँ पर नरेश की विजय अभियान और उनकी यात्रा को दर्शाया गया है। यहाँ पर रक्षकों के कक्ष है, जिन्हें पहाड़ी से गिरते जल प्रपात, फलों से लदे वृक्षों, वन्य जीवों, वानरों और कमल-ताल में अठखेलियाँ करते हाथियों की मूर्तियों से सजाया गया। ऊपरी की मंजिल में छह कक्ष हैं, एक दांयी ओर, एक बांयी ओर, चार पिछली ओर है। सभी चार कक्षों में दो-दो द्वार है, जहाँ दो-दो भित्ति स्तम्भ है। यहाँ सर्प और कमल की तरह पवित्र धार्मिक प्रतीक चित्रित है। इसके अलावा शकुन्तला के साथ राजा दुष्यंत की पहली भेंट और नृत्य कला के भी दृश्य है।

गुफा संख्या 2- बाजाघर गुफा है, जहां सामने दो विशाल स्तम्भ है और अंदर एक और स्तम्भ है।

गुफा संख्या 3- को छोटा हाथी गुफा कहते हैं। इसके प्रवेश द्वार पर बहुत ही सुंदर छह हाथियों की मूर्तियां है।

गुफा संख्या 4- अल्कापुरी गुफा है, जो दो मंजिला है, यहां एक सिंह का दृश्य है, जिसके मुँह में शिकार को दबोचा हुआ है। पक्षियों का एक सुंदर जोड़ा, कुछ लोग और पशुओं के चित्र भी स्तम्भों पर अंकित है।

केन्द्रीय कक्ष में एक बोधि-वृक्ष भी बनाया गया है।

गुफा संख्या 5, 6, 7, 8- जय-विजय गुफा, पनासा गुफा, ठकुरानी गुफा, पातालपुरी गुफा के नाम से प्रसिद्ध है। पांचवी और सातवीं गुम्फाएं दो मंजिला है। इनमें चित्रकारी और पक्षियों आदि के चित्र हैं।

गुफा संख्या 9- मंचापुरी और स्वर्णपुरी गुफाएं है, जो दो मंजिला है और यहां कई वास्तुकला कृतियां और शिलालेख हैं। इसमें लंबी धोती, अंगवस्त्रम् और कानों में कुण्डल डाले और हाथ जोड़े हुए चार पुजारियों जैसी मूर्तियां है। इस गुफा में राजमुकुट पहने हुए व्यक्ति की भी मूर्ति है। इसके बारे में कहा जाता है कि यह छेदी नरेश वक्रदेव की मूर्ति है।

गुफा संख्या 10- गणेश गुफा है, यहां पर एक चेत कक्ष है, जो साधुओं का पूजा स्थल है। रहने के लिए कम ऊंचाई वाले दो कक्ष हैं और एक बरामदा है, जहां गणेश की उभरी हुई मूर्ति है। यहां विष्णु भगवान के अवतारों की नक्काशीनुमा मूर्तियां है।

यह गुफा संख्या ग्यारह, जम्भेश्वर गुफा कहलाती है। यह एक छोटी गुफा है जिसके दो दरवाजे हैं।

गुफा संख्या बारह कम उंचाई वाली तथा दो दरवाजे वाली व्याघ्र गुफा कहलाती है। इसका प्रवेश द्वार व्याघ्र के मुख जैसा है, जिसके ऊपर के जबड़े में दांत दिखाई देते हैं। यह बरामदे के छत का काम देती है और प्रवेश गली भी है। गुफा संख्या 13 सर्फ गुफा है, जो बहुत ही छोटी है। यहाँ पर राजा खारवाला का जीवन चरित्र मगधी भाषा में अंकित है। अन्य गुफाओं में गुफा संख्या 14- हाथी गुफा, गुफा संख्या 15- धनागार गुफा, गुफा संख्या 16- हरिदास गुफा, गुफा संख्या 17- जगम्मठ गुफा और गुफा संख्या 18- रोसई गुफा (रसोई गुफा) कहलाती है।

2. जम्भेश्वर महादेव, नरसिंहपुर (म.प्र.)

मध्यप्रदेश के नरसिंहपुर जिले के मलाह पिपरिया गांव में जम्भेश्वर भगवान का मंदिर स्थित है, जो मोटा महादेव के नाम से विख्यात है, जो अनोखी महिमा के लिए मशहूर है। जिला मुख्यालय से करीब 15 कि.मी. दूर मां नर्मदा के उत्तर तट की सुदूर वादियों में स्थित मलाह पिपरिया गांव में विराजमान 'मोटे महादेव जम्भेश्वर भगवान' अपने भक्तों की सभी इच्छाएं पूरी करते हैं। पूरे देश में श्रावण मास के दौरान लोग भगवान भोलेनाथ की आराधना करते हैं, वैसे तो भोलेनाथ के कई शिवालय अपनी महिमा के लिए प्रसिद्ध है। ऐसा ही एक मंदिर नरसिंहपुर में है, जहाँ स्थापित शिवलिंग हर साल एक इंच बढ़ जाता है। जम्भेश्वर भगवान या मोटा महादेव के नाम से प्रसिद्ध है।

जम्भेश्वर महादेव के बारे में कहा जाता है कि जब मोटे महादेव यहाँ विराजमान हुए थे, तब वो छोटे पिंडी के आकार के थे। धीरे-धीरे इनका आकार बढ़ता गया और आज इनका आकार साढ़े चार फीट ऊँचा और साढ़े ग्यारह फीट मोटा हो गया है। मंदिर के पुजारी पंडित गुलाब गोस्वामी बताते हैं कि नर्मदा तट पर बसे मलाह पिपरिया गांव में रहने वाले मालगुजार धुरंधर चौधरी को भोलेनाथ का स्वप्न आया था। जिसके आधार पर वे हिनोतिया के जंगलों से शिवलिंग लेकर आये और स्थापना करा दी थी।

पंडित गुलाब गोस्वामी ने इस मंदिर और शिवलिंग के बारे में बताया कि अंग्रेज शासनकाल में इसमें मूर्ति की स्थापना की गई थी। जैसे ही अंग्रेजों को इस मूर्ति के बारे में जानकारी मिली तो उन्होंने इस शिवलिंग की पुजारी से मांग की थी, जिसे पुजारी ने देने से मना कर दिया था।

कहा जाता है कि अंग्रेजों का ऐसा मानना था कि इस शिवलिंग के अंदर बहुमूल्य मणि है। लेकिन मालगुजार और उनके पूर्वजों ने इस शिवलिंग को अंग्रेजों को देने से मना कर दिया था। मोटे महादेव को अनूठा शिवलिंग कहा जाता है कि यह हर साल एक इंच बढ़ता है। स्थापना के बाद बढ़ते-बढ़ते साढ़े चार फीट ऊंचा तथा साढ़े ग्यारह फीट मोटा हो गया है।

हर साल वसंत पंचमी के अवसर पर पांच दिन तथा शिवरात्रि मौके पर तीन दिन का मेला लगता है। प्रतिवर्ष वसंत पंचमी को शिवलिंग की लम्बाई-चौड़ाई का आंकलन उसके वस्त्रों के आधार पर किया जाता है। जाम्भाणी विद्वानों, शोधकर्ताओं से आग्रह है कि ऐसे स्थानों का भ्रमण करें तथा भूली बिसरी जाम्भाणी विरासतों की सार सम्भाल करें।

-डॉ. उदयराज खिलेरी, अध्यापक
ग्राम-मेघावा, तह.-चितलवाना
जिला-जालोर (राजस्थान)
मो.: 9828751199

सत्कार हो नव संवत्सर का

प्रथम दिन ठिठुरन भरा हो, जिन्दगियां दुबकी जकड़ी हों,
दिवस कभी दिखता ना दिखता, धरा धुंध से अटी पड़ी हों।
अंग अभी नांही अंगड़ाई, नहीं किसी ने ली जम्हाई,
जीवन ने करवट ना बदली, जहाँ तहाँ नीरवता छाई।
नये दिवस का अभी पर्व क्यों? अभी धरा पर नया कहाँ है।
परम्परा अपने स्वदेश की, रीति नीति आदेश कहाँ है!
अभी मनाना देखा देखी, अभी मनाना नही सुसंगत।
अभी मनाने का हो कारन, कहता अपना नहीं शास्त्र मत।
धरा पर अभी छाया है कोहरा, होने दो उज्ज्वल उजियारा।
आओ हे नववर्ष पधारो, सत्कार जम्बू द्वीप तुम्हारा।
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को, अवतरण शुभ वर्ष हमारा॥

नया मनाने का सन्देश, हमने इस कुदरत में देखा।
आती जो नद नालों को छूकर, नूतन उस बयार में देखा।
रूप प्रकृति का निखरा निखरा, लगता सब कुछ नया नया है।
बाग! अभी फूलों कलियों पर, भौरों का भी यही बयां है।
लगते हैं खुशियों के मेले, हर्षाते जनरव में देखा।
उल्लास भरे फाल्गुन के गीत, होली के रंगों में देखा।
खुशियों की जो भरे उड़ान, नभचर के कलरव में देखा।
नदी सरोवर के कूलों पर, झरनों के जलरव में देखा।
सृष्टि सृजन के प्रथम सूर्य की, किरणों को तूने ही देखा।
विगत गत गणना के अंक, अंग समेटे अब भी लेखा।
गणना में सदियों अतीत की, सर्वोपरि साम्राज्य तुम्हारा।
आओ हे! नववर्ष पधारो! सत्कार जंबू द्वीप तुम्हारा।
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को, अवतरण शुभ वर्ष हमारा॥

महत पल कुछ और भी है, इस दिन के जिनको गिनाऊ।
लिखे बिन स्वागत अधूरा, जो न में उनको सराहू।
सृष्टि का जो प्रथम दिन है, दिन प्रथम नवरात्र का दिन।
होते रहे अनवरत अब तक, अनुष्ठान पूजा के अनगिन।
राम राज्य बन गया प्रतीक, वैभव की जो हवा बही है।
उसी राम राज्याभिषेक की, तिथि रही चिरमान्य यही है।
अभिषेक पांडव श्री युधिष्ठिर, धर्म ध्वज धारी धरा को।
दिन यही द्वापर युगे श्री, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को।
प्राच्य संवत्सर युगाब्द हो, चाहे सम्वत् विक्रमी शक।
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा दिन, बरस का केवल स्थापक।
सत्कार नव संवत्सरा का, शत नमन आगत के लिए।
कामना है तेजमाल की, सुखपूर्वक सब ही जिए।
भारत की पावन धरा पर, वैभव नित नित नित रहे।
कहलाए सोने की चिड़िया, घीव दूध की नदियाँ बहे।
विज्ञान ज्योतिष के गगन में, वे जुगनू है तुम चन्द्र हो।
क्यों सराहे अन्य को जो, घट कर हम से मंद्र हो।
गुरु पद भारत का प्रमान तुम विश्व में गौरव हमारा।
आओ हे! नववर्ष पधारो, सत्कार जंबू द्वीप तुम्हारा।
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को, अवतरण शुभ वर्ष हमारा॥

-तेजमाल खिलेरी
ग्राम शिमला, पोस्ट-खारा-345023
जिला जोधपुर
मो.: 8529455279

लघुकथा

संतुलन

ग्राम पंचायत की बैठक चल रही थी। इसमें सरकार द्वारा मनरेगा के मजदूरों का भुगतान सीधे उनके खाते में जमा करने के आदेश और उसके क्रियान्वयन एवं इसके पंच-सरपंच के कमीशन पर संभावित असर के संबंध में गंभीर चर्चा हो रही थी। बैठे गले से सरपंच जी बोल रहे थे- 'अब तो हमारे लिए कोई गुंजाइश ही नहीं बची। सरपंची के लिए चुनाव में जो खर्चा किया था, वह भी निकलना मुश्किल है।'

एक अनुभवी, घाघ पंच बोला- 'ऐसे में हमारा गुजारा कैसे होगा? इसका कोई न कोई तोड़ निकालना ही पड़ेगा।'

चश्मा उतारते हुए सचिव महोदय बोले- 'किसी को भी परेशान होने की जरूरत नहीं है। आप सब अपने-अपने परिवार के सभी व्यस्क लोगों के नाम से बैंक में खाता खुलवा लीजिए। मजदूरी का पैसा सीधे उनके खाते में पहुंच जाएगा और हां, सभी मजदूर अब प्रतिदिन दो घंटे ज्यादा काम करेंगे, ताकि संतुलन बना रहे और हिसाब बराबर रहे।'

अब सबके चेहरे पर संतुष्टि के भाव स्पष्ट रूप से देखे जा सकते थे।

-डॉ. प्रदीप कुमार शर्मा
रायपुर, छत्तीसगढ़

जांभाणी हरजस

परमानन्दजी बणियाळ कृत हरजस

(राग धनासी)

संतो भुंदू जग भरमायो॥1॥टेक

सिरजणहार संभाळयौ नाहीं, अहळो जळम गुमायौ॥2॥
दस मास ओदरि दुख पायौ, हरि सूं कोळ करि आयौ॥3॥
जप तप क्रीया भगति करिस्यौ, धरम नेम ठहरायौ॥4॥
वाव लगत सब सुध विसरयौ, कुळ सूं मोह लगायौ॥5॥
पांच सात दस भौळपणां मां, वीसां मोह लगयौ॥6॥
मगर पचीसी तीस वरस मां, तरणी रंग रहायौ॥7॥
पेतीस चाळीसां सुत परसंग, सगपण हरि विसरायौ॥8॥
पचासे प्रीति लगी पोतां सूं, साठयां धणीये न ध्यायौ॥9॥
सतरि वरस लग समधो नाहीं, अस्सियां विसन न ध्यायौ॥10॥
चलण थक्या अब जीभ चलावै, नीबै कहीं दाय न आयौ॥11॥
सौ वरसै सुधि बुधि गई सारो, अहळो जळम गुमायौ॥12॥
ज्यौं माखी गुड़ मां पड़ि पछताई, यों प्राणी पछतायौ॥13॥
आगै सुर नर लेखो मांगै, पूछत ही सुकचायौ॥14॥
काहीं लाभ चौवगणां लीया, काहीं मूळ ठगायौ॥15॥
गुर परताप साध की संगति, परमानन्द जस गायौ॥16॥

हे संतो, यह संसार मूर्खतावश भ्रम में फंसा हुआ है। इसके रचनाकर्ता भगवान को मनुष्य ने याद नहीं किया और यह मनुष्य जन्म व्यर्थ ही खो दिया। दस महीने ग्रभ में कष्ट भोगा और तत्पश्चात भगवान से सत कर्म करने का वचन देकर बाहर आया। जप, तप, क्रिया, भक्ति, नेम और धर्म करने का वचन दिया था। जब इस संसार की हवा लगी तो अपनी सुद्धि-बुद्धि खो दी और अपने परिवार में मन लगाया। पांच, सात, दस वर्ष तो भोलावस्था में गुजर गये, बीस वर्ष का होने पर मोह अधिक हुआ। पच्चीस, तीस वर्ष की अवस्था में स्त्री के संग प्रेम किया। पैंतीस, चालीस वर्ष की आयु में पुत्र-पुत्रियों और सगा-प्रसंगियों में मोह के कारण हरि को भुला बैठा। पचास वर्ष की अवस्था में पौत्रों से मोह हो गया और साठ वर्ष की अवस्था में भी हरि को याद नहीं किया। सत्तर वर्ष की अवस्था होने पर भी हे प्राणी, तूं समझा नहीं और न ही तूने अस्सी वर्ष की अवस्था में विष्णु को याद किया।

शरीर के ठीक रहने पर तो तूने कुछ किया नहीं, अब नब्बे वर्ष की अवस्था में कुछ होने वाला नहीं। सौ वर्ष की अवस्था में शुद्धि-बुद्धि सब नष्ट हो गई है। अतः हे प्राणी, तूने यह मनुष्य जीवन व्यर्थ ही गंवा दिया है। जैसे मक्खी गुड़ के अन्दर गिर कर पछताती है, ऐसे ही समय बीत जाने पर प्राणी पश्चाताप करता है। आगे देवता प्राणी से उसके लिए कर्मों का हिसाब लेता है, प्राणी ने कुछ भी सुक्रत नहीं किया था। अतः वह उसके पूछने से ही शर्माने लगा। इस संसार में तो हे प्राणी, तूने लोभवश चार गुना मूल्य लिया था, परन्तु वास्तव में तैने मूल वस्तु को ही खो दिया था, क्योंकि तूने हरि का स्मरण नहीं किया था। कवि परमानन्द जी कहते हैं कि गुरु की कृपा और साधुओं की संगति से ही मनुष्य का कल्याण हो सकता है।

साभार- बिश्नोई संतों के हरजस

बधाई संदेश

मोनू रानी धर्मपत्नी श्री अमित पंवार, निवासी ढाणी पंवार, गांव नंगथला, जिला हिसार (पुत्री श्री रामेश्वर पुनिया, गाँव लांधड़ी सुखलंबरान, जिला हिसार) ने 19 फरवरी, 2022 को जारी UGC & NTA नेट की परीक्षा में प्रथम प्रयास में ही सफलता प्राप्त करते हुए 99.908% अंक प्राप्त करके कॉमर्स विषय में JRF के लिए क्वालीफाई किया है।

राजीव गोदारा सुपुत्र श्री मदनलाल गोदारा, निवासी ठाकर बस्ती, जिला फतेहाबाद का चार्टर्ड अकाउटेंट्स (CA) की परीक्षा उत्तीर्ण कर मुम्बई में क्रेडिट रेटिंग कंपनी में Credit Risk Analyst के पद पर चयन हुआ है।

साहिल सुपुत्र श्री कृष्ण लाल धारणिया (पूर्व सरपंच), निवासी गांव नाढोड़ी, जिला फतेहाबाद ने चार्टर्ड अकाउटेंट्स (CA) की परीक्षा उत्तीर्ण की है।

अनुज खीचड़ सुपुत्र श्री संजय खीचड़, निवासी गांव झलनियां, जिला फतेहाबाद का चयन राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र में जिला सूचना विज्ञान अधिकारी के पद पर हुआ है।

डॉ. कुलदीप बिश्नोई सुपुत्र श्री बंसी लाल देहडू, निवासी गांव चपला मोरी, तह. व जिला फतेहाबाद का प्रवेश JLN मेडिकल कॉलेज, अजमेर में MD (Medicine) के पद पर हुआ है।

इंजी. सुन्दर लाल सुपुत्र श्री रामकिशन डेलू, निवासी गांव काकड़ा, तह. नोखा, जिला बीकानेर की American Investment Bank, Morgan Standey में Manager (Technologist) के पद नियुक्ति हुई है।

पूनम बिश्नोई सुपुत्री स्व. श्री अश्वनी कुमार, निवासी गांव कालीरावण, जिला हिसार ने जी.जे.यू., हिसार से B.Ed./M.Ed. (Integrated) में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

परीक्षा सुपुत्री श्री रामेश्वर पुनिया, निवासी गाँव लांधड़ी सुखलंबरान, जिला हिसार ने महर्षि मारकण्डेश्वर विश्वविद्यालय, मुलाना (अम्बाला) द्वारा आयोजित पीएच.डी. की प्रवेश परीक्षा में रसायन विज्ञान (केमिस्ट्री) विषय में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। आपने इससे पहले महर्षि मारकण्डेश्वर विश्वविद्यालय, मुलाना (अम्बाला) से ही M.Sc. (केमिस्ट्री) में 9.45 CGPA अंक प्राप्त करके विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया था एवं आपका चयन कैंपस प्लेसमेंट में Abryl Laboratories Pvt. Ltd. में क्वालिटी कंट्रोल ऑफिसर के पद पर हुआ था।

डॉ. अनामिका बिश्नोई, उप सिविल सर्जन, स्वास्थ्य विभाग, हिसार धर्मपत्नी डॉ. सुरेन्द्र सिंह खीचड़ SMO को PCPNDT नोडल अधिकारी के तौर पर भ्रूण लिंग जांच व अवैध गर्भपात रोकने के लिए किए गये उत्कृष्ट कार्य के लिए हरियाणा सरकार की ओर से महिला दिवस पर आयोजित राज्य स्तरीय समारोह, पंचकुला में प्रशस्ति पत्र व अवार्ड प्रदान कर सम्मानित किया गया है।

आप सबकी इन उल्लेखनीय उपलब्धियों पर बिश्नोई सभा, हिसार व अमर ज्योति पत्रिका परिवार की ओर से हार्दिक बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

जाम्भाणी संस्कारों की आवश्यकता एवं महत्व

हिन्दू संस्कृति में 16 संस्कारों का विधान है जबकि बिश्नोई पंथ में भगवान जाम्भोजी ने चार संस्कार ही निश्चित किए थे। मनुष्य की नैतिक, मानसिक, आध्यात्मिक उन्नति के लिए, प्रज्ञा और दैवीय गुणों के प्रस्फुटन के लिए शास्त्रों द्वारा निर्दिष्ट संस्कारों से व्यक्ति को संस्कारित करने की आवश्यकता होती है। जैसे- किसी दर्पण आदि पर पड़ी हुई धूल आदि गंदगी को वस्त्र आदि से पोंछना, हटाना या स्वच्छ करना मलापनयन कहलाता है, फिर किसी रंग या तेजोमय पदार्थ द्वारा उसी दर्पण को विशेष चमत्कृत या प्रकाशमय बनाना गुणाधान कहलाता है। संसार की कोई भी वस्तु ऐसी नहीं है जो बिना संस्कार किए मनुष्य के उपयोग में आती हो। जैसे हम अन्न खाते हैं, किन्तु खेत में जैसा अन्न होता है वैसा का वैसा हम नहीं खाते हैं। पहले उसका गाहटन करके उसमें दाना निकालते हैं, उसमें से भूसी अलग की जाती है, उसमें से जो दोष हैं उनको दूर करके, छान-बीन करके मिट्टी, कंकड़ सभी निकाले जाते हैं। यह दोषापनयन संस्कार है। फिर उसे चक्की में पीसा करके आटा निकाला जाता है। आटा छान करके फूस इत्यादि दूर किए जाते हैं, फिर उसमें पानी मिला करके पिण्ड बना करके रोटी बेलकर तवे पर सेंक करके उसे खाने योग्य बनाया जाता है। ये सभी गुणाधान संस्कार हैं। कोई भी वस्तु जब तक दोषापनयन या गुणाधान संस्कारों से हीन है तब तक वह सभ्य समाज के उपयोग के लायक नहीं होती है। खेत में अनाज खड़ा रहता है तो गाय, भैंस इत्यादि पशु उसे खा जाते हैं लेकिन कोई भी मनुष्य खेतों में उस अनाज को खाने को तैयार नहीं होता है। यदि कोई खाएगा तो लोग उसे कहेंगे कि यह पशु समान है। इसलिए संस्कारों से ही मानव में धर्म संस्कृति और मानवता आती है। संस्कार से ही व्यक्ति का मूल्य और सम्मान बढ़ता है। इसलिए अपने समाज में संस्कारों को कराने का महत्व है। मनुष्य में स्वच्छ मानव शक्ति के होने के लिए उसका जन्म से मृत्यु तक पूर्णतः चारों जाम्भाणी संस्कार यथा- 1. जन्म संस्कार, 2. सुगरा (गुरु दीक्षा मंत्र) संस्कार, 3. विवाह संस्कार, 4. मृत्यु (अन्तिम) संस्कार। संस्कार शुद्ध, सात्विक, नशामुक्त, सुगरे, हवन-पाहल के विधि विधान का ज्ञाता विद्वान बिश्नोई गृहस्थ या साधु-संतों से विधिपूर्वक सम्पन्न करवाने चाहिए। वास्तव में विधिपूर्वक संस्कार करने से दिव्य ज्ञानोप्रति से आत्मा को परमात्मा के रूप में प्रतिष्ठित करना ही मुख्य संस्कार है। संस्कारों से आत्मा व अन्तःकरण शुद्ध होता है। संस्कार ही मनुष्य को पाप और अज्ञानता से दूर रखकर आचार-विचार और ज्ञान-विज्ञान से संयुक्त करते हैं। संस्कार क्रिया के बिना शरीर शुद्धि नहीं होती है। अशुद्ध व्यक्ति देव कार्य (हवन पाहल, दान, सत्संग इत्यादि) करने का अधिकारी नहीं होता है। जाम्भाणी परम्परा अनुसार बिश्नोई समाज में पहला जातकर्म (जन्म) संस्कार जो बच्चे के जन्म के 30वें दिन पर जाम्भाणी साहित्यानुसार थरपना का कार्य बिश्नोई सद्गृहस्थ जो नित नेमी 29 नियमों के अनुसार जीवन जीने वाले से सम्पादित करवाना चाहिए।

दूसरा सुगरा (गुरु दीक्षा मंत्र) संस्कार: यह संस्कार बालक/बालिका के दसवें से पन्द्रवें वर्ष के बीच में लौकिक और पारलौकिक जीवन सुधार शिक्षा हेतु बिश्नोई समाज के सदा संतोषी, काम, क्रोध, लोभ, मोह से परे वीतरागी विद्वान साधु को घर पर बुला करके विधिपूर्वक हवन पाहल करवाने के लौकिक-पारलौकिक जीवन उपयोगी सामान्य उपदेशित नियमों की जानकारी करवाते हुए गुरु दीक्षा मंत्र दिलवाते हुए करवाना चाहिए।

तीसरा विवाह संस्कार: यह संस्कार जब बालक/बालिका यौवनावस्था में आ जाते हैं यानि बालिग हो जाते हैं। अपनी शिक्षा से कमाने व गृहस्थ जीवन चलाने योग्य हो गये हैं तो सुयोग्य वर-वधू के रूप में दाम्पत्य जीवन में प्रवेश करवाने हेतु निश्चित दिन को योग्य विधि-विधान के जानकार बिश्नोई सद्गृहस्थ के द्वारा रात्रि 12 बजे त्रिकाल प्रेम वेला से पूर्व विधिपूर्वक

करवाना चाहिए। गृहस्थ आश्रम देव ऋण, पितृ ऋण तथा ऋषि ऋण से निवृत्ति के मुख्य आधार हैं।

मृत्यु (अन्तिम) संस्कारः यह संस्कार किसी व्यक्ति की मृत्यु के तीसरे दिन प्रातःकाल सूर्योदय के साथ ही नित नेमी जानकार बिश्नोई सद्‌गृहस्थ जो उस मृतक के गौत्र का न हो उसे बुला करके घर-आंगन से बाहर सुविधानुसार यज्ञ वेदी बनाकर शुद्ध गौघृत से 120 सबदवाणी के पाठ द्वारा हवन पाहल करवाकर घर के पातक शुद्धि हेतु पाहल का छिड़काव पूरे घर के अन्दर-बाहर करवाएं। फिर सभी परिवारजनों, कुटुम्बियों कांदियों इत्यादि सभी को पाहल देते हुए पातक शुद्धिकरण करवाएं। अमृतमय वेदमयी सबदवाणी का सस्वर पाठ सहित हवन को उस जीव की विदेही रूप जब श्रवण करता है तो उसकी सद्‌गति अवश्य होती है। कागोल निमित्त बने मीठे भोज के साथ उस विदेही जीव के लिए एक बर्तन में अमृतमय पाहल भी उसकी आत्मिक शुद्धि के लिए रखना चाहिए। ऐसा शास्त्रीय विधान है।

-मास्टर मोतीराम कालीराणा
ग्राम लक्ष्मण नगर,
तह. फलोदी, जोधपुर (राज.)
मो.: 9783338265

महात्मा एकनाथ

इस महान् ईश्वर भक्त का जन्म वि.सं. 1560, में महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में हुआ था। उस गांव का नाम था पैठण जो गोदावरी के तट पर बसा है। इनके पिता सूर्य नारायण और माता रूक्मिणी थी। दुर्भाग्य से बचपन में ही इनके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया। इनकी दादी ने ही इनका पालन-पोषण किया।

छः वर्ष की आयु में ब्राह्मण कुल में जन्म के कारण इनका यज्ञोपवीत हुआ, फिर घर पर एक शिक्षक इनको पढ़ाने के लिए आने लगा। कुछ समय घर पर शिक्षा प्राप्त करते रहे, फिर गुरु की आज्ञा पाकर उन्होंने गिरजाबाई नाम की एक ब्राह्मण कन्या से विवाह कर लिया।

पति-पत्नी दोनों भक्ति रस में डूबे थे। एकनाथ जी भगवान की उपासना करते तो पत्नी अपने पति भगवान की पूजा सेवा करती।

एक बार एक मुसलमान ने 109 बार उन पर थूका तो एकनाथ जी ने एक सौ सात बार स्नान किया। इस पर भी उन्हें क्रोध नहीं आया। इसी से प्रभावित होकर लज्जित होकर उस मुसलमान ने उनसे क्षमा मांगी।

एक बार इनके विरोधी ब्राह्मणों ने यह शर्त लगा ली कि जो भी एकनाथ को क्रोधित कर देगा उसे दो सौ रुपये इनाम स्वरूप दिए जाएंगे।

फिर क्या था दो सौ रुपये के लोभ के कारण एक ब्राह्मण जाकर उनकी पीठ पर चढ़ गया, एकनाथ तो जोर-जोर से हंसने लगे। वह बहुत लज्जित हुआ। परन्तु अपनी हार न मानने के लिए वह उनके घर के अन्दर जाकर उनकी पत्नी की पीठ पर चढ़ गया।

पत्नी गिरजाबाई ने एक बच्चे की भांति उससे प्यार करके छोड़ दिया। एकनाथ को अब भी क्रोध न आया। वह ब्राह्मण लज्जित होकर उनके पांवों में गिर कर माफी मांगने लगा।

एक बार एक चोर इनके घर में घुस गया। उस समय एकनाथ जी पूजा कर रहे थे। चोर अन्दर घुसते ही अंधा हो गया, परन्तु जैसे ही एकनाथ जी ने आंख खोलकर उस चोर की ओर देखा उसे फिर से नजर आने लगा। वह चोर उनके पांवों में गिर अपने किए पर पश्चाताप करने लगा। उसने उस दिन से चोरी करनी छोड़ दी।

इस महान् प्रभु भक्त ने सम्वत् 1656 कृष्ण षष्ठी को इस संसार को छोड़ दिया। आज गोदावरी किनारे इनकी समाधि पर हर जन्मदिन पर भारी मेला लगाकर पर्व मनाया जाता है।

-दिव्य चैतन्य शास्त्री
मण्डी आदमपुर, हिसार
मो. : 9253868354

संस्कार गीत- विवाह के गीत (भाग-3)

विनायक के गीत: भारत संस्कृति में आध्यात्मिकता की प्रधानता है। इसी कारण यहां प्रत्येक शुभ कार्य के प्रारम्भ करने से पूर्व गणेश जी को याद किया जाता है। गणेश जी को रिद्धि-सिद्धि का स्वामी माना जाता है। जीवन में विवाह अत्यन्त शुभ कार्य है। विवाह के सभी कार्य बिना किसी बाधा के सम्पन्न हो जावे, इसी उद्देश्य से सर्वप्रथम गणेश जी को स्मरण किया जाता है। भारतीय संस्कृति की इसी मान्यता एवं विश्वास के आधार पर बिश्नोई समाज में विवाह के सात, पांच या तीन दिन पूर्व गणेश जी की पूजा की जाती है जिसे विनायक बैठाना कहते हैं। इस दिन गणेश जी से सम्बन्धित विभिन्न गीत गाये जाते हैं और अनेक रस्में पूरी की जाती हैं। समाज में विनायक बैठाने का दिन निश्चित नहीं है। इसमें घरवालों की सुविधा एवं इच्छा ही प्रमुख रहती है। इसी कारण कई बार वर-कन्या के यहां अलग-अलग दिन विनायक बैठाये जाते हैं। इस दिन सम्पन्न होने वाली सभी रस्मों पर गीत गाये जाते हैं। बिना गीतों के कोई रस्म पूर्ण नहीं होती। इन रस्मों में सामाजिकता एवं धार्मिक भावना का मिश्रण रहता है। इसके साथ ही इन रस्मों के सम्पन्न करने में स्त्रियों का ही वर्चस्व रहता है, जिससे एक बात स्पष्ट है कि हमारे समाज में प्रारम्भ से ही स्त्री वर्ग का बहुत मान-सम्मान रहा है। गुरु जाम्भोजी ने भी सबदवाणी एवं उनतीस नियमों में स्त्रियों के प्रति बहुत आदर एवं सम्मान प्रकट किया है। इसीलिए बिश्नोई समाज में स्त्रियों को अपने अधिकारों की प्राप्ति हेतु कभी कोई संघर्ष नहीं करना पड़ा है। समाज में स्त्रियों का यह मान-सम्मान आज भी देखा जा सकता है।

विवाह की सभी गतिविधियां विनायक बैठाने (गणेश पूजा) के दिन से प्रारम्भ होती है। इसलिए वैवाहिक कार्यों की सुखद सम्पन्नता का भार गणेश जी पर ही रहता है।[2] इसीलिए विनायक के एक गीत में विवाह के विभिन्न कार्यों को सफलतापूर्वक सम्पन्न करवाने के लिए गणेश जी से प्रार्थना की गई है।

चालो ए विनायक जी आप्पा बाणीड़ै रे घर चाला।
आच्छा-आच्छा पडला मोलावा ओ राज, म्हारा बिड़द बिनायक।
ओछी नै गोडी रो ओ राज, म्हारा बिड़द बिनायक।
सूंड-सूंडालो ओ राज, म्हारा बिड़द बिनायक।[3]

आगे गीत में अन्य सभी कार्यों के लिए भी ऐसी ही प्रार्थना की गई है।

बिनायक बैठाने के दिन संध्या को बनड़े-बनड़ी के पीठी (उबटन) लगाई जाती है। उबटन लगाने का यह कार्य विवाह के दिन तक चलता रहता है। बिश्नोई समाज ग्रामीण समाज है और ग्राम्य जीवन में अनेक वस्तुएं उपास्य एवं पूज्य है। इसी कारण बिनायक बैठाने के दिन उबटन को तैयार करने के लिए गेहूं, मूंग एवं हल्दी को कूटकर पीसा जाता है, जिसके लिए ओखली, मूसल एवं चक्की की पूजा की जाती है। इन सारी रस्मों के अलग-अलग गीत हैं। इसी कारण बिनायक बैठाने के पूरे दिन गीत गाये जाते हैं, जिससे घर का सारा वातावरण गीतमय एवं आनंदमय बन जाता है। समाज में उबटन लगाने का बहुत महत्व है। इसी कारण एक गीत में उबटन के तैयार करने का वर्णन किया गया है।

जामी म्हारा पोट पिलाणा, जायज्यो मेड़तै।
मेड़तीय रा गेहूंड़ा मोलाय, हल्दी ओ हड़हड़ी।
जामण म्हारी गेहूंड़ा जी कूटै, हल्दी ओ हड़हड़ी
ओ रंग लाडलड़ै रै, अंग सोय।[4]

वस्तुत: विवाह एक सामाजिक व्यवस्था है, जिसको सम्पन्न करने में परिवार एवं समाज के अधिक से अधिक लोगों का सहयोग, भागीदारी एवं गवाही रहती है। समाज का यही सहयोग एवं भागीदारी बिनायक के गीतों में अभिव्यक्त हुई है। इस दिन गणेश जी की स्थापना के साथ-साथ उबटन को तैयार करना प्रमुख कार्य रहता है। गीतों के अनुसार उबटन तैयार करने के लिए गेहूं लाने का काम पिता करते हैं तो उसे तैयार माता करती है। मूंग लाने का काम ताऊजी करते हैं तो उसे तैयार ताई करती है। इसी तरह उबटन के लिए हल्दी लाने और उसे तैयार करने का काम मामा-मामी करते हैं।

मामा म्हारा पोट पिलाणा, जायज्यो मेड़तै।
मेड़तीय री हल्दी मोलाय, हल्दी ओ हड़हड़ी।
मामी म्हारी हल्दी हुनारै, हल्दी ओ हड़हड़ी।
ओ रंग लाडलड़ै रै अंग सोय।[5]

बिनायक बैठाने के दिन अनेक रस्में सम्पन्न होती है, जिनमें समाज भी अनेक स्त्रियों की भागीदारी रहती है और इसी भागीदारी से उबटन तैयार होता है। विभिन्न सम्बन्धियों एवं समाज के लोगों द्वारा विवाह के कार्यों में प्रेमपूर्वक भाग लेने के कारण ही वैवाहिक वातावरण आनन्दमय बन जाता है, जिससे न केवल विवाह वाले घर में अपितु पूरे गांव का वातावरण आनन्दयुक्त हो जाता है। इसी आनन्दमय वातावरण में बनड़ा-बनड़ी और अधिक प्रसन्न दिखाई देते हैं। ऐसे में जब उनमें शरीर पर प्रतिदिन पीठी लगती है तो उनके शरीर पर निखार आना प्रारम्भ हो जाता है।

बिश्नोई समाज में बनड़े-बनड़ी के पीठी लगाने का काम सामान्यत: नाई या नायन द्वारा किया जाता है पर 'बिनायक बैठाने' वाले दिन प्रारम्भ में परिवार या समाज की सात स्त्रियों द्वारा पीठी लगाने की रस्म पूरी की जाती है और उस समय इस रस्म से सम्बन्धित गीत भी गाये जाते हैं। जो-जो स्त्री पीठी लगाती है, उसका नाम लेकर गीत गाया जाता है। पीठी को तैयार करने में तेल का भी प्रयोग किया जाता है। इसलिए पीठी लगाने को तेल चढ़ाना भी कहा जाता है। इसी आधार पर एक कहावत प्रसिद्ध है-

ल्याई ए तेलणा तेल, तेल छपाकी रे लो।
रामू घर घीवड़िया रामीबाई, तेल छपाकी रे लो।
राजू घर गी बहूड़िया खीचड़ तेल चढ़ायो।[6]

प्रारम्भ में सात स्त्रियों द्वारा पीठी लगाने से विवाह में पूरे समाज की भागीदारी प्रकट होती है। इसके साथ-साथ विवाह के अन्य कार्यों में भी समाज के अन्य लोगों का पूर्ण सहयोग रहता है। विनायक बैठाने के दिन बनड़े-बनड़ी के लिए जो पीठी तैयारी की जाती है, उसमें अनेक वस्तुओं की आवश्यकता रहती है, जिनकी पूर्ति समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों द्वारा होती है। कुम्हारी उबटन रखने के लिए छोटी हांडी लेकर आती है तो खाती पाटा लाता है, लुहार बनड़े के लिए लोहे का गेडिया लाता है और तेली उबटन के लिए तेल लेकर आता है। इस भागीदारी से यही प्रमाणित होता है कि विवाह एक सामाजिक कृत्य है। समाज की भागीदारी से सामाजिकता के साथ-साथ समानता की भावना भी प्रकट होती है।

तूं तो तेलीड़ा तेल ले आय, चम्पेलो म्हारै घरै घणो।[7]

बिश्नोई समाज के प्रवर्तक गुरु जाम्भोजी भी जात-पात के विरोधी और मानव समानता के प्रबल समर्थक थे।[8] यही भावना हमें बिश्नोई लोकगीतों में दिखाई देती है।

एक ओर बनड़े-बनड़ी के पीठी लगाई जाती है तो दूसरी ओर स्त्रियां उत्साह एवं आनन्द के साथ सुरीली आवाज में गीत गाती हैं और बच्चे गुड़ प्राप्त करने की उम्मीद में आंगन में खेलते रहते हैं, जिससे सारे घर का वातावरण आनन्दमय बन जाता है। इसी आनन्द को एक गीत में अभिव्यक्त किया गया है, जिसे सुनकर श्रोता और अधिक आनंदित हो जाते हैं।

थारै दादै संजोयो ओजसणो, थारी दादी गै मन कोड घणो।
चम्पलै गी डाळी ए बांस घणों, मरवै गी डाळी ए बांस घणो।[9]

पीठी लगाने से बनड़ा-बनड़ी के रंगरूप में जो निखार आता है, उस निखार के लिए बनड़ा सारा श्रेय अपनी दादी, मां एवं ताई आदि को देता है और अपने कालेपन का कारण हंसी-हंसी में भाभी को बतलाता है।

तूं तो पीळो रे रायजादा बनड़ा किसोड़ै गुणो।
म्हारी दादी जी नुहाया ओ राज, सोनै कै रे रूंख तळै।
तूं तो धोळो रे रायजादा बनड़ा किसोड़ै गुणो।
म्हारी माता जी नुहाया ओ राज, चांदी कै रे रूंख तळै।
तूं तो काळो रे रायजादा बनड़ा किसोड़ै गुणो।
म्हारी भावजड़ी नुहाया ओ राज, सुरमै कै रे रूंख तळै।[10]

गीत के अंत में देवर-भाभी का जो हास्य-विनोद प्रकट हुआ है, वह सनातन परम्परा से चला आ रहा है। इस हास्य विनोद से विवाह का वातावरण और अधिक आनंदमय बन जाता है। इसी आनंदमय वातावरण में पहले दिन की पीठी लगाने का कार्य पूर्ण हो जाता है और उसके बाद बनड़ा-बनड़ी द्वारा स्नान किया जाता है। स्नान के समय स्नान से सम्बन्धित गीत गाया जाता है।

अळळ-सळळ म्हारी नदी रे बहवै, म्हारी नदी रे बहवै।
बुगली मळ-मळ नहावै जी।
बुगलै कागद भेज्यो रायजादा भेजो रायजादा
गैर भगत मत नहावो जी।[11]

गीत के अन्त में बुगले को बुगली के सम्बन्ध में होने वाली चिन्ता को भी प्रकट किया गया है। विवाह की तिथि तय होने के बाद से ही बनड़ा-बनड़ी एक-दूसरे के लिए चिन्तित होने प्रारम्भ हो जाते हैं और वे एक पल के लिए भी एक-दूसरे को अपने चित से दूर नहीं करते।

न्हाय धोय लाडलो बैठो बाजोट, कोई आमण दुमणो।
कांई म्हारो लाडलो मांगै सिर दाग, कांई चढण घोड़लो।
नांई म्हारा बाप जी मांगू सिर पाग, नांई चढण घोड़लो।
मांगू म्हारा बाप जी रामू जी री घीव, बाही म्हारै चित चढ़ी।[12]

स्नान करने के बाद बनड़ा-बनड़ी उनके लिए तैयार किए गये पीढों पर बैठते हैं, जहां भुआ या बहिन उनकी आरती करती है। प्रत्येक मांगलिक कार्य को बिना किसी बाधा के सम्पन्न करने के लिए देवता का आह्वान किया जाता है और उसके मान-सम्मान के लिए आरती की जाती है। इसी आधार पर यहां बना-बनी की आरती के माध्यम से देवता की आरती की जाती है। इस आरती के बदले में भुआ या बहिन को पर्याप्त नेग दिया जाता है। कभी-कभी इस नेग को लेकर नणद-भाभी की नोंक-झोंक भी हो जाती है, पर भाई स्थिति को सम्भाल लेता है और वह दोनों में सांमजस्य बैठा देता है। इससे हमें यही प्रेरणा मिलती है कि जीवन की सफलता के लिए सांमजस्य आवश्यक है।

जित बेसै जित रामूजी रो सिव, कर म्हारी भुआ आरती जी।
आरतड़ो बीरा कियौ न जाय, भावज कोसा बो लिया जी।
औगणीयां बाई परै रे निवार, घड़ी दो घड़ी गो आरतो जी।[13]

भुआ द्वारा आरती करने के साथ ही 'बिनायक बैठाने' के दिन की सारी रस्में पूर्ण हो जाती हैं और उन रस्मों के साथ गाये जाने वाले गीत भी पूरे हो जाते हैं। अंत में सबको गुड़ बांटकर विदा किया जाता है। इस दिन से बनड़ा -बनड़ी विवाह तक प्राय: घर में रहते हैं, जिसके बहुत अच्छे परिणाम प्राप्त होते रहे हैं। आज इसमें ढील देने से समाज को अनेक कष्टों का सामना करना पड़ रहा है। विनायक बैठाने के दिन से बनड़ा अपने पास लोहे का गेडिया रखना प्रारम्भ कर देता है, जिसे वह बहू भधारने तक अपने पास रखता है।

बनोळे के गीत- बिश्नोई पंथ में विवाह से तीन, पांच या सात दिन पूर्व बिनायक की स्थापना की जाती है, जिसे बिनायक बैठाना कहते हैं। इस संध्या को बनड़े- बनड़ी का कोई निकट का सम्बन्धी बनड़े या बनड़ी को परिवार सहित भोजन का निमंत्रण देता है, जिसे बनोळा कहते हैं। कई स्थानों पर बनोळे का निमंत्रण देने वाले को विवाह वाले घर से गुड़ दिया जाता है, जिससे यह निश्चित हो जाता है कि बनोळा अमुक घर से ही होगा।[14] बनोळे में विवाह वाले घर के सभी सदस्य एवं आये हुए मेहमान भोजन करने पहुंचते हैं। बनड़े-बनड़ी के हम उम्र के साथी एवं बच्चे भी बनड़े-बनड़ी के साथ भोजन करने जाते हैं जिन्हें निमन्त्रण देने का उत्तरदायित्व बनड़े-बनड़ी का होता है। बिश्नोई समाज में बिनायक बैठाने के दिन से लेकर विवाह से पहले दिन तक बनोळे दिये जाते हैं। वैसे सामान्य तौर पर भी जब किसी को भोजन का निमंत्रण दिया जाता है तो उसमें प्रेम एवं सम्मान का भाव प्रकट होता है। इस दृष्टि से विवाह में बनोळे की प्रथा से विवाह की सामाजिकता एवं प्रेम भावना के साथ-साथ आर्थिक सहयोग भी दिखाई देता है। बनोळे की यह प्रथा गांव में वैवाहिक वातावरण को निर्मित करने में भी सहायक रही है। गीतों की स्वर लहरियों एवं ढोल की आवाज से पूरे गांव में हर्षोल्लास छा जाता है, जिससे गांव में चहल-पहल बढ़ जाती है। बनोळा देने वाले के घर में जब सभी आमन्त्रित लोग भोजन कर लेते हैं तो बनड़ा-बनड़ी को नारियल एवं कुछ रुपये देकर विदा किया जाता है। इसी विदाई के साथ गीत गाये जाने प्रारम्भ हो जाते हैं। बनोळे में आमन्त्रित स्त्रियां गीत गाकर बनड़े-बनड़ी को उनके घर पहुंचाती है। रास्ते में कितना समय लगाना है यह गीत गाने वाली स्त्रियों पर निर्भर करता है। बनोळे के घर पहुंचने पर बनड़े-बनड़ी की दादी, ताई एवं भुआ आदि में से कोई गीत गाने वाली स्त्रियों एवं बच्चों को गुड़ बांटती हैं तथा साथ ही बनड़े-बनड़ी की आरती की जाती है।

बनोळे में जो सर्वप्रथम गीत गाया जाता है, उसमें बनोळे देने वाले का परिचय, भोजन की व्यवस्था, भोजन में परोसी गई वस्तुओं एवं बनड़े-बनड़ी के गुणों आदि का वर्णन रहता है।

पूछै म्हारी राय बनैगी मा, आज बनोळो कण निवतयो।
(गांव का नाम) मेंराजू जी रा सिव, आज बनोळे बांनिवंतयो।
जां घर गोदारी दे नार, भली रे जुगत सूं जीमाया।[15]

बनड़े या बनड़ी की मां यह पूछती है कि आज बनोळा किसने दिया है। जवाब में यह कहा गया है कि आज अमुक गांव के अमुक व्यक्ति के बेटे ने बनोळा दिया है और उसके घर अमुक जाति की पत्नी है, जिसने बड़े प्रेम एवं चतुराई से सबको भोजन करवाया है। इसी तरह एक अन्य गीत में भोजन में परोसी गई वस्तुओं का वर्णन किया गया है।

बना थारै बड़ै गै निंवतो रे, बड़ी थारी निवन्तो जीमावै रे।

सागै मिसरी गा मेवा रे, सागै दागोदार मिठाई रे।[16]

बनोळे के घर पहुंचने पर स्त्रियां गीत के माध्यम से ही बनड़े-बनड़ी की भुआ से बनड़े-बनड़ी की आरती करने की प्रार्थना करती है।

आरतड़ो कर भुआ, लाडो बाहयर खड़यो।
थारै बनड़ै गा चिंत्या हुआ, लाडो बाहयर खड़यो।[17]

विवाह का वातावरण आनंदमय होता है। इसमें हर किसी का मन मौज-मस्ती करने का होता है। इसी कारण इस गीत के अन्त में स्त्रियां बनड़े-बनड़ी के सम्बन्धियों को प्रेममय गाली गाने लगती हैं।

आरतड़ो कर ए मामी, लाडो बाहयर खड़यो।
थानै लेग्या मोडा स्वामी, लाडो बाहयर खड़यो।[18]

बनोळे के गीतों में कुछ बनड़े भी गाये जाते हैं। बनड़े कौन-कौन से गाने हैं, इसमें कोई बन्धन नहीं है। सामाजिकता एवं प्रेम भावना की दृष्टि से बनोळे और बनोळे गीतों का अत्यधिक महत्व है। इन गीतों में बिश्नोई संस्कृति की अनेक विशेषताएं अभिव्यक्त हुई हैं।

संदर्भ :

1. डॉ. स्वर्णालता अग्रवाल, राजस्थानी लोकगीत, पृ. 69
2. डॉ. मनोहर शर्मा, लोक साहित्य की सांस्कृतिक परम्परा, पृ. 60
3. डॉ. बनवारी लाल सहू, बिश्नोई लोकगीत, पृ. 45, 46
4. वही, पृ. 45
5. वही, पृ. 45
6. वही, पृ. 46, 47
7. वही, पृ. 47
8. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, जाम्भोजी की सबदवाणी, पृ. 39-1, 2
9. डॉ. बनवारी लाल सहू, बिश्नोई लोकगीत, पृ. 48
10. वही, पृ. 48, 49
11. वही, पृ. 49
12. वही, पृ. 50
13. वही, पृ. 50
14. श्री महंत शिवदास शास्त्री, बिश्नोई विवाह पाटी, पृ. 6
15. डॉ. बनवारी लाल सहू, बिश्नोई लोकगीत, पृ. 51
16. वही, लेखक का निजी संग्रह
17. वही, बिश्नोई लोकगीत, पृ. 53
18. वही, पृ. 53

क्रमशः आगामी अंक में

-डॉ. बनवारी लाल सहू
विभागाध्यक्ष (हिन्दी) से.नि.
एन.एम.पी.जी. कॉलेज, हनुमानगढ़ टाउन (राज.)
मो.: 9414875029

युग के युवा

विशाल इन्द्र का धनुष उठा सके जो मनुष्य
वो ही युवातंत्र का मजबूत दावेदार है।
जय जयकार है, जय जयकार है।

जो भीम की गदाओं का प्रहार सह सके
जो भीष्म की प्रतिज्ञा का भार सह सके
उस युवातंत्र के कंधों पर
भविष्य का आधार है
जय जयकार है, जय जयकार है।

जो ऊँचाइयों में नम हो, और शिष्यों में एकलव्य हो
जो सिंह की दहाड़ हो जो सूर्य पर सवार हो
ऐसे वीर युवातंत्र को जगत रहा पुकार है
जय जयकार है, जय जयकार है।

जो संकल्पों का कलश उठाकर
अपनी सौगंध दोहराता है
जो कल के महत्वाकांक्षी
भारत का भाग्य विधाता है
उस युवातंत्र को हृदय से नमस्कार है
जय जयकार है, जय जयकार है।

-अमरदीप सिंह सीगड़
गांव लीलस, जिला भिवानी
मो.: 9991940029

पुस्तक समीक्षा

जांभाणी साहित्य का दिग्दर्शन है 'सूक्ति सागर'

वर्तमान युग आपाधापी और तीव्रता का युग है और हर किसी के पास समय के अभाव का बहाना रहता है। ऐसे में विस्तृत रूप से साहित्य व धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन का अभाव है। संस्कृति में लगातार हो रहे विचलन की वजह भी व्यक्ति का साहित्य अध्ययन से दूर होना ही है। ऐसे में यदि कोई व्यक्ति जाम्भाणी साहित्य का अध्ययन करना चाहे व जाम्भाणी कवियों व संतों द्वारा रचित रचनाओं के मर्म को जानना चाहे तो किसी एक सर्वमान्य पुस्तक का बिश्नोई समाज में सदा अभाव रहा है।

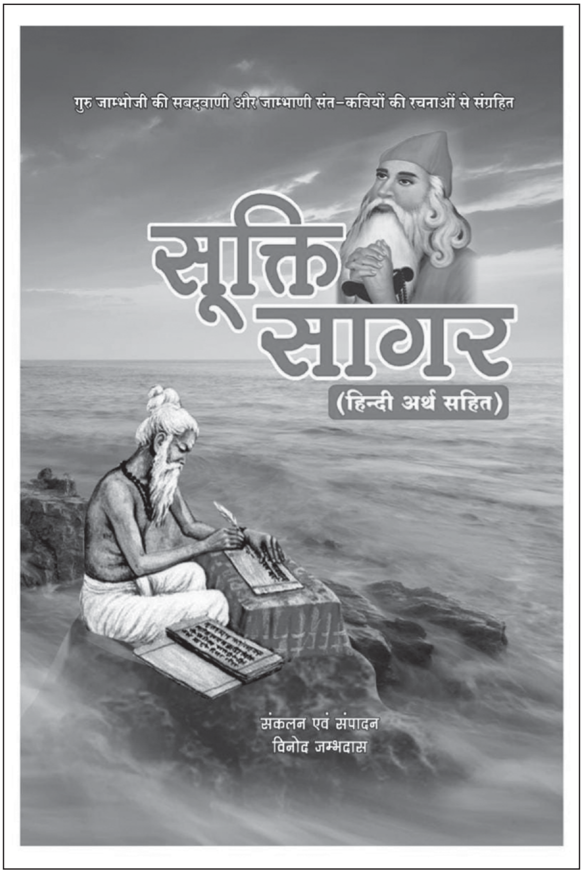

इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए जाम्भाणी साहित्यकार व तत्वज्ञानी श्री विनोद जम्भदास जी द्वारा जाम्भाणी कवियों व संतों द्वारा रचित साहित्य में से सूक्तियों को कुछ वर्ष पूर्व सोशल मीडिया पर प्रेषित करना प्रारंभ किया जिसे बहुत पसंद किया गया। हालांकि हर व्यक्ति सोशल मीडिया पर भी उपलब्ध हो यह जरूरी नहीं है और इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए जाम्भाणी साहित्य की सूक्तियों को संकलित कर एक पुस्तक का रूप प्रदान किया गया है– 'सूक्ति सागर'।

जाम्भाणी साहित्य अकादमी बीकानेर द्वारा प्रकाशित पुस्तक सूक्ति सागर का गत 30 जनवरी को मेहराणा धोरा पंजाब में विमोचन किया गया। सूक्ति सागर में गुरु जाम्भोजी की सबदवाणी और जाम्भाणी संत कवियों द्वारा रचित साहित्य में से सूक्तियों का संकलन किया गया है। पुस्तक के प्रारम्भ में सबदवाणी के शब्दों में से सूक्तियों को संकलित किया गया है। सबदवाणी की सूक्तियां पाठक के मन पर सीधा प्रभाव डालती है और उसे इस उहापोह के जीवन में तत्व प्राप्ति के लिए प्रेरित करती है। सबदवाणी की सूक्तियां इस प्रकार से संकलित की गई है की पाठक को स्वमेव ही कंठस्थ होने लगती है और पाठक को सम्पूर्ण सबदवाणी को पढ़ने व जानने के लिए प्रेरित करती है। सबदवाणी सूक्तियां युक्ति व मुक्ति का सन्देश सार रूप में पाठक को देती है।

सबदवाणी की सूक्तियों के पश्चात गुरु जाम्भोजी के हुजूरी व परवर्ती संतों की वाणी में से सूक्तियों का संकलन किया गया है। प्रत्येक संत कवि के शीर्षक के साथ सूक्तियों को रखा गया है जिससे बहुत अल्प समय में पाठक कवि के मर्म के प्रति जिज्ञासु हो उठता है और कवि की सम्पूर्ण रचना को पढ़ने को लालायित हो उठता है जिससे लेखक का उदेश्य भी पूर्णता को प्राप्त करता है।

संत कवियों में तेजो जी चारण, समसदीन जी, डेल्ह जी, पदम् भक्त, कील्हजी चारण, सुरजन जी, सिवदास जी, एकजी, जोधोजी रायक, केसो जी देहडू, लालचंद जी नाई, कान्होजी बारहठ, आसनोजी, कोल्हजी चारण, उदोजी नैन, अलूजी कविया, दीनमहमंद जी, रायचंदजी सुथार, कुलचंदजी अग्रवाल, राव लूणकरण जी, रेडो जी, वाजिंद जी, लक्ष्मणजी गोदारा, आलमजी, रैदासजी, भींवराज जी,

दीनसुंदरदीजी, मेहोजी गोदारा, रहमतजी, गुणदास जी, लाखू जी, विल्हो जी दसुंदीदास जी, आनंद जी, नानिग जी, लाल जी, गोपाल जी, हरियो जी, केशो जी गोदारा, सुरजनदास जी पुनियाँ, रामूजी खोड़, दुर्गदास जी, किशोर जी, कालू जी, मिठू जी, माखन जी, रुपो जी वणियाल, दामो जी, देवो जी, हरिनंद जी, गोकल जी, रासानंद जी, मुकन जी, सेवादास जी, चतरदास जी, सुदामा जी, हीरानंद जी, हरजी वणियाल, परमानंद जी वणियाल, गोविंदराम जी बागड़िया, रामलाल जी, हरचन्द जी ढुकिया, गंगाराम जी, सुरतराम जी, मयारामदास जी, खैरातीराम जी, विष्णुदास जी, हरिकिसनदास जी, पोकरदास जी, उदोजी अडींग, मोतीराम जी, लीलकण्ठ जी, गोविंदराम जी, खेमदास जी, मुरलीदास जी, पीताम्बरदास जी, परसराम जी, साहबराम जी राहड़, बिहारीदास जी, शीतल जी, ईश्वरानंद जी गिरी, स्वामी ब्रह्मानन्द जी, हिम्मतराय जी, किशोरीलाल जी गुप्त, माधवानंद जी, विरद्धिदास जी, जगमालदास जी, श्री रामदास जी गोदारा, कुम्भाराम जी पुनियाँ, जगदीशराम जी की सूक्तियों का संकलन किया गया है।

इन सूक्तियों को पढ़ते हुए पाठक को हुजूरी संतों कवियों के व्यक्तित्व व कृतित्व का ज्ञान तो मिलता ही है अपितु साथ-साथ जाम्भाणी दर्शन का भी सांगोपांग विवरण मिलता है। संत-कवियों की सूक्तियों में एक गहरा जीवन दर्शन छुपा है जो हमें एक सभ्य जीवन कैसे जीना है और सदाचार को मुक्ति का मार्ग कैसे बनाना है इसका ज्ञान भी उपलब्ध होता है। संत-कवियों ने आम बोलचाल की भाषा में धर्म के गूढ़ रहस्यों को सरल अर्थ दिया है जिसे श्री जम्भदास जी ने सार रूप में पाठकों को उपलब्ध करवाया है। जीवन की सामान्य व असामान्य परिस्थितियों में भी किस तरह से सहज रहकर जाम्भाणी पथ पर चला जाए, यह संतों की वाणी का जीवन दर्शन है, श्री जम्भदासजी ने ऐसे गहरे जीवन दर्शन से ओतप्रोत सूक्तियों को संकलन में प्रमुखता दी है जिससे पाठक को आध्यात्मिक लाभ के साथ-साथ उसके जीवन व्यवहार का भी उचित मार्गदर्शन मिलता है।

सूक्तियां पाठक को भगवद चिंतन हेतु प्रेरित करती है और जीवन की कला सिखाती है। सूक्तियों के संकलन से यह प्रकट हो जाता है कि यह केवल संकलन मात्र नहीं है बल्कि लेखक के वर्षों पर्यन्त अध्ययन का परिणाम है। कहीं भी ऐसा आभास नहीं होता कि संकलनकर्ता ने केवल चयन किया है अपितु दर्शन व मूल्यों की तारतम्यता को भी कायम रखा है। निश्चित रूप से श्री जम्भदास जी ने पहले स्वयं जाम्भाणी दर्शन के मर्म को जाना है और मुमुक्षु संतों कवियों के अनुभव तक पहुंचे हैं और इसके उपरान्त उन्होंने इसे सार रूप में सूक्तियों के रूप में संकलित किया है। सूक्ति सागर पुस्तक सभी प्रकार के पाठक वर्ग को लाभान्वित करने वाली पुस्तक है।

एक साहित्यिक अध्येता व शोधार्थी के लिए यह पुस्तक जाम्भाणी साहित्य के अध्ययन का आधार स्वरूप प्रदान करती है और सुदूर किसी गांव में रहने वाले सामान्य शिक्षित ग्रामीण को दैनिक व्यवहारजन्य उदाहरणों से सदाचार, नैतिकता, आदर्श गुणों का परिचय करवाते हुए गुरु जाम्भोजी के देवत्व ओज में बैठ कर लिखी गई रचनाओं में डूबने का अवसर प्रदान करती है। सूक्ति सागर को पढ़ते हुए अनेक बार यह विचार मस्तिष्क में आया कि यह पुस्तक हर किसी बिश्नोई के घर में होनी चाहिए और सुबह हवन व सायंकालीन ज्योति दर्शन व विष्णु नाम स्मरण के समय पठन-पाठन का हिस्सा बननी चाहिए। बिश्नोई समाज में जाम्भाणी साहित्य के प्रति रूचि बढ़ाने में यह पुस्तक मील का पत्थर साबित हो सकती है। पुस्तक में जहां भी किसी भी जाम्भाणी संत व कवि के नाम का भी उल्लेख हुआ है वह 'जी' शब्द के साथ हुआ है जो श्री जम्भदास जी की संत कवियों के प्रति अनन्य श्रद्धा को दर्शाता है और पुस्तक को पढ़ने के उपरान्त यही श्रद्धा पाठक के मन में भी रूपांतरित हो जाती है जो श्री जम्भदास जी के उक्त संकलन प्रयास को सार्थक सिद्ध करती है।

मैं उम्मीद करता हूँ कि समाज के सभी वर्ग के लोग सूक्ति सागर पुस्तक का अध्ययन, मनन व चिंतन करेंगे और जाम्भाणी संत कवियों की वाणी पर शोध के लिए प्रेरित होंगे। सूक्ति सागर पुस्तक के लिए जाम्भाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर से संपर्क कर प्राप्त कर सकते हैं।

-**संदीप धारणियां** (एडवोकेट)
लिखमेंवाला, रायसिंह नगर
मो.: 9001803094

इतिहास के आइने में लोदीपुर धाम

लोदीपुर: बिश्नोई पंथ के आठ धाम हैं। प्रथमत: सात धाम राजस्थान में स्थित हैं। आठवें धाम के रूप में मान्यता लोदीपुर धाम की है, जो उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जनपद में चैत्र अमावस्या को लगने वाले विशाल मेले के लिए भी लोदीपुर धाम चर्चित है। कहा जाता है कि उक्त गांव की सुरजी देवी महिला बिश्नोई पंथ के प्रवर्तक श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान की भक्त थी। गुरु जी के दर्शन (बिश्नोई पंथ की आचार संहिता 29 नियम) से प्रभावित वह प्रतिवर्ष गुरु जी दर्शनार्थ पैदल राजस्थान जाया करती थी। यह कुछ दशकों तक चलता रहा। आधुनिक रेल व अन्य आवागमन के साधनों, संचार माध्यमों के अभाव में एक वर्ष बाद जब सुरजी देवी नहीं पहुंची तो गांव के वृद्ध कर्मठ ऊर्जावान सामाजिक कार्यकर्ता नरेश कुमार जाखड़ के अनुसार गुरु जी संवत् 1584 में लोदीपुर गांव में अपनी भक्त सुरजी देवी का हाल जानने पधारे थे। गुरुजी ने यहां खेजड़ली का पौधा लगाया जो मंदिर के पार्श्व में दक्षिण-पश्चिम भाग में है। यहां श्रद्धालुओं की अटूट श्रद्धा, संकल्प (मनौती) का जीवंत प्रमाण है तथा मंदिर के गर्भगृह में गुरु जी के पदचिह्न व शिलालेख विराजमान हैं।

नरेश कुमार जी का मानना है कि तब प्रतिवर्ष चैत्र अमावस्या को मेले का आयोजन वर्तमान मेला 493वें 1 अप्रैल 2022 को गौरव यात्रा को पूरा कर रहा है। सुरजी देवी के परिजन के सवाल पर उन्होंने बताया कि मंदिर प्रबंध कमेटी के गहन प्रयासों के बावजूद कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है।

उल्लेखनीय है कि मंदिर में नित्य प्रात: सबदवाणी का पाठ होता है तथा अखण्ड ज्योति प्रकाशमान है। प्रत्येक अमावस्या को मंदिर परिसर में गांव व दूर-दराज से सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालु हवन में भाग लेकर आहुति देते हैं। इस धार्मिक पारम्परिक अनुसंधान को स्वामी शरणानन्द व राजेश्वरानंद पूरी निष्ठा से निभा रहे हैं। गुरुजी द्वारा रोपित खेजड़ली की टहनी-तने पर श्रद्धालु अपनी अव्यक्त संकल्प के लिए धागा बांधना नहीं भूलते हैं। बताते हैं कि अगले वर्ष संकल्प पूरा होने पर बांधी गांठ को खोला जाता है।

वर्तमान मंदिर के निर्माण की पृष्ठभूमि में कांठ स्थित पूर्वी रियासत के स्वामी चौ. रामकुमार सिंह सुपुत्र श्री शेर सिंह ने सन् 1898 से सन् 1903 तक इसे पूरा करवाया था। गौरतलब है कि इस महान कार्य की उपलब्धि की गूंज प्रमाण गुमनामी की चादर ओढ़े है। कहीं कोई नाम पट्टिका, शिलालेख तक नहीं है। वर्तमान मंदिर की मौलिकता, प्रामाणिकता बनी है। मेले में प्रतिवर्ष बढ़ती श्रद्धालुओं की भीड़ व आधुनिक स्वरूप प्रदान करने के दृष्टिगत चारों ओर स्तम्भ स्थापित कर विशाल मंदिर बनाने की महती व चुनौतीपूर्ण कार्य योजना की आधारशिला रखी गई है। आगामी दो वर्षों में करीब 3 करोड़ व्यय कर धाम की श्रेष्ठता व भव्यता का लक्ष्य पूरा करना है।

जाखड़, पंवार, पड़ियाल, कालीराणा गोत्र के परिवार ही मुख्यत: निवास करते हैं। मेले के प्रति इनका उत्साह उत्सव जैसा प्रदर्शित होता है। होली के सम्पन्न होने से इनके घरों की साज-सज्जा, पुताई का कार्य जोरों पर होता है। मेले में आने वाले सगे-सम्बन्धियों व अन्य मेहमानों का दिल खोलकर स्वागत करते हैं। यद्यपि मंदिर में भण्डारे की व्यवस्था रहती है, इसके बावजूद मेजबान आगंतुकों की आवभगत की प्रतीक्षा में मशगूल रहते हैं। दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तराखण्ड व उत्तर प्रदेश के प्रमुख नगर व गांवों से हजारों श्रद्धालुओं की बढ़ती भीड़ के मद्देनजर मुख्य सड़क मार्ग रेलवे की सम्पत्ति होने के आधार पर खस्ताहाल है। उत्तर से मुख्यत: सम्पर्क मार्ग होने के कारण रेलवे लाइन पर ओवरफुट ब्रिज की बड़ी दरकार है। यद्यपि मेले पर रेलवे विभाग दो दिन मेल एक्सप्रेस ट्रेनों का ठहराव रखता है। सड़क मार्ग से आने वालों की सुविधा हेतु नियमित टैंपो, बस संचालन व गड्ढामुक्त सड़क के लिए मंदिर प्रबंध समिति को गंभीर व नियमित प्रयास करने की जरूरत है।

आजादी के बाद ग्राम स्वराज/ग्रामीण पंचायत व्यवस्था के तहत लोदीपुर गांव के स्व. मधुराज सिंह ग्राम प्रधान बने थे। बिश्नोई समाज ने मंदिर के बेहतर प्रबंध के लिए प्रथम मंदिर प्रधान बनाया था। इस कड़ी में बाबू सिंह, ओमराज सिंह जाखड़, सतराज सिंह, सुखबीर सिंह, नरेश कुमार, वेद प्रकाश, अजय बिश्नोई, विनोद राहड़, डॉ. हरिकृष्ण ने लगभग तीन वर्षों के कार्यकाल में अपनी भूमिका में मंदिर की उन्नति व विकास को आगे बढ़ाया। वर्तमान प्रबंध कमेटी विनय बिश्नोई के नेतृत्व में 27 सदस्ययी बनी समिति ने श्री गुरु जम्भेश्वर धाम बिश्नोई

मंदिर, लोदीपुर के नाम से पंजीकरण करवाया है। 3 वर्षों की अवधि को पांच वर्ष कराकर अनूठी पहल की है।

अध्यक्ष विनय बिश्नोई ने बताया कि मंदिर का सौंदर्यकरण, जीर्णोद्धार कार्य की आधारशिला रखी गई है। इसे समाज के सहयोग से आगामी खर्च के 3 करोड़ की कार्य योजना को पूरा करना बड़ी चुनौती है। करीब 30 वर्ष पहले बिश्नोई समाज को पहचान देने वाले बिश्नोई रत्न चौ. भजनलाल जी एक लाख की धनराशि देकर क्षेत्र व समाज का मान बढ़ाया था जिसे उनके सुपुत्र कुलदीप बिश्नोई बीते करीब 12 वर्ष पहले 5 लाख दान राशि से मंदिर प्रांगण में शौचालय आदि का निर्माण करवाया गया है। बीते वर्ष उत्तर प्रदेश के यशस्वीपुर योगी आदित्य नाथ ने क्षेत्रीय नगर विधायक श्री रितेश गुप्ता के आग्रह पर 59 लाख रुपये प्रदेश के पर्यटन, संस्कृति व धार्मिक स्थलों को संवारने हेतु प्रदान किए थे। करीब 50 लाख की धनराशि खर्च कर विशाल हाल व चारदीवारी का निर्माण कार्य अन्तिम स्तर पर है। लोदीपुर धाम के प्रति श्रद्धा, आस्था की भावना की पराकाष्ठा यह है कि श्रद्धालु दान देने में अग्रणी रहते हैं। ओमराज सिंह जाखड़ ने 2 बीघा जमीन दान की अपनी दानशीलता का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया व बताया जाता है कि विगत जमीन की वर्तमान समय में कीमत करीब 30 लाख रुपये है। गुरुजी व धाम के प्रति अटूट, अद्भुत, अकल्पनीय श्रद्धा का विभिन्न रूपों, दशा, भावों में देखा जा सकता है।

ऐतिहासिक व हिंदु कालगणना के अनुसार वि.सं. के नव संवतसर के प्रथम दिवस के रूप में वर्ष का प्रारम्भ होता है। इस पुनीत अवसर पर हिन्दु समाज की अनेक जातियां मात्र पारंपरिक रूप से आर.एस.एस. के निर्देशन में औपचारिक वंदना करती है जबकि बिश्नोई समाज इस दिन के महत्व व गरिमा को व्रत रखकर विशाल मांगलिक आयोजन को उत्सव पूर्व सामूहिक यज्ञ, संकल्प के रूप में मनाता है। गुरु जम्भेश्वर जी के 29 नियमों में सूत्रबद्ध पवित्र जीवनशैली, पेड़ों-जीवों के प्रति दया, संवेदना का संदेश हमें बेहतर मानव बनने का मार्ग प्रस्तुत करता है। आवश्यकता है अपने धार्मिक अनुष्ठान (मेला) समाज, परिवारों को स्थापित आदर्शों के पालन में आगे बढ़ना है। यही मेले की सार्थकता है।

-विश्वबंधु बिश्नोई
लोदीपुर, मुरादाबाद, उ.प्र.
मो. 9411970692

सौ साल दा हाल

सौ बर्षा नू सिर पर आके मारू मौत वजाया ई
लौह कलम तो लीखा होया धुर दरगाह आया ई
आन जमा जमदूता अंत समय दिखलायो ई
धोबी वांग पटढे आन जमा पटकाया ई
नाल दुखा: दी ईकठी किती छड गया दौलत माया ई
मौत मुकद्मा सिर पर आया वर दो बन चला ई
मुलक मुसाफिरखाने विचो विस्तर झाड़ उठाया ई
दौलत माल गरीबा वाला दुनिया छाड सिधाया ई
साख सज्जन दुनियां दे लौका रल मिल भाईया नहलाया ई
पकड़ उतारे वस्त्र सारे कफल चिट्ठा पाया ई
सिढ़ी ते ऊपर पाके चौह जनया चाया ई
राम भूमि मेले जाकर मिट्टी अंदर दबाया ई
राम नाम दा सत बोल झगड़ा मूल मुकाया ई
खाक विचो उपजया बूत खाकी अन्दर खाक समाया ई
दैयासिंह जंगला विच वासा दुनिया छोड़ सिधाया ई
सच्ची गल मै आख सुनावदा हा सुनोला के ठीक ख्याल भाई
कोई जीवया जग ते बरस चोद कोई जिवया सैंकड़े साल भाई
कोई हो ब्रध सफेद मरया कोई लंघ गया कालड़े बाल भाई
को सत्तर साल दा हो मरया कोई गरनभ अन्दर दिता गाल भाई
किसे पुरष नू सठवे साल अन्दर देखो ले गया पूरख अकाल भाई
कोई पुरष 50वें साल अन्दर छड़ तर गया सैंकड़े माल भाई
कोई पुरष नू 40वें साल अन्दर पाया तकदीर ने जाल भाई
कोई पुरष पचीवें साल अन्दर सिर ते आ गया अजल भूचाल भाई
कोई पुरष ते 21 साल अन्दर आन तकदीर ने पाया जाल भाई
कोई पुरष ताऊन दे नाल मरया किसे पुरष नू मार गई डाल भाई
अगे हो दिया सी बहुत उमरा पढ़ो अगले जुगां दा हाल भाई
कलयूग सैकड़े साल दी उम्र कहंदे ये है वेद पुराणां दी चाल भाई
तां मैं सैकड़े साल दा ब्यान किता आया बीच गरीब दे ख्याल भाई
दया सिंह है आखर नूं गल मुरदी सबनूं खां चदरा काल भाई।

-भूराराम भाम्भू
गांव लखुआना, पोस्ट मोजगढ़,
तह. मंडी डबवाली, जिला सिरसा
मो.: 9466317104

उत्तम खेती (भाग–6) जैविक खेती–2

गतांक (i) से आगे ....

4) बीजोपचार–जड़ उपचार–मृदा उपचार :

बीजोपचार :– रोग रहित बीज तथा प्रतिरोधी प्रजातियों के प्रयोग बहुत लाभदायक होता है। जहरीली रासायनिक दवाइयों से बीजोपचार मिट्टी के जीवों को बहुत नुकसान पहुंचाते हैं। कई बार ऐसे उपचारित बीजों को खाकर मोर इत्यादि पक्षी भी मर जाते हैं। उपरोक्त जैव उर्वरकों (राइजोबियम/एजेटोबेक्टर + पी.एस.बी.) की 200 ग्रा. मात्रा को आधा लीटर पानी में घोलें, फिर इसे 10–15 किलो बीज में हाथों से अच्छे से मिलाएं ताकि जैव उर्वरक बीजों के अच्छे से चिपक जाए। इन उपचारित बीजों को छाया में सुखाकर तुरंत बुआई कर दें। हल्दी पाउडर को गौ मूत्र मिलाकर भी बीजोपचार किया जा सकता है। बीजामृत से बीजों को उपचारित करना बहुत लोकप्रिय है। बीजामृत बनाने के लिये आधा किलो गोबर+आधा लिटर गौमूत्र+आधा लिटर गाय का दूध+ 25 ग्राम चुना, 10 लिटर पानी में मिलाकर रात भर रखते है और सुबह इससे बीजों को उपचारित करते हैं। ट्राईकोडर्मा विरिडी (4 ग्राम प्रति किलो बीज) या स्युडोमोनास (100 ग्राम प्रति किलो बीज) से भी बीज उपचारित किये जाते हैं।

जड़ उपचार:– चार किलो जैव उर्वरक को 20–25 लीटर पानी में मिलाएं और रुपाई वाली पौध को इसमें आधा घण्टा भिगोकर, छाया में रखकर तुरंत रुपाई कर दें।

मृदा उपचार:– 20 किलो मिट्टी और 20 किलो कम्पोस्ट लेकर उसमें 2 किलो जैव उर्वरक मिलाएं और एक एकड़ जमीन में बुआई से पहले या बुआई के समय ही छिड़क दें। इसे बुआई के समय खुड़ों में भी डाल सकते हैं।

5) बहु फसल प्रणाली और फसल चक्र : जैविक खेती में कई तरह की फसलें उगाई जानी चाहिए जिनमें एक फसल दलहनी होनी चाहिए। बार बार एक ही तरह की फसल उगाने की बजाय फसल चक्र अपनाना चाहिए, ताकि मिट्टी में पोषक तत्वों की उपलब्धता बनी रहे। हर उच्च पोषण वाली फसल से पहले और बाद में दलहनी फसल अवश्य लगानी चाहिए जैसे कि चना, ग्वार, मूंग, इत्यादि। जैव विविधता नाशी जीव प्रबंधन का मुख्य अंग है इसलिये खेत में घर में उपयोग होने वाली सब्जियां और गैंदे के फूल अवश्य लगाना चाहिए। जमीन के ऊपर की फसलों के साथ–साथ बीच में जमीन के अंदर लगने वाली फसलों को भी लगाना चाहिए जैसे कि प्याज, लहसुन, अदरक, हल्दी, आलू, शकरगन्दी, मूली, गाजर, शलगम, चकुंदर इत्यादि। उसी जमीन में कई स्तर पर (सबसे ऊपर, ऊपर, मध्य में, नीचे, जमीन के नीचे) फसलें लेने से उपज और आमदनी बढ़ती हैं।

6) समृद्ध तथा जीवंत मिट्टी : मिट्टी को जीवित, सांस लेने वाली और मां माना जाता है। क्योंकि यह असंख्य जीवों, वनस्पति को जीवन, भरण–पोषण और सरंक्षण करती है। उपजाऊ, समृद्ध, जीवंत मिट्टी में जैविक कार्बन एक से दो प्रतिशत के बीच में अवश्य होना चाहिए जो कि सूक्ष्म जीवों का भोजन होता है। इसमें सूक्ष्म वनस्पति और जीवों के लिये हर समय पर्याप्त सूखा, अर्ध अपघटित, पूर्ण अपघटित जैविक पदार्थ और नमी रहनी चाहिए। मिट्टी में सूक्ष्म जीवाणुओं (बैक्टिरिया, फंफूद, एकटोनॉमाईरिस) की पर्याप्त मात्रा होनी चाहिए। मिट्टी में केंचुए भी अवश्य होने चाहिए। मिट्टी पोली (ह्यूमस) होनी चाहिए ताकि इंसमें हवा आ जा सके और मिट्टी में रहने वाले जीव, जीवाणु सांस ले सके। मिट्टी की उपजाऊ शक्ति उसमें मौजूद पोषक तत्वों, जैविक कार्बन, जीवाणुओं, हवा और नमी की वजह से ही होती है।

7) कीट नियंत्रण: रासायनिक कीटनाशकों से किसानों और आसपास के लोगों के स्वास्थ्य और पर्यावरण को भारी नुकसान पहुंचता है। इनसे अनेकों लाभदायक जीवों और कीटों की मृत्यु हो जाती है। रासायनिक कीटनाशक पीने से किसानों और उनके परिजनों की मृत्यु के आंकड़े बहुत डरावने है। चूंकि जैविक खेती में रायायनिक कीटनाशकों का प्रयोग नहीं किया जाता है, इसलिये अन्य जैविक और अन्य तरीकों से कीट नियंत्रण किया जाता है, जैसे कि–

- **वनस्पति पत्ते, नीम इत्यादि**– नीमास्त्र (रस चूसने वाले कीट, छोटी सुंडियों, इल्लियों के लिये) के लिए 5 किलोग्राम नीम की पत्तियां और छोटी हरी टहनियां, 5 कि. ग्रा. निम्बोली, 5 लीटर गोमूत्र, 1 कि.ग्रा. गाय का गोबर लेकर सर्वप्रथम प्लास्टिक के बर्तन पर 5 कि.ग्रा. नीम की पत्तियों की चटनी, और 5 कि.ग्रा. निम्बोली पीस व कूट कर डालें एवं 5 लीटर गोमूत्र व 1 कि.ग्रा. गाय का गोबर

डालें। इन सभी सामग्री को डंडे से चलाकर जालीदार कपड़े से ढक दें। सुबह शाम इसे डंडे से हिलाएं। यह 48 घंटे में तैयार हो जाएगा। 6 माह तक इसे उपयोग में लाया जा सकता है। इसे छाया में ही रखें। गौमूत्र को प्लास्टिक के बर्तन में ही रखें। इस तैयार नीमास्त्र को छानकर 100 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे मशीन से फसलों पर छिड़काव करें।

ब्रह्मास्त्र (अन्य कीट, बड़ी सुंडियों, इल्लियों के लिये) : 10 लीटर गौमूत्र, 3 किलो नीम के पत्तों की चटनी, दो-दो किलो धतूरा, अरंडी, कनेर, बेलपत्र या करंज के पतों (पांच प्रकार) की चटनी को मिलाकर मिट्टी के बर्तन में डालकर आग पर उबालें। चार उबालों के बाद आग से उतारकर छाया में 48 घन्टों तक ठंडा होने के बाद कपड़े से छानकर मिट्टी के बर्तन में भंडारण कर लें। गौ मूत्र को धातु के बर्तन में ना रखें। एक एकड़ के लिये 100 लीटर पानी में 4 लीटर ब्रह्मास्त्र मिलाकर स्प्रे मशीन से छिड़काव करें। नीमास्त्र या ब्रह्मास्त्र का प्रयोग सप्ताह में एक बार अवश्य करें।

नीम पत्ती का घोल : नीम की 15 किलो पत्तियों को 200 लीटर पानी में 4 दिनों तक भीगोकर रखें। पानी हरा पिला होने पर इसे छानकर एक एकड़ फसल पर छिड़कें। इंसमें आक, धतूरा, बेशर्म के पत्ते मिलाने से कीटनाशक की तीव्रता बढ़ जाती है।

लहसुन, हरी मिर्च, अदरक का घोल : आधा-आधा किलो लहसुन, तेज हरी मिर्च, अदरक लेकर, पीसकर 200 लीटर पानी में घोलकर फसलों पर छिड़काव करने से इल्ली, रसचुसक कीड़े नियंत्रित होते हैं।

● **गाय का मूत्र** – जितना पुराना गाय का मूत्र होगा, उतना ही अधिक प्रभावी होगा। कांच की शीशी में गौमूत्र भरकर धूप में रख लें। 1लीटर पानी में 15 मिली गौमूत्र को मिलाकर बिजाई के 15 दिन बाद 10 दिन के अंतराल पर फसलों पर छिड़कने से पौधों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है, रोग कम लगते हैं। गाय का मूत्र नीमास्त्र, ब्रह्मास्त्र इत्यादि कीटनाशक बनाने में भी काम आता है। मूत्र में नाइट्रोजन की मात्रा अधिक होने से यह जैविक उर्वरक का कार्य भी करता है।

● **खट्टी छाछ** – गाय की छाछ 5 लिटर लेकर, उसमें 2. 5 किलो नीम की पत्ती मिलाकर, बड़े मटके में 2 सप्ताह तक सड़ायें। फिर इसे 150 लीटर पानी में मिलाकर सप्ताह में एक बार छिड़काव करें।

2 किलो नीम की निम्बोली लेकर बारीक पीस लें, उसमें 2 लीटर गाय का ताजा मूत्र मिला और 10 ली. छाछ मिलाकर 4 दिनों तक रख लें। उसके बाद इसे 200 लीटर पानी में मिलाकर फसलों पर छिड़काव करें।

मिट्टी के मटके में छाछ लेकर मिट्टी में दबा दें, 45 दिनों के बाद 15 मिली सड़ी छाछ को 15 ली. पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

● **चावल का सड़ा हुआ पानी**- चावल को 5 लीटर पानी में भिगोकर, हाथों से मसलकर, धोकर चावल को काम में लेकर बचे हुए पानी को लेकर या फिर 5 लीटर पानी में 100 ग्राम उबले चावल मिलाकर उसमें 100 ग्राम दही और 200 ग्राम गुड़ और 50 ग्राम खमीर मिलाकर, चौड़े मुंह वाले बर्तन में डालकर ढककर छाया में रख देते है। रोजाना इस घोल को हिला देते है। 7 दिनों में ही इसमें लैक्टोबैसिलस जीवाणु भर जाते जाते है जिससे चावल का पानी मटमैले रंग का हो जाता है और उसमें खटास और बदबू पैदा हो जाती है। इस घोल को छानकर, उतना ही पानी मिलाकर फसलों पर छिड़का जा सकता है।

● **मित्र कीट** – मित्र कीट अधिकांशतः मांसाहारी और परजीवी होते हैं, जो शत्रु कीटों को नष्ट कर देते है, जैसे कि ततैया, लेडिबग, शिकारी मैंटिस, मकड़ी इत्यादि। शत्रु कीट अधिकांशतः शाकाहारी होते है जो हमारी फसलों को खाकर नष्ट कर देते है जैसे कि एफिड, सफेद मक्खी, तैला, स्पाइडर माईट, थ्रिप, मिलीबग, सुंडी, लीफमाइनर इत्यादि। रायायनिक कीटनाशकों से मित्र कीट मर जाते है, जिससे शत्रु कीटों की संख्या बहुत बढ़ जाती है। जैविक कीटनाशकों के प्रयोग से शत्रु कीट मरते है, मित्र कीट नहीं।

● **ट्रैप-पाश-**

साधारण लाइट ट्रैप : इसमें बिजली या सोलर से चलने वाला 100-200 वाट का बल्ब लगा होता है और नीचे एक डिब्बा लगा होता है जिसमें एक कपड़ा लगा होता है। बल्ब को शाम को 7 से 9 बजे तक जलाकर रखा जाता है। रोशनी से आकर्षित होकर हानिकारक कीट बल्ब के पास आते है और नीचे डिब्बे में कैद होकर मर जाते हैं।

फेरोमेन ट्रैप: इसे गन्धपाश भी कहते है। इसमें प्लास्टिक के एक डिब्बा होता है जिसमे गंधयुक्त ल्योर लगाकर टांग देते है। नर कीट इस मादा गंध से आकर्षित होकर इस ट्रैप में फंस जाता है, जिससे वह मादा कीट से अंडे उत्पन्न नहीं कर पाता है। इन ट्रैप्स से यह भी पता चल जाता है कि फसल में कौन-कौन से कीट मौजूद है।

पीली चिपचिपी ट्रैप: एक थाली लेकर उसकी ऊपरी सतह पर पीले रंग का लैप लगाए, फिर उस पर चिपचिपा गोंद या अरंडी का तेल लगाएं और जगह जगह पर रख दें। पीले रंग से आकर्षित होकर कीट इस पर चिपककर मर जाते हैं।

- **जैविक कीटनाशक–**

ट्राईकोडर्मा : यह एक जैविक फम्फुदनाशक है जो पौधों में मृदा और बीजजनित बीमारियों को नियंत्रित करता है। बीज उपचार में 5 ग्राम ट्राईकोडर्मा को एक किलो बीज में मिलाकर प्रयोग करें। मृदा उपचार के लिये 1 किलो ट्राईकोडर्मा को 25 किलो सड़ी हुई खाद में मिलाकर अंतिम बिखेरनी के समय प्रयोग करें।

200 ग्राम ट्राईकोडर्मा को 20 लीटर पानी में मिलाकर रोपित करने वाली फसलों की पौध की जड़ों या कलमों को 10 मिनिट तक भिगोकर उपचारित करें।

3 ग्राम ट्राईकोडर्मा को एक लीटर पानी में घोलकर खड़ी फसलों पर 10 दिनों के अंतराल से 4 बार छिड़काव करने से वायु जनित रोगों पर नियंत्रण होता है।

ट्राईकोग्रामा : यह गहरे रंग का छोटा ततैया कीट होता है जो अनेकों हानिकारक कीटों के अंडों को खा जाता है। ट्राईकोग्रामा कार्ड पर इसके अंडे चिपके हुए होते है, जिन्हें छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर पत्तियों के साथ जोड़कर खेत में कई जगहों पर 10-15 दिनों के अंतराल पर 3-4 बार लगा दिया जाता है। इन अंडों से मित्र कीट ततैया निकलते है जो हानिकारक कीटों के अंडों को चटकर जाते हैं। ट्राईकोग्रामा कार्ड को 15 दिनों तक फ्रिज में 5-10 डिग्री तापमान पर रखा जा सकता है।

एन.पी.वी. (न्यूक्लीयर पोली हैड्रोसिस वायरस): यह तरल जैविक कीटनाशक है जिसमे हरी सुंडी को नष्ट करने वाले वायरस कण होते है। सुंडियों द्वारा इसे खाये जाने पर वे नष्ट हो जाती है। एक मिली एनपीवी को 1 लिटर पानी में घोलकर, 100-200 मिली घोल को प्रति एकड़ 15 दिनों के अंतराल से 3 बार फसलों पर छिड़का जाता है।

- **सिरका और बायोएंजायम** – सिरके को पानी में मिलाकर कीटनाशक के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। इसमें थोड़ी-सी साबुन मिलाने से स्प्रे अच्छे से हो पाती है। कम पानी मिलाए इसे खरपतवार नाशक के रूप में भी प्रयोग किया जा सकता है।

पानी में निम्बूवर्गीय फलों के छिलकों (30%) और गुड़ (10%) को मिलाकर बनाये बायो एंजाइम को भी जैविक कीटनाशक के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। यह कीटनाशक और उर्वरक दोनों का कार्य करते हैं।

- **मल्चिंग-आच्छादन** – 'जैविक खेती में मल्चिंग (आच्छादन) का बहुत महत्व है। धरती माता को नंगा नहीं छोड़ा जाता है। फसलों के बीच में खाली जगह को भी जैविक मल्चिंग से ढक देना चाहिए जिसे आच्छादन कहते हैं। यह पत्तियों, फसल अवशेष, कम्पोस्ट इत्यादि से हो सकता है। मल्चिंग होने से जमीन और फसल कम पानी मांगती है क्योंकि मिट्टी में नमी बनी रहती है। खरपतवार पैदा नहीं होती है। नमी, छाया, अंधेरा होने से मिट्टी में जीवाणु अच्छे से पनपते हैं। मिट्टी का तापमान नियंत्रण में रहता है। मिट्टी की पी.एच. वेल्यू संतुलित रहती है। मिट्टी की उर्वरक शक्ति बढ़ती है।

- **प्रमाणीकरण**– राष्ट्रीय जैविक उत्पादन के अधीन वाणिज्य मंत्रालय ने निर्यात के उद्देश्य से जैविक खेती उन्नयन हेतु कार्य शुरू किया गया और इसके नियामक तंत्र की स्थापना की। इसके अंतर्गत जैविक कृषि कार्य हेतु मानक, प्रमाणीकरण की अधिकारिता तथा निरीक्षण संस्थानों के चयन व उनकी नियुक्ति हेतु दिशा-निर्देश जारी किए गए। यह कार्यक्रम वाणिज्य मंत्रालय के अधीन एक राष्ट्रीय प्राधिकरण समिति के तहत चलाया जा रहा है। कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) इसका सचिवालय है। इसके अंतर्गत 16 प्रमाणीकरण संस्थायें प्राधिकृत की जा चुकी है। यद्यपि इटोड राष्ट्रीय कार्यक्रम (NPOP) विदेश व्यापार विकास अधिनियम (FTDR) के अधीन मुख्यतया जैविक वस्तुओं के उत्पादन, नियमन तथा प्रमाणीकरण हेतु घोषित किया था लेकिन घरेलू नियमों के अभाव में उन्हीं नियमों को स्वेच्छा से घरेलू बाजार के लिये भी प्रयोग किया जा रहा है। प्रमाणीकरण एकल परियोजना और किसान समूह परियोजनाओं के रूप में होता है। प्रमाणीकरण की पूरी जानकारी APEDA की वेबसाइट www. apeda.com पर उपलब्ध है।

(साभार: राष्ट्रीय जैविक खेती संस्थान)

क्रमश:.... अगले अंक में

-आर.के. बिश्नोई
गांव -लाडाणा, तह.-सूरतगढ़,
जिला-श्री गंगानगर, मो.: 9899303026
E-mail: bishnoirk@gmail.com

करियर

12वीं नॉन मेडिकल से करने के बाद आर्किटेक्ट कैसे बने ?

जीवन को मूल्यवान बनाने, सत्कर्म कार्य हेतू सुदृढ़, सक्षम बनाने में, शिक्षा को दिए गए एक-एक अमूल्य पल हमारे जीवन के सर्वोत्तम पल होते हैं। शिक्षा प्राप्ति के लिए बेहतरीन पलों का चयन करने के सम्बन्ध में जानकारी व जागरूकता का प्रयास हम पिछले अंकों में कर रहे हैं। हम चर्चा कर रहे हैं कि 12वीं में नॉन मेडिकल पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए आर्किटेक्ट (वास्तुविद्) बनने का रास्ता क्या है? आर्किटेक्ट क्या है? इसके लिए क्या योग्यता चाहिए? कौन-सी संस्थाएं है? कौन-सी परीक्षा में शामिल होकर यह किया जा सकता है? इन प्रश्नों पर हम चर्चा करते हैं।

आर्किटेक्ट कौन होते हैं ?

हम अपने आसपास जितने शानदार भवन देखते हैं बड़ी-बड़ी इमारतें देखते हैं इनके ढांचागत निर्माण से लेकर रूप सज्जा तक के कार्य आर्किटेक्ट (वास्तुविद्) के होते हैं। इस प्रकार आर्किटेक्ट सिविल इंजीनियर और डिजाइन का सम्मिश्रण है। किसी भवन के ढांचे से लेकर संपूर्ण रूप से तैयार करने में आर्किटेक्ट की भूमिका रहती है। हमारे यहां भी विश्व की भांति वास्तुकला, शिल्प कला, निर्माण के हैरतअंगेज उदाहरण रहे हैं।

आर्किटेक्ट की शिक्षा: आर्किटेक्ट एक प्रोफेशनल डिग्री है। 12वीं के बाद या दसवीं के बाद पॉलिटेक्निक डिप्लोमा करने वाले विद्यार्थी के लिए प्रवेश के लिए उपलब्ध है। यह एक 5 वर्षीय है डिग्री है। भारत में इस डिग्री की शिक्षा के नियम, संबद्धता, स्टैंडर्डाइजेशन, रजिस्ट्रेशन आदि कार्य के लिए COA (काउंसिल ऑफ आर्किटेक्ट) को अधिकृत किया गया है। इसका गठन आर्किटेक्ट एक्ट 1972 के अंतर्गत किया गया है। यह शिक्षा मंत्रालय के अधीन कार्य करती है तथा वर्ष 2020 में इसे संशोधित कर एक मजबूत अधिनियम बनाकर इसकी शक्तियों में विस्तार करके एक शक्तिशाली संस्था बनाया गया है। किसी भी नए संस्थान का निर्माण, कोर्स की मान्यता, शिक्षा का वर्गीकरण और भारत में या विदेश में आर्किटेक्ट की डिग्री प्राप्त विद्यार्थी को काउंसिल ऑफ आर्किटेक्ट का रजिस्ट्रेशन करवाना अनिवार्य है। B. Arch. डिग्री में प्रवेश हेतू COA द्वारा NATA (नेशनल एप्टीट्यूड टेस्ट इन आर्किटेक्ट) परीक्षा का आयोजन भी किया जाता है। यह बात अभी बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण है कि भारत में आर्किटेक्ट की डिग्री में प्रवेश हेतू NATA की परीक्षा को अनिवार्य (नये अधिनियम से) किया जा चुका है। यह पिछले वर्ष से ही लागू है। पिछले वर्ष में जिन विद्यार्थियों ने केवल JEE मेन का दूसरा पेपर दिया था (पहले से चली आ रही है व्यवस्था के अनुसार) और NATA की परीक्षा में शामिल नहीं हुए थे उन्हें आर्किटेक्ट डिग्री में प्रवेश नहीं मिला था। वर्तमान छात्र ध्यान रखें की NTA ने 2022 में JEE मेन परीक्षा का जो नोटिफिकेशन दिया है उसने उसने पिछले वर्ष की भांति आर्किटेक्ट के लिए जो दूसरा प्रश्न पत्र भी रखा है इसकी वजह से कन्फ्यूजन की स्थिति बन सकती है। परंतु आपको नाटा की परीक्षा देनी है यह आपको समझ लेना चाहिए क्योंकि टेक्निकली लीगल है।

आर्किटेक्ट के भविष्य के कार्यक्षेत्र: डिग्री करने के बाद विद्यार्थी, घरों के, बड़ी इमारतों के निर्माण की विधा के विशेषज्ञ हो जाते हैं। परंतु B.Arch. (बैचलर ऑफ आर्किटेक्ट) की भांति रीजनल प्लैनिंग, इंटीरियर डिजाइन, लैंडस्केप आर्किटेक्ट जैसे अन्य बैचलर डिग्री भी होती है जिससे हम विभिन्न प्रकार के आयामों को हम समझ सकते हैं। इनसे जुड़ी M. Arch. (मास्टर ऑफ आर्किटेक्ट) में तो बहुत सारे विशेष विषयों की पढ़ाई होती है। B.Arch की पढ़ाई करने के बाद आप बड़ी-बड़ी कंपनियों में अनुभव प्राप्त कर सकते हैं और इसके बाद अपने से व्यवसायिक रूप से काम कर सकते हैं। डिग्री के बाद सरकारी नौकरी करने की इच्छुक विद्यार्थी को भी विभिन्न राज्य सरकारों, सार्वजनिक उपक्रमों, मिलिट्री, रेलवे आदि में भी अनेक मौके मिल जाते हैं। इस प्रकार आर्किटेक्ट की डिग्री प्राप्त विद्यार्थी के पास अवसरों की कोई कमी नहीं रहती। यह बहुत ही विस्तृत क्षेत्र है।

प्रवेश परीक्षाः NATA की परीक्षा के तकनीकी कानूनी पहलू पर चर्चा कर चुके हैं । इस परीक्षा में शामिल होने के लिए आयु सीमा का कोई अवरोध नहीं है। परीक्षा अंग्रेजी माध्यम से होती है, इसमें रिजनिंग, मैथ, फिजिक्स बिल्डिंग एनाटॉमी, इमेजिंग, ग्राफिक आदि के प्रश्न पूछे जाते हैं। 125 प्रश्नों यह परीक्षा 200 नंबर की होती है। विस्तृत रूप से देखें तो इसे दो भागों में बांट सकते हैं। पहला GA (जनरल एप्टीट्यूड) और दूसरा ड्राइंग। मैथ के 20 प्रश्न होंगे, प्रत्येक प्रश्न दो अंक का होगा। जनरल एप्टिट्यूड के 40 प्रश्न होंगे तथा ड्राइंग के 2 प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न 40 नंबर का होगा। ड्राइंग में लाइट, शैडो, कलर आदि का परीक्षण किया जाता है। योग्यता की बात करें तो विद्यार्थी 12 वीं में 50% अंकों के साथ PCM (फिजिक्स, केमिस्ट्री, मैथ) में पास होना चाहिए तथा दसवीं के बाद डिप्लोमा प्राप्त छात्र के लिए मैथेमेटिक्स पढ़ा होना अनिवार्य है। यह परीक्षा अखिल भारतीय स्तर पर 160 शहरों में आयोजित की जाती है।

प्रमुख संस्थानः आर्किटेक्ट कोर्स हेतु भारत में लगभग 881 संस्थान है। जिनमें से कुछ की चर्चा यहां कर पाना संभव है। प्रमुख संस्थानों में हम को हम तीन भागों में बांट सकते हैं IIT (इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी) और SPA (स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्ट), NIT और CFIs (सेंट्रल फंड इंस्टिट्यूट) और तीसरे प्राइवेट संस्थान। इनमें से हम कुछ के बारे में चर्चा करते हैं। IIT रुड़की और खड़कपुर भारत में सर्वश्रेष्ठ संस्थानों में प्रवेश हेतू JEE एडवांस परीक्षा में AAT (आर्किटेक्ट एप्टिट्यूड टेस्ट) से प्रवेश होता है। IIT रुड़की में 1956 से B.Arch की पढ़ाई हो रही है। यहां से मास्टर डिग्री और रिसर्च का कार्य सर्वश्रेष्ठ है। इस वर्ष के लिए रैंक की बात करें तो खड़कपुर में 8557 से शुरू होकर 17249 रैंक तक तथा IIT रुड़की में 10314 से शुरू होकर 15122 रैंक तक जनरल कैटेगरी के विद्यार्थी का प्रवेश रहा। इसी प्रकार IIT-BHU भी भारत के प्रमुख संस्थानों में शुमार है। यहां पर JEE एडवांस रैंक 17493 थे 19015 रैंक तक जनरल कैटेगरी में अंतिम राउंड तक प्रवेश रहा।

SPA (कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्ट) विजयवाड़ा, दिल्ली और भोपाल– इनमें से SPA दिल्ली भारत में आर्किटेक्ट के और प्लानिंग के सबसे पुराने संस्थानों में से है। यहां पर M.Arch (मास्टर ऑफ आर्किटेक्ट) में अर्बन डिजाइन, इंडस्ट्रियल डिजाइन, लैंडस्केप आर्किटेक्ट की पढ़ाई होती है। B. Planning में और M. Planning (इंटीग्रेटेड मास्टर ऑफ प्लानिंग) की पढ़ाई भी होती है। यदि हम JEE मेन पेपर के आधार पर प्रवेश की बात करें तो अंतिम राउंड तक है रैंक 3 से 252 तक प्रवेश हुए।

SPA, विजयवाड़ा का भारत के आर्किटेक्ट डिग्री संस्थानों में महत्वपूर्ण स्थान है। यह 2008 में स्थापित हुआ यहां पर मास्टर डिग्री में प्लानिंग, ट्रांसपोर्ट आर्किटेक्ट, एनवायरमेंट प्लानिंग, सस्टेनेबल आर्किटेक्चर में पढ़ाई होती है तथा अंडर ग्रेजुएशन में B.Arch, B. Planning के कार्यक्रम चलाए जाते हैं। सरकारी क्षेत्र में होने के कारण यहाँ की फीस बहुत कम रहती है। यदि प्रवेश के लिए वर्ष 2021 में रैंक की बात करें तो यह अंतिम राउंड तक 112 रैंक से 575 तक प्रवेश हुआ।

SPA भोपाल, राष्ट्रीय महत्व के इस संस्थान का निर्माण 2008 में किया गया। अंडर ग्रेजुएशन में B. Arch, B. Planing की पढ़ाई होती है। प्रवेश रैंक के अनुसार यहां पर जनरल कैटेगरी में अंतिम राउंड तक 41 रैंक से लेकर 442 रैंक तक प्रवेश हुआ।

अन्य प्रमुख संस्थानः सर जेजे कॉलेज, मुंबई, भारत में IIT के बाद सर्वाधिक प्रतिष्ठित संस्थानों में मुंबई का SIR JJ College आता है। यहां पर एडमिशन के लिए NATA और 12वीं के अंकों को मिलाकर मेरिट बनती है। यहाँ पर 12वीं के नंबर भी महत्वपूर्ण रहते हैं। यहां पर महाराष्ट्र स्टेट एडमिशन काउंसिल के JAC (ज्वाइंट ऐडमिशन काउंसलिंग) द्वारा एडमिशन होते हैं। विद्यार्थियों को MAH (CET) महाराष्ट्र कॉमन एंट्रेंस टेस्ट पर रजिस्ट्रेशन करवाना होता है। पिछले वर्ष की मेरिट के अनुसार बात करें तो ऑल इंडिया रैंक में 104 अंक तक प्रवेश मिला था। यदि हम NATA में 120–130 अंक का स्कोर करते हैं तो अच्छे कॉलेज में प्रवेश संभव है।

CCA (चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्किटेक्ट) वर्ष 1961 में स्थापित यह संस्थान उत्तर भारत का प्रमुख

संस्थान है। सीटें काफी कम संख्या में है इसलिए मेहनती विद्यार्थी को अच्छे प्रयास करने पड़ते हैं।

CEPT यूनिवर्सिटी, गांधीनगर यहां पर B.Arch के साथ-साथ B.Arch (मेट्रो कंस्ट्रक्शन टेक्नोलॉजी) बेचलर ऑफ प्लानिंग के कोर्स में भी एडमिशन होता है। यहां पर एडमिशन के लिए ऐडमिशन कमिटी फॉर प्रोफेशनल स्टडी, गुजरात के पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन करना होता है। इस प्रकार हम अन्य संस्थानों की बात करें तो BITs पिलानी, जाधवपुर यूनिवर्सिटी, VIT वैल्लोर इंद्रप्रस्थ यूनिवर्सिटी दिल्ली, JNIAS (जवाहरलाल नेहरू इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडी) & SPA, हैदराबाद, सिंबोसिस पुणे, UPES देहरादून, MSU बड़ौदा प्रमुख है और NIT के लेवल पर बात करें तो NIT तिरुचिरापल्ली, VNIT नागपुर, NIT हमीरपुर, MNIT जयपुर, NIT राउरकेला, NIT रायपुर, NIT पटना, आदि प्रमुख हैं। उपरोक्त चर्चा में मैंने बहुत सारे संस्थानों बारे में चर्चा की यह सभी श्रेष्ठ वातावरण उपलब्ध करवाते हैं। विद्यार्थी यह समझ ले कि इन संस्थानों में प्रवेश के लिए अतिरिक्त ताकत लगाकर मेहनत करनी होगी और अपने लिए एक स्थान बनाना होगा। सभी विद्यार्थियों से, उनके माता-पिता से भी यह कहना चाहता हूं कि आर्किटेक्ट के प्रोफेशन में आप बेहतरीन भविष्य बना सकते हैं इसलिए दसवीं के बाद से ही इस कोर्स की प्रवेश परीक्षा की तैयारी आरंभ कर दे तो 2 से 3 साल में आप बेहतरीन नतीजे ला सकते हैं। किसी भी संस्थान की बजाए एक बेहतर संस्थान के लिए यदि 1 वर्ष अतिरिक्त मेहनत भी करनी पड़े तो वह भी सही कदम होगा।

उपरोक्त चर्चा में हमने आर्किटेक्ट के विषय में जाना, इसी से एक मिलता-जुलता कैरियर डिजाइन में भी बनाया जा सकता है जिसके बारे में हम आगामी अंक में चर्चा करेंगे। फैशन डिजाइनिंग, ज्वैलरी डिजाइनिंग, टैक्सटाइल डिजाइनिंग के विभिन्न आयामों में हम क्या पढ़ सकते हैं? कौन-सी प्रवेश परीक्षाएं हैं? कौन-कौन से संस्थान है? इस पर चर्चा हम आगामी अंक में करेंगे।

उपरोक्त विषय पर मैंने अपनी क्षमता अनुसार जानकारी वह जागरूकता लाने का प्रयास किया यदि किसी बंधु का किसी प्रकार की कोई सुझाव या शंकाएं हैं तो नीचे उपलब्ध करवाए गए संपर्कों के माध्यम से संपर्क कर सकते हैं। मुझे आपकी किसी भी जानकारी को बढ़ाने में खुशी महसूस होगी जो कि मेरा धार्मिक दायित्व भी है।

आर्किटेक्ट इंजीनियरिंग कोर्स के लिए विभिन्न संस्थान एवं बेबसाइट

- The Council of Architecture (CoA)
  https://www.coa.gov.in/
- NATA (National Aptitude Test in Architecture)
  www.nata.in
- Indian Institute of Technology, Roorkee
  https://ar.iitr.ac.in/
- Department of Architecture, IIT Kharagpur
  http://www.iitkgp.ac.in/
- Indian Institute of Technology (BHU)
  https://iitbhu.ac.in/dept/apd
- School of Planning and Architecture, New Delhi
  http://www.spa.ac.in/
- School of planning and Architecture, Vijayawada
  https://www.spav.ac.in/
- School of planning and Architecture, Bhopal
  http://spabhopal.ac.in/
- BIT, Mesra, Ranchi
  https://www.bitmesra.ac.in/
- Chandigarh College of Architecture, Chandigarh
  http://cca.edu.in/
- Centre for Environmental Planning and Technology University & https://cept.ac.in/
- National Institute of Technology, Tiruchirappalli
  https://www.nitt.edu/
- JNIAS School of Planning and Architecture
  http://www.jniasspa.org/
- Visvesvaraya National Institute of Technology
  https://vnit.ac.in/
- National Institute of Technology Rourkela
  https://www.nitrkl.ac.in/
- National Institute of India, Patna
  http://www.nitp.ac.in

Institution Ranking Body

- National Institutional Ranking Framework
  https://www.nirfindia.org/

-प्रवीण धारणीया
अध्यक्ष, अ.भा. बिश्नोई युवा संगठन
मो.: 9728400029
E-mail: parveendharnia29@rediffmail.com

सामाजिक हलचल

लालासर साथरी में 5वें युवा सम्मेलन का आयोजन

नोखाः गुरु जम्भेश्वर भगवान् की निर्वाण स्थली लालासर साथरी में महंत स्वामी सचिदानंद आचार्य के संयोजन व स्वामी राजेन्द्रानन्द जी हरिद्वार के पावन सान्निध्य में दिनांक 25 फरवरी से 1 मार्च तक जाम्भाणी कथा का आयोजन किया गया। कथा में सम्पूर्ण भारतवर्ष से बिश्नोई समाज ने भाग लिया तथा मेले के अवसर पर आयोजित इस ज्ञान यज्ञ में आहुति भेंट की।

कथावाचक स्वामी राजेन्द्रानन्द जी ने सबदवाणी के शब्दों व जाम्भाणी साहित्य के प्रसंगों से 5 दिनों तक अविरल ज्ञान की धारा प्रवाहित की। समाज के प्रमुख धामों से पधारे संतों स्वामी रामानंद जी, स्वामी भगवान् प्रकाश जी, स्वामी मनोहर दास जी मेहराणा धोरा, स्वामी कानपुरी जी गूलर धाम रोटू, स्वामी अभयदास तखतगढ़ ने अपने प्रवचनों व भजनों से धर्म प्रचार किया। 28 फरवरी को शिवरात्रि के अवसर पर विशाल जागरण का आयोजन किया गया। समाज के भामाशाहों व सामाजिक बंधुओं, राजनीतिक व्यक्तित्व व साहित्य प्रेमियों ने इस अवसर पर तन-मन-धन से सहयोग किया। 1 मार्च को 5वें युवा सम्मलेन का आयोजन किया गया। युवा सम्मलेन में भारतवर्ष से पधारे युवा प्रतिभागियों ने बिश्नोई समाज में शिक्षा के प्रचार प्रसार व मेहनत के बल पर सफलता अर्जित करने की आवश्यकता पर बल दिया। टीम आगाज के श्री अभिषेक बिश्नोई युवा एंटरप्रेन्योर ने अपनी जन्मभूमि के प्रति कर्ज चुकाने का आह्वान करते हुए गांवों की दशा व दिशा सुधारने पर जोर दिया। अभिषेक बिश्नोई गांव भोजासर में लाइब्रेरी की स्थापना व कोरोना काल में ऑक्सीजन की उपलब्धता को लेकर चर्चा में आये थे। युवा लेखक कैलाश बिश्नोई ने आपसी संवाद के माध्यम से सफलता अर्जित करने व नेट जेआरएफ की परीक्षा में सफलता के सूत्र बताए। पंजाब के प्रथम पी.सी.एस. अधिकारी श्री राकेश बिश्नोई ने अपनी पारिवारिक परिस्थितियां प्रतिकूल होते हुए भी उन्हें अनुकूल बनाकर संघर्ष के बल पर स्वयं के जॉब लगने की प्रेरक कहानी सभी से साझा की। ज्योति बिश्नोई नीमगांव मध्यप्रदेश से आकर अपने अनुभव साझा किये। ज्योति बिश्नोई एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर है और 12वीं क्लास में स्टेट में प्रथम स्थान प्राप्त कर चुकी हैं। ज्योति ने अपने परिवार के सहयोग, महिलाओं के प्रति समाज के नजरिये और शिक्षा के माध्यम से आमूलचूल बदलाव की कहानी साझा की। श्री रमेश बाबल, दुबई से युवा सम्मलेन में पधारे तथा सुदूर विदेश में रहते हुए अपनी मिटटी से जुड़ाव के अनुभव साझा किये। रमेश बाबल अपने गाँव फिटकासनी में सामाजिक कार्यों व कोरोना काल में अस्पताल के जीर्णोद्धार को लेकर काफी सुर्खियों में रहे थे और राजस्थान पत्रिका ने इन्हे अपने फ्रंट पेज पर विस्तार से जगह दी थी। रमेश बाबल ने अपने जीवन के हर लाभ का दसवां हिस्सा सामजिक कार्यों में लगाने का आह्वान किया। पर्वतारोही रोहिताश खिलेरी ने माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने के अपने अनुभव साझा किये तथा इस अवसर पर उन्हें जाम्भाणी ध्वज देकर सम्मानित किया जिसे वे आगामी अभियान में

माउंट एवरेस्ट पर फहरा सकें। आर.जे.एस. यश बिश्नोई ने अपनी उपलब्धियों के पीछे परिवार के महत्वपूर्ण सहयोग का वर्णन किया और अपनी शिक्षा व आर.जे.एस. में चयन के अनुभव साझा किये। आर.ए.एस. निरमा बिश्नोई ने अपने जीवन की अनेक प्रतिकूल परिस्थितियों पर विजय पाते हुए आर. ए.एस. बनने की कहानी सभी से साझा की। अपने पति व माता के निधन के बावजूद शिक्षा के माध्यम से अपना जीवन बदलने की कहानी से सभी को प्रेरित किया।

सम्मलेन के विशिष्ट अतिथि श्री देवेंद्र बुड़िया अध्यक्ष अ.भा. बिश्नोई महासभा ने साथरी प्रांगण में स्थायी शेड बनाने का वायदा किया। सम्मलेन के मुख्य अतिथि केंद्रीय जल शक्ति मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने स्वयं के रोम रोम को बिश्नोई समाज का ऋणी बताया। श्री शेखावत ने बिश्नोई समाज को केंद्र में ओबीसी आरक्षण दिलाने का ठोस आश्वासन दिया व साथ ही नवीन संसद भवन में माता अमृता बिश्नोई का चित्र लगाने का भरोसा दिलाया। श्री शेखावत जी ने साथरी प्रांगण में वर्षा के जल संग्रहण हेतु केंद्र सरकार से सहायता का भरोसा दिया। सम्मलेन के अध्यक्ष श्री निर्मल गहलोत उत्कर्ष क्लासेस जोधपुर ने समाज के युवाओं को सफलता के नित नए सोपानों को तय करने हेतु श्री प्रेमसुख डेलू जी का उदाहरण देते हुए मेहनत करने पर जोर दिया। श्री निर्मल गहलोत जी ने प्रत्येक वर्ष बिश्नोई समाज की 29 लड़कियों को फ्री कोचिंग देने का संकल्प लिया। सम्मलेन में नोखा विधायक श्री बिहारी लाल बिश्नोई, श्री पब्बाराम बिश्नोई विधायक फलौदी, श्री भागीरथ बैनीवाल पूर्व प्रधान लोहावट, युवा नेता श्री शिवराज जाखड़, श्री श्याम खीचड़ लूणी, श्री किशन लाल कड़वासरा अहमदाबाद, श्री अमरचंद दिलोईया भीलवाड़ा व समाज के अनेक गणमान्य प्रतिनिधियों ने भाग लिया तथा युवा सम्मलेन पर अपने विचार व्यक्त किये। स्वामी राजेन्द्रानन्द जी ने सभी आगंतुकों का धन्यवाद ज्ञापित किया। सम्मलेन का संचालन अधिवक्ता संदीप धारणियां ने किया। इस अवसर पर रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया गया जिसमें 230 यूनिट ब्लड डोनेट किया गया।

-संदीप धारणियां (एडवोकेट)
लिखमेंवाला, रायसिंह नगर
मो.: 9001803094

हर्षोल्लास के साथ आयोजित हुआ मुकाम में फाल्गुन मेला

मुकाम: श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान की समाधि स्थल मुक्तिधाम मुकाम में इस वर्ष भी फाल्गुन मेला बड़ी श्रद्धा व उल्लास के साथ आयोजित किया गया। देश-विदेश से हजारों की संख्या में पहुंचे श्रद्धालुओं ने निज मंदिर स्थित भगवान जम्भेश्वर की समाधि पर शीश नवाकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। इस दौरान श्रद्धालुओं ने विशाल हवन यज्ञ में आहुति डाली तथा गुरु महाराज का आर्शीवाद प्राप्त किया।

कोरोना काल के बाद आयोजित इस बार के फाल्गुन मेला में विशाल भीड़ उमड़ी थी। श्रद्धालुओं ने निज मंदिर के अलावा सम्भराथल धोरे तथा पीपासर में भी आयोजित हवन व अन्य धार्मिक कार्यक्रमों में हिस्सा लिया तथा जोत का दर्शन कर अपने को धन्य बनाया। मेला कार्यक्रम के दौरान अमावस्या रात्रि को श्रद्धालुओं ने श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के इस पवित्र तीर्थस्थल पर श्रद्धासुमन अर्पित करके जागरण में भाग लिया। अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा द्वारा मंदिर परिसर धर्मसभा पण्डाल स्थल में समाज के विद्वान आचार्यों व संतो द्वारा जागरण का आयोजन किया गया जिसमें श्री स्वामी रामानन्द आचार्य मुकाम पीठाधीश्वर ने जाम्भोजी की वाणी, 29 धर्म-नियम व धार्मिक संस्कारों पर विचार व्यक्त किए।

इस दौरान जागरण में उपस्थित श्री सुखराम बिश्नोई श्रम एवं राजस्व राज्य मंत्री ने अपने विचारों में संस्कार, शिक्षा, संगठन के बारे में विचार रखे। आचार्य स्वामी गोवर्धनराम जी ने नशा, बाल विवाह, मृत्यु भोज सहित अन्य सामाजिक कुरीतियों को जड़ से मिटाने के लिए संकल्प लेने का आग्रह किया। स्वामी मनोहरदास मेहराणा, स्वामी रामकृष्ण मंहत समराथल, स्वामी कृष्णानन्द आचार्य, स्वामी सच्चिदानन्द आचार्य, स्वामी राजेन्द्रानन्द हरिद्वार, स्वामी सदानन्द, श्री भागीरथ दास जी

शास्त्री सभी ने जाम्भोजी की वाणी व साखियां सुनाकर धार्मिक प्रचार किया। जागरण के दौरान ही अध्यक्ष देवेंद्र बुड़िया तथा मंत्री सुखराम बिश्नोई ने समाज की प्रतिभाओं को सम्मानित किया। मेला परिसर में सजे पंडाल व बाजार की रौनक हर किसी को मंत्रमुग्ध करने वाली थी। मेले में पहुंचे श्रद्धालुओं ने इस दौरान जमकर खरीदारी भी की। लोगों ने मेले में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के स्टॉल तथा धार्मिक साहित्य का भी अवलोकन किया। इस दौरान एक रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया गया जिसमें 221 से ज्यादा युवाओं, स्वयंसेवकों तथा श्रद्धालुओं ने रक्तदान किया। मेले के सफल आयोजन व समुचित प्रबंध के लिए अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा द्वारा विस्तृत व व्यापक योजना तैयार की गई थी। मेले की तैयारियों व आयोजन में किसी प्रकार की कोई खामी न रहे इसके लिए कई दिन पूर्व ही महासभा ने बैठकों व अन्य सम्मेलनों द्वारा विमर्श कर तैयारियों को अंतिम रूप दिया।

मेले से एक दिन पूर्व यानि 28 फरवरी को बिश्नोई रत्न चौ. कुलदीप बिश्नोई संरक्षक अ.भा. बिश्नोई महासभा ने मुक्तिधाम मुकाम पहुंचकर श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान की समाधि स्थल के दर्शन किए तथा देश प्रदेश की खुशहाली की कामना की। उनके साथ में श्री पब्बाराम जी, विधायक फलोदी भी पहुंचे। अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा कार्यालय पर चौ. कुलदीप जी बिश्नोई का राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री देवेन्द्र जी बूड़िया ने साफा पहनाकर सम्मान व स्वागत किया। इस दौरान श्री कुलदीप बिश्नोई ने महासभा के पार्किंग स्थल का भी लोकार्पण किया। मेले वाले दिन यानि एक मार्च को देश भर से पहुंचे श्रद्धालुओं के अलावा अनेक राष्ट्रीय व केंद्रीय नेताओं तथा विशिष्ट व्यक्तियों ने भी समाधि स्थल पर श्रद्धासुमन अर्पित किए तथा हवन यज्ञ में आहुति डाली।

श्री देवेन्द्र बूड़िया प्रधान अ.भा. बिश्नोई महासभा ने मुक्तिधाम आने पर केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत का स्वागत किया तथा उनसे बिश्नोई समाज को केन्द्रीय ओ. बी.सी में केन्द्र सरकार से सम्मिलित करवाने व अमर शहीद अमृतादेवी बिश्नोई की प्रतिमा संसद भवन में लगवाने एवं जम्भ सरोवर में अ.भा. बिश्नोई महासभा धर्मशाला में लाखों श्रद्धालुओं के लिए जलहौद एवं शुलभ शौचालयों का निर्माण स्थानीय सांसद विकास निधि से कराने की मांग की।

-हनुमानराम बिश्नोई

कार्यालय सचिव, अ.भा.बि.महासभा

बिश्नोई चेरिटेबल ट्रस्ट मेड़ता सिटी द्वारा आर्थिक सहयोग की अपील

नागौर: बिश्नोई चेरिटेबल ट्रस्ट, मेड़ता सिटी चेरिटेबल ट्रस्ट का गठन 1995 में किया गया था। इस बिश्नोई चेरिटेबल ट्रस्ट के नाम 8750 वर्ग फुट जमीन किसान नगर कालोनी मेड़ता सिटी में मुख्य सड़क पर 1,94000 रुपये में समाज के दस-बारह व्यक्तियों ने खरीद पर बिश्नोई चेरिटेबल ट्रस्ट के नाम की गई। सन् 2020 में आर्किटेक्ट से बढ़िया नक्शा तैयार कर निर्माण कार्य शुरू किया गया। निर्माण कार्य लगभग पूर्ण हो गया है, जिसमें 2 बड़े हाल (25×50), बेसमेंट (15×40), 2 कमरे (15×20), 8 कमरे (15×10), एक कमरा (12×10), एक रसोई (12×10), एक छोटा स्टोर (12×8), एक बडा होद 9 टेंकर पानी का, एक छोटा होद 3 टेंकर पानी का, 3+3 शौचालय पुरुष व स्त्रियों के अलग-अलग।

सभी निर्माण जोधपुर पत्थर से अति सुंदर कढाई से किया गया है। अब तक एक करोड़ की राशि खर्च हो चुकी है। आंगन, लकड़ी कार्य, बिजली कार्य व तीन बड़े गेट बनाने का कार्य अभी शेष है। इसके अतिरिक्त धर्मशाला में एक छोटा मंदिर, फर्नीचर, बैड, बिस्तर, कार्यालय सामान व क्लाश रूम फर्नीचर आदि में लगभग 60-70 लाख रुपयों का कार्य होना है। समाज के सभी सज्जनों से अनुरोध है कि कृपया यथा शक्ति सहयोग प्रदान करें।

-श्री बीरबल राम धारणीया

अध्यक्ष (ट्रस्ट)(पूर्व डी.वाई.एस.पी.)

मेड़ता सिटी, नागौर

बिश्नोई समाज के प्रमुख धाम

जाम्भाणी पर्व एवं अमावस्या

सम्वत् 2079 वैशाख की अमावस्या

लगेगी–29.4.2022 शुक्रवार रात्रि 12 बजकर 57 मिनट पर
उतरेगी–30.4.2022 शनिवार रात्रि 1 बजकर 57 मिनट पर

सम्वत् 2079 ज्येष्ठ की अमावस्या

लगेगी–29.5.2022 रविवार दोपहर 2 बजकर 55 मिनट पर
उतरेगी–30.5.2022 सोमवार सायं 4 बजकर 59 मिनट पर

वैशाख अमावस मेला– औंसिया, भाड़वी। **जागरण**– शुक्रवार, 29.4.2022 तथा **हवन व मेला**– शनिवार 30.4.2022 को। **शहीद गंगाराम जाणी मेला**– नेहड़ा। **जागरण**– सोमवार, 25.4.2022 तथा **हवन व मेला**– मंगलवार 26.4.2022 को।

उनतीस धर्म नियम

- तीस दिन सूतक रखना।
- पांच दिन ऋतुवन्ती स्त्री का गृहकार्य से पृथक् रहना।
- प्रतिदिन सवेरे स्नान करना।
- शील का पालन करना व संतोष रखना।
- बाह्य और आन्तरिक पवित्रता रखना।
- द्विकाल संध्या-उपासना करना।
- संध्या समय आरती और हरिगुण गाना।
- निष्ठा और प्रेमपूर्वक हवन करना।
- पानी, ईंधन और दूध को छान कर प्रयोग में लेना।
- वाणी विचार कर बोलना।
- क्षमा-दया धारण करना।
- चोरी नहीं करनी।
- निन्दा नहीं करनी।
- झूठ नहीं बोलना।
- वाद-विवाद का त्याग करना।
- अमावस्या का व्रत रखना।
- विष्णु का भजन करना।
- जीव दया पालणी।
- हरा वृक्ष नहीं काटना।
- काम, क्रोध आदि अजरों को वश में करना।
- रसोई अपने हाथ से बनानी।
- थाट अमर रखना।
- बैल बधिया नहीं कराना।
- अमल नहीं खाना।
- तम्बाकू का सेवन नहीं करना।
- भांग नहीं पीना।
- मद्यपान नहीं करना।
- मांस नहीं खाना।
- नीला वस्त्र व नील का त्याग करना।

RNI No. : 12406/57
POSTAL REGD. NO. : L/RNP/01/HSR/2020-2022
TECH/WPP/HR-04/HISAR/2020-22

POSTAGE PREPAID IN CASH
POSTED AT : HISAR H.O.
POSTING DATE : 1st OF EVERY MONTH

तीर्थ शिरोमणि जाम्भोलाव सरोवर

जाम्बा, तह. फलोदी, जोधपुर (राज.)

गुरु जम्भेश्वर मन्दिर

लोदीपुर, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश

मुद्रक, प्रकाशक जगदीश चन्द्र कड़वासरा, प्रधान, बिश्नोई सभा हिसार ने डोरेक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 अप्रैल, 2022 को मुख्य डाकघर, हिसार से प्रेषित किया।

DOREX Printers 9896011117